रामायण



लोकगीत रामायण

लोकगीत रामायण

[लोकगीतों में प्राप्त रामकथा]

सम्पादक

डा० महेशप्रतापनारायण अवस्थी 'महेश'

प्रोफेसर—हिन्दी

राजकीय सी० पी० आई० इलाहाबाद

अवधी समिति प्रकाशन

प्रयाग

प्रकाशक :
अवधी साहित्य संस्थान : अयोध्या
२७०, ठठरहिया, फैजाबाद–२२४००१

वितरक :
१. स्वाध्याय प्रकाशन,
डी–५४, निराला नगर,
लखनऊ–२२६००७

२. भारतीय भाषा भवन,
४११ ए–दारागंज,
इलाहाबाद–२११००६

प्रथम संस्करण : १६६० ई०
मूल्य : ४० रुपये ।

मुद्रक :
देववाणी मुद्रणालय,
नया बैरहना,
इलाहाबाद

समर्पण

आदरणीया ममिया सास श्रीमती लक्ष्मी शुक्ला

तथा

प्रिय पत्नी श्रीमती सत्यवती अवस्थी,

जिनके पास अवधी लोकगीतो की

प्रचुर रत्नराशि है,

जिसका उपयोग मेरे द्वारा सम्पादित

अवधी लोकगीत हजारा में

प्रचुरता से किया गया है एव

जिनके कई लोकगीत प्रस्तुत रामायण में भी

समाहित है,

को सादर सप्रेम समर्पित ।

—महेश

संस्थापक
अवधी समिति,
४११ अ-दारागंज,
प्रयाग-२११००६

प्रयाग,
देवोत्थानी एकादशी, सं० २०४६ वि०
गुरुवार, ९ नवम्बर, १९८९ ई०

साधुवाद

रामकथा की लोकप्रियता सर्वविदित है। विभिन्न भाषाओं, शैलियो और विधाओं में रामकथा गाई और सुनाई गई है। जनमानस में यह समादृत हुई है और लोकगीतों के माध्यम से जनजीवन में पूरे विस्तार के साथ फैली और बिखरी है।

अवध भगवान राम की जन्मभूमि है और क्रीड़ाभूमि भी। उनकी यशोगाथा लोकजीवन में कुछ ऐसी समा गई है कि आनन्द और उल्लास के क्षणो मे पूरी रागात्मकता के साथ वह अवध के सम्पूर्ण क्षेत्र में भक्ति की स्निग्धता और समर्पण की सरसता के साथ बिखर गई है। इसीलिए अवधी के ये लोकगीत रामकथा की मार्मिक अनुभूति के साथ भारतीय संस्कृति की धरोहर बन गये हैं।

डॉ० महेशप्रतापनारायण अवस्थी ने प्रस्तुत पुस्तक में अवधी के उन सब लोकगीतो को क्रमबद्ध और वर्गबद्ध कर प्रस्तुत किया है जो समवेत रूप में प्रचलित रामकथा की अन्तरंगता की रक्षा करते हुए बड़े ही भावपूर्ण ढंग से रामकथा के प्रसंग ब्योरेवार कहते, गुनगुनाते और गाते हैं। उनका यह प्रयास जहाँ लोक रुचि और वृत्ति की गहनता की ओर संकेत करता है वही उन भाव-विभोर सरल ग्रामवासियों को परमानन्द प्रदान करेगा जो अपने ढंग से रामकथा का आनन्द लेना चाहते हैं।

डॉ० अवस्थी का यह प्रयास प्रशंसनीय है। इसके प्रकाशन से रामकथा के कोटि-कोटि गायकों को आनन्द का एक अजस्र स्रोत प्राप्त होगा। इसकी उपयोगिता स्वयंसिद्ध है। मैं डॉ० अवस्थी को उनकी महती साधना के लिए साधुवाद देते हुए इसके प्रकाशन की कामना करता हूँ।

योगेश दयालु
सेवानिवृत्त विशेष सचिव (शिक्षा)
उत्तर प्रदेश शासन
३४/६६ क, गनेशगंज, लखनऊ

अभिनन्दनीय प्रयास

लोकगीत जनमानस के पुंजीभूत उल्लास के प्रवाह हैं। उनमें लोकमानस की भावनाएँ, आशाएँ, अपेक्षाएँ और कामनाएँ परिलक्षित होती हैं। संस्कृति के वे मूर्तरूप और जीवन के अबाध प्रवाह है। उनमे देश की अन्तरात्मा के साक्षात् दर्शन होते हैं।

भगवान राम के प्रति अनुराग, उनकी सम्मोहिनी लीलाओ के प्रति आसक्ति और उनकी गरिमा के प्रति निष्ठा अवध के लोक-जीवन का अग है। विश्व की सुदूरता में सर्वाधिक व्याप्त रामकथा की प्रच्छन्नता अवध के लोकगीतो की विशेषता, मर्यादा और प्रमुख विषयवस्तु है। रामकथा यो तो विभिन्न भाषाओं के वाङ्मय मे भाँति-भाँति से प्रस्तुत की गयी है, किन्तु इन लोकगीतों मे वर्णित रामकथा भावनाओं की उस अविकल तारतम्यता से समलंकृत है, जिसमे कथावस्तु गौण और भावना प्रमुख बन जाती है। इसीलिए इन गीतो की रामकथा लोकमानस की राम और रागमय कहानी है।

डॉ० महेशप्रतापनारायण अवस्थी लोकगीतो के शोधी विद्वान् और समीक्षक हैं। बड़े और दीर्घ परिश्रम के बाद उन्होंने अवधी के इन राममय गीतों को क्रमबद्धता देकर उन्हें कथा का स्वरूप प्रदान किया है। उन्हें अंशो मे भी गाया जा सकता है और पूर्णांश मे भी। वाद्य यंत्रो पर उनके द्वारा पूरी रामकथा का सामूहिक और अखण्ड पाठ भी किया जा सकता है।

यों तो प्रत्येक महापुरुष का जीवन मानवमात्र के लिए प्रेरणाप्रद है, किन्तु मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन वृत्त आज की परिस्थितियो में मार्गदर्शक है। आज की परिस्थितियाँ मानो उनके जीवन-प्रसंगों से सन्दर्भित हैं। बात चाहे निषादराज की हो, जटायु, शबरी, बालि या स्वयं रावण की। लगता है इन सब प्रसंगो में भगवान राम आज और अब की बात कहते और करते है और जब वही प्रसंग लोकगीतों के माध्यम से जनमानस में अवतरित हो जाता है तो मानो उनकी सात्विक सार्थकता पूरी सहजता के साथ चारों ओर फैल जाती है।

डॉ० अवस्थी ने अपने साधनारत प्रयास को प्रस्तुत पुस्तक में बड़े ही आकर्षक और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। उनका यह प्रयास अभिनन्दनीय है।

मुझे विश्वास है कि प्रकाशित होने पर यह शीघ्र ही लोकप्रियता प्राप्त कर लेगी और एक अभाव की पूर्ति करेगी।

शिवशंकर मिश्र

भू० पू० सचिव उ० प्र० हिन्दी समिति
प्रधान सम्पादक 'उत्तर प्रदेश
परामर्शदाता उ० प्र० शासन
(सूचना एवं जन-सम्पर्क)
संप्रति सलाहकार साक्षरता निकेतन

२२३, राजेन्द्र नगर
लखनऊ-४

महत्त्वपूर्ण कृति

"लोकगीत रामायण" लोक-साहित्य के मर्मी विद्वान् डॉ० महेशप्रतापनारायण अवस्थी द्वारा सम्पादित महत्त्वपूर्ण कृति है। इसके पूर्व डॉ० अवस्थी 'अवधी लोकगीत हजारा', 'महेस सतसई', 'जन रामायन' प्रभृति उपयोगी ग्रन्थ प्रस्तुत कर चुके है। "लोकगीत रामायण" नामक कृति के माध्यम से डॉ० अवस्थी ने भारतीय लोक-मानस मे प्रतिष्ठित, लोक-वाणी मे प्रसरित राम-कथा के अनेकानेक बिखरे स्वरो को कथा-क्रम से नियोजित-संगुम्फित करने का सुष्ठु प्रयास प्रमाणित किया है। इससे एक ओर तो विलुप्तप्राय लोकसंस्कृति और लोक-वाणी के संरक्षण का महदुद्देश्य पूर्ण होगा, साथ ही दूसरी ओर भारतीय वाङ्मय के गहन विस्तार का परिचय भी मिलेगा। विशेषकर राम-साहित्य-परम्परा को इससे विशेष शक्ति, स्फीति और समृद्धि मिलेगी।

अतः उक्त ग्रन्थ का प्रकाशन साहित्य-मन्दिर का पुनीत अनुष्ठान है।

(डॉ०) उमाशंकर शुक्ल
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग
जयनारायण महाविद्यालय,
तथा
अध्यक्ष, अवधी साहित्य मंडल,
लखनऊ

प्राक्कथन

रामकथा सम्बन्धी ग्रन्थों मे महर्षि वाल्मीकि कृत 'रामायण', मुनि व्यास कृत 'अध्यात्म रामायण', नाटककार भास रचित 'प्रतिमानाटकम्', महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंशम्', महाकवि भवभूति रचित 'उत्तररामचरितम्', महाकवि तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस', महाकवि कम्बन कृत 'तमिल रामायण', महाकवि कृत्तिवास कृत 'बँगला रामायण' तथा राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त रचित 'साकेत' के नाम प्रसिद्ध है।

उपर्युक्त साहित्यिक रचनाओ के अतिरिक्त लोकमानस मे सव्याप्त रामकथा लोकगीत-मुक्तको के रूप मे यत्र-तत्र बिखरी पडी है, जो प्राय: जनमानस को आन्दोलित-उद्वेलित करती रहती है, जिसका अपना महत्त्व है। अतएव मैंने लोकमानस की उन्ही विकीर्ण मुक्ताओ को एकत्र कर उन्हें एक मालाकार की भाँति पिरोया है, जिससे वह सुधी रामभक्तों का कण्ठहार हो सके।

प्रस्तुत माला मे १०८ मनके है, जिनमे से १०० मनके अवधी के विशाल क्षेत्र से सम्बन्धित है। शेष ८ में से ३ मनके मिथिला की मनोहरा धरती की बहुमूल्य धरोहर है। इनमे २ लोकगीत श्री राम इकबाल सिह 'राकेश' के 'मैथिली लोकगीत' संग्रह से लिये गये हैं एवं १ लोकगीत श्री सत्यदेव झा, राजकीय जुबिली कालेज, लखनऊ ने कु० मीना झा, हिसार ड्योढी, मधुबनी (बिहार) से प्राप्त कर मुझे प्रदान किया। शेष ३ लोकगीत लोक साहित्य के प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० कृष्णदेव उपाध्याय के 'भोजपुरी लोकगीत' नामक सग्रह, १ लोकगीत (स्व०) डॉ० गौरीशंकर 'सत्येन्द्र' के पी-एच० डी० के शोध ग्रन्थ 'ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन' तथा १ लोकगीत -डॉ० सत्या गुप्त के 'खडी बोली का लोकसाहित्य' नामक डी० फिल्० के शोध प्रबन्ध से प्राप्त हुए हैं। मै इन सभी सज्जनो के प्रति कृतज्ञ हूँ।

वस्तुत: 'लोकगीत रामायण' का सम्पादन मेरे द्वारा विरचित 'जन रामायन' (अवधी महाकाव्य) के पूर्व हो चुका था, किन्तु दैवयोग से 'जन रामायन' का प्रकाशन पहले हो गया। यदि प्रस्तुत रामायण लोकसाहित्य के विद्वानो, लोकगीत-प्रेमियो, राम-भक्तों एवं सुधी पाठकों को भायी तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूंगा। मुद्रण सम्बन्धी त्रुटियों के लिए मैं पाठको से क्षमा चाहता हूँ, कृपया सुधार कर पढ़ें।

विजयदशमी संवत् २०४६ विक्रमी
मंगलवार १० अक्तूबर, १९८९ ई०

भगवच्चरणारविन्द चञ्चरीक
महेश
४११ ए-दारागंज, प्रयाग-६

विषय-सूची

१. बालकांड

२. अयोध्याकांड

३. अरण्यकांड

४. किष्किन्धाकांड

५. सुन्दरकांड

६. लंकाकांड

७. उत्तरकांड

लोकगीत रामायण

— महेश



श्रीमती लक्ष्मी शुक्ल



श्रीमती सत्यवती अवस्थी

एवं
'अवा
गीत

डॉ०
लोक

संग्रह
जान
तथा
संग्रा
श्रम
पदो
लिए
लिए

है,
कि

सं

सं
यु
प्र

लोकगीत रामायण

(१) बाल काण्ड

१. स्तुति

लोकमानस में आद्या शक्ति, जगज्जननी, विश्वम्भरा, महाप्रज्ञा, वेदमाता के प्रति अगाध आस्था और विश्वास है। वह उसे विभिन्न नामों से अभिहित करता आया है। गायत्री, दुर्गा, काली, गौरी, पार्वती, विन्ध्यवासिनी, शीतला, अहेरवा आदि उसी महाशक्ति के नाम है।

जिस प्रकार पुरुष वर्ग प्रातः, मध्याह्न एवं सायकाल सन्ध्या या मन्त्रोपासना करता है, जिसमें गायत्री की प्रधानता है, उसी प्रकार स्त्रियाँ प्रत्येक मगल अवसर, संस्कार आदि पर सांझ न्योतती, साँझ · मनाती (सन्ध्या निमन्त्रण) एव देवी के गीत गाती है।

निम्नलिखित देवी गीत में विन्ध्यवासिनी देवी की स्तुति की गई है।

(१) देवी गीत

महारानी बरदानी कि धनि-धनि विन्धा अचल रानी ॥ टेक ॥
कि अरे अम्बे, पहाड़ के उप्पर—पहार के उप्पर,
जहाँ मन्दिर बना खासा, उहाँ जगतारनि कै वासा ॥ १ ॥
कि अरे अम्बे, तरे बहै गंगा—तरे बहै गंगा,
गंगा की निर्मल धारा—नहायँ मोरी माता जगत रानी ॥२॥
कि अरे अम्बे, सँकरि यक कुइयाँ—सँकरि यक कुइयाँ,
कुइयाँ का सीतल पानी, पिअइँ मोरी माता जगत रानी ॥३॥

कि अरे अम्बे, चँदन यक चौकी—चंदन यक चौकी,
चौकी में जड़े हीरा, चाभि रही पानन के बीरा ॥४॥
कि अरे अम्बे, जोति उहाँ जलती-जोति उहाँ जलती,
जोति का उजियाला, करै बाल-बच्चन की रछपाला ॥५॥
—गौड़ (कानपुर)

महारानी वरदायिनी विन्ध्याचल रानी धन्य है। विन्ध्य पर्वत के ऊपर उनका भव्य मन्दिर बना हुआ है, वहाँ जगतारिणी (देवी) का वास है ॥१॥

नीचे गंगाजी बह रही है, जिनकी निर्मल धारा में मेरी माता जगतरान स्नान करती है ॥२॥

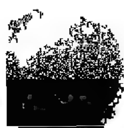
एक संकीर्ण कूप है, जिसका शीतल जल है, जिसे मेरी माता जगतरानी पान करती है ॥३॥

चन्दन निर्मित एक चौकी है, जिसमें हीरे जड़े हुए है, (जिस पर आसन लगाकर) वे पान के बीड़े चबा रही है ॥४॥

वहाँ अखण्ड ज्योति प्रज्वलित रहती है, जिसका प्रकाश बाल-बच्चों की रक्ष और उनका पालन करता है ॥५॥

२—श्रवण कुमार सन्दर्भ

माता-पिता के आज्ञापालक सुपुत्र के रूप में श्रवण कुमार का नाम लोक प्रसिद्ध है। अपने अन्धे माँ-बाप को तीर्थाटन कराने के लिए श्रवण कुमार ने काँवर बनवायी तथा उसी मे दोनों ओर उन्हें बैठाकर यात्रा के लिए वे निकल पड़े। अनेक तीर्थों से होते हुए वे अयोध्या के समीप सरयू नदी के किनारे स्थित 'सरवन पाकर' नामक स्थान पर पहुँचे। उस समय वहाँ विशाल वन था, जिसमे वन्य-जीव विचरण करते रहते थे। महाराज दशरथ अपनी युवावस्था में वहाँ प्राय. आखेट के लिए जाया करते थे। वे शब्दवेधी बाण चलाने में प्रवीण थे। दैव योग से जब श्रवण कुमार अपने पिपासाकुल माता-पिता के लिए सरयू में जल भरने गये तो उस समय दशरथजी वन मे ही थे। सायंकाल अन्धकार हो चला था, अत: जब श्रवण कुमार ने पात्र को जल मे डुबोया तो उसकी आवाज हुई, राजा ने समझा कि कोई वन्य पशु जल पी रहा है। उन्होंने उसी आवाज को लक्ष्य कर बाण चला दिया। परिणाम स्वरूप श्रवण कुमार को बाण लगा, वे छटपटाने लगे तो दशरथजी उनके पास पहुँचे।



नका परिचय पूछा। ऋषि पुत्र ने संक्षेप मे अपना परिचय दिय
। का उद्देश्य बताया। इसके उपरान्त उनके प्राण-पखेरू उड़ गये
रते-डरते काँवर के पास गये, अन्धतापसों को जल दिया और फि
सारा वृत्तान्त बताया ! अन्धो ने जल नही पिया और राजा को शा
प्रकार हम पुत्र के वियोग मे प्राण त्याग रहे हैं, उसी प्रकार तुम भ
प्राण-त्याग करोगे।"

स्तुत सोहर मे इसी घटना का वर्णन है।

(२) सोहर

कातिक मास महातिक, मघवा मकर लागे हो।
सब देउतै चिठिया पठावै जइत्री सब आवइँ हो॥ १॥
सबरे जइत्री तीरथ करैं चले, हन्नी-हन्ना रोवइँ रे।
विधि ! तोहरा हम काउ बिगारे, नेत्र मोरे फोरेउ रे॥ २
एतनी बचन सरवन सुनै, सुनेहि नहिं पावइँ रे।
सरवन अल्हरेन बँसवा काटैं त कँवरी बिनावइँ रे॥ ३
एक कान्हे धरे सरवन हन्नी त दुसरे हन्ना रे।
बहिनी, तिसरे कान्हे धरे है कँवरिया त तीरथै चले रे॥ ४
एक बन गयेन, दुसर बन, अउरौ तिसर बन रे।
सरवन, बूँदा एक पनिया पिआवौ, हलक जुड़वावउ रे॥ ५
छोटइ पेड ढेखुलिया तौ पतवन झपसि लागे रे।
बहिनी, तेहि तर धरेहँ कँवरिया, चले सरजू जल भरै रे॥६
गेड़ली त धरेहँ किनारे, कमडल जल डुभै लागे रे।
राजा दसरथ चलाइन बान, मिरगवा के भेलस रे॥ ७
ओरिया-ओरिया घूमइँ हन्नी-हन्ना, कँवरिया न सूझइ रे।
कि हया तु कुकुरा बिलरिया कि चोर चहरिया रे।
अरे की रे बाबा पहरुआ केवड़िया भुड़कावउ रे॥ ८
नाही हई कुकुरा बिलरिया, न चोर चहरिया रे।
अरे नाही बाबा पहरुआ, केंवडिया भुड़कावउँ रे।
देबी, हम तौ हई राजा दसरथ, केवडिया भुड़काई रे॥ ९

अरे हमरे सरवन का तू मार्‌या, हमहि दुख डार्‌या रे।
राजा, अइसन दुख तुहूँ पउब्या, पुतवा के कारन रे ॥ १० ॥
—सुरहुरपुर (फैजाबाद)

कार्तिक मास का बड़ा माहात्म्य है। माघ मास मे मकर राशि लगती है (और मकर संक्रान्ति होती है, मकर रेखा पर सूर्य आते हैं)। सब देवता पत्र भेजते है कि यात्रीगण आयें, यात्रा पर निकले ॥१॥

जब यात्रीगण तीर्थ करने चल पड़े तो हन्नी-हन्ना (अन्धी-अन्धा) रोने लगे और दैव को दोष देते हुए कहने लगे—"हे विधि ! हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था कि तुमने मेरे नेत्र फोड दिये (जिसके कारण न तो हम साधु, सन्तो तथा तीर्थ स्थानो के दर्शन कर सकते है और न कही जाने मे समर्थ हैं)" ॥२॥

श्रवण कुमार ने इतने वचन सुने कि नही सुन पाये, उन्होने नये बाँस काटे और काँवर बिनाया ॥३॥

श्रवण ने एक कन्धे पर (एक कन्धे की ओर वाली काँवर की बहँगी में) अपनी माता को बैठाया और दूसरे कन्धे पर पिता को। फिर काँवर को अपने कन्धे पर उठाकर रख लिया और तीर्थ करने चल पड़े ॥४॥

इस प्रकार वे एक वन से दूसरे वन और फिर तीसरे वन को पार करते हुए जा रहे थे (कि उन्हे प्यास लगी)। उन्होने कहा—"श्रवण ! एक बूद (किंचित्) पानी पिलाओ और गला जुड़वाओ (मारे प्यास के गला सूखा रहा है, गले मे कुछ तो ठंडक पहुँचे) ॥५॥

एक छोटा-सा पलाश-वृक्ष था, जिसमे खूब घने पत्ते लगे थे, उसी के नीचे श्रवण ने काँवर रख दी और सरयू से जल भरने चल पड़े ॥६॥

उन्होने सरयू के किनारे गेडुली रख दी और वे कमण्डलु को जल मे डुबोने लगे। राजा दशरथ ने मृग के भ्रम से अपना शब्दवेधी बाण चला दिया (जिससे श्रवण की मृत्यु हो गयी) ॥७॥

तदुपरान्त राजा अन्धी-अन्धे को खोजने के लिए (अंधेरे मे) चारो ओर घूमने लगे, किन्तु काँवर दिखायी नही पड़ रही थी। जब वे काँवर के पास पहुँचे तो अन्धतापस ने उनसे पूछा—"तुम कोई कुत्ता-बिल्ली हो, चोर-बटमार हो या कोई पहरेदार हो, जो काँवर मे लगी खिड़की को खटका रहे हो ॥८॥

राजा ने उत्तर दिया मै न तो कोई कुत्ता बिल्ली हूँ न चोर चहार और न ही प्रहरी जो खिडकी को खटका रहा हूँ बल्कि मै तो राजा दशरथ हू, जो खिडकी खटका रहा हूँ ॥९॥

जब राजा ने श्रवण की मृत्यु की बात बतायी तो अन्धतापस ने विलाप करते हुए उन्हें शाप दिया—"अरे हमारे श्रवण को तूने मारा और हमारे ऊपर दुःख डाला । हे राजन् ! इसी प्रकार तू भी पुत्र के कारण प्राणान्तक दुःख पायेगा" ॥१०॥

३. रानी कौशल्या की चिन्ता एवं गर्भधारण

विवाह के उपरान्त जब कई वर्षो तक सन्तानोत्पत्ति नही होती तो सारे परिवार मे वन्ध्यत्व की आशंका से चिन्ता व्याप्त हो जाती है । राजा दशरथ के बहुत वर्षो उपरान्त भी जब किसी भी रानी से कोई सन्तान नही हुई तो वे तथा तीनो रानियाँ भी चिन्तित रहने लगी । उनकी यह चिन्ता एक दिन बड़ी रानी कौशल्या के द्वारा व्यक्त भी की गयी । जिसके निवारणार्थ राजा ने अपने कुलगुरु एव पुरोहित वशिष्ठजी से निवेदन किया । उनके प्रयत्न मे तीनो रानियाँ गर्भवती हो गईं ।

प्रस्तुत सोहर मे इसी का उल्लेख मिलता है ।

(३) सोहर

मचिअइ बइठी कउसिल्या रानी, सुनउ राजा दसरथ ।
राजा ! बिन रे सन्तति जर सून, मईं तपसिनि होबइ ॥१॥
हँकरउ न नग्र के नउआ, तउ हाले बेगे आवउ हो ।
नउआ ! जाइ बसिष्ठ बोलावउ, रनिया समुझावईं हो ॥२॥
हँकरउ न नग्र के लोनिया, तउ हाले बेगे आवउ हो ।
लोनिया ! खनि लावउ कन्द मुरइआ कउसिल्या रानी ओखद ॥३॥
अरे-अरे लउँड़ी अउ चेरिया त संग केरी सखिया ।
बहिनी ! रगि-रगि पिसउ मुरइआ, कउसिल्या रानी ओखद ॥४॥
एक घूँट घुँटइँ कउसिल्या रानी, दुसर केकही रानी ।
सिल धोइ पिअइँ सुमित्रा रानी त तीनिउ गरभ से ॥५॥
—नसूरा (सुल्तानपुर)

एक बार रानी कौशल्या मचिया पर बैठी हुई थी। उन्होंने राजा दशरथ से निवेदन किया—"हे राजन् ! बिना किसी सन्तान के घर सूना-सा लगता है, (ऐसी दशा में) मैं तपस्विनी हो जाऊँगी ॥१॥

राजा दशरथ ने यह सुनकर नगर के प्रसिद्ध नाई को कहलवाया—"हे नगर के (प्रसिद्ध) नापित ! तुम अति शीघ्र आओ और जाकर पुरोहित मुनि वसिष्ठ को बुला लाओ; वे रानी को समझायें" ॥२॥

वसिष्ठजी ने नगर के प्रसिद्ध लोनिया को सन्देश भेजा—"हे नगर के लोनिया ! अति शीघ्र आओ और रानी कौशल्या हेतु कन्द-मूल औषध खोदकर ले आओ" ॥३॥

लोनिया ने कन्द-मूल लाकर दिया तो परिचारिका ने अपनी साथ की सखी सेविका से अनुरोध किया—"हे बहिन ! इस मूल (जड़) को धीरे-धीरे पीसो (जिससे भलीभाँति इसका रस निकल आये)। यह रानी कौशल्या की औषधि है ॥४॥

इसके बाद कौशल्या रानी ने एक घूट घूँटा, दूसरा कैकेयी रानी ने और सुमित्रा रानी ने सिल धोकर पिया, जिससे तीनों रानियाँ गर्भवती हो गई ॥५॥

४—जातकर्म संस्कार

(क) डोमिन का आगमन

जब गर्भ पूर्ण हो जाता है तो शिशु के जन्म का समय निकट जानकर डोमिन या दाई को बुलाया जाता है। वह बन-ठन कर अपने घर से निकलती है। फिर रघुवंशी राजाओं की डोमिन के साज-शृंगार का तो कहना ही क्या। यथा—

(१) उठान

रघुबसिनि घर आई डोमिनिया ॥टेक॥
झुमका, बीर, चाँद भल सोहै, गल तिलरी भल सोहै डोमिनिया।
बाजूबन्द, टॉड भल सोहै, ककना कै छबि न्यारी डोमिनिया ॥१॥
लहँगा, चुंदरी, चोली सोहै, करधन कै छबि न्यारी डोमिनिया।
कड़ा, छड़ा, पाजेब बिराजै, बिछुअन कै छबि न्यारी डोमिनिया ॥२॥
कइके साज चली मदमाती, कवन सकै पहिचानी डोमिनिया।
राजा दसरथ देबि मनावै, सुभ साइति ते आई डोमिनिया ॥३॥

—सेदुरवा (सुलतानपुर)

रानी कौशल्या के जब पीरें आने लगीं तो डोमिन बुलायी गयी रघुवंशियों के घर (सजधजकर) डोमिन आई।

उसके कानों में झुमका, बीर तथा मस्तक पर चँदवा सुशोभित है और गले में तिलड़ी भली शोभा देती है। भुजाओं में बाजूबन्द तथा टड़िया अच्छी सोहती है एवं कगन की छबि निराली है ॥१॥

लहँगा, चूनर तथा चोली मुशोभित है एवं करधनी की शोभा न्यारी है। उसके पैरों मे कड़ा, छड़ा तथा पायजेब विराजित हैं एव बिछुओं की शोभा निराली है ॥२॥

इस प्रकार मतवाली डोमिन सजकर चली, जिसे कौन पहचान सकता है अर्थात् वह ऐसी सजी-धजी है कि उसे पहचानना कठिन है। राजा दशरथ महाशक्ति (गायत्री) से प्रार्थना कर रहे है। शुभ समय से डोमिन आई है ॥३॥

(ख) हर्षोल्लास

राम का जन्म होने पर सारी अयोध्या में हर्षोल्लास छा गया। नारियाँ विविध उपहार लेकर राजमहल मे पहुँचने लगी। उनकी भेंट मे कई प्रकार की वस्तुएँ है।

(५) सोहर

चइतइ कै तिथि नउमी तौ नउवति बाजइ हो।
एइ हो, बाजइ राज दुआर कउसिल्या रानी मन्दिर हो ॥१॥
मिलहु न सखिया महेलरि मिलि-जुलि चलतिउ हो।
सखिया, राजा के जलमे है राम, करी नेउछावरि हो ॥२॥
केऊ नावै बाजूबन्दा, केऊ कजरावट हो।
एइ हो, केऊ दखिनवा कै चीर, करै नेउछावरि हो ॥३॥
—पाँड़े का पुरवा (गोंडा)

चैत्र मास (के शुक्ल पक्ष) की नवमी तिथि को राजद्वार तथा कौशल्या रानी के महल में नौबत बज रही है ॥१॥

एक सखी दूसरी सखीजन से कह रही है कि हे सखियो ! हम सब लोग मिल-जुल कर एक साथ चलती (तो कितना अच्छा होता)। राजा (दशरथ) के यहाँ राम ने जन्म लिया है, चलकर हम लोग न्यौछावर करे ॥२॥

फिर तो सभी राजमहल में पहुँचती है एवं उनमें से कोई बाजूबन्द, कोई कजरौटा और कई दक्षिणी साड़ी न्यौछावर करती है ॥ ३ ॥

(ग) दान-दक्षिणा

जब राम ने अवतार लिया तो सभी लोग बहुत हर्ष-विभोर हो गये। राजा दशरथ और उनकी तीनो रानियो ने प्रभूत दान-दक्षिणा दी।

(६) सोहर

चइतइ कै तिथि नउमी तौ नउबत बाजइ हो।
ये हो, राम लिहिन अवतार, अजोध्या के ठाकुर हो ॥१॥
दसरथ पटना लुटावैं, कउसिल्या रानी अभरन हो।
ये हो, ककही रतन पदारथ, सुमित्रा रानी सुबरन हो ॥२॥
—उपाध्यायपुर (सुलतानपुर)

चैत्र मास की नवमी तिथि को नौबत बज रही है। अयोध्या के ठाकुर राम ने अवतार लिया है ॥१॥

महाराज दशरथ वस्त्र लुटा रहे है और रानी कौशल्या आभूषण लुटा रही है। इसी प्रकार रानी कैकेयी रत्न-पदार्थ मुक्तहस्त हो दे रही है और सुमित्रा रानी स्वर्ण ॥२॥

(घ) राजा की चिन्ता

पुत्र-जन्म होने पर पुरोहित पंडित को जन्म-लग्न सम्बन्धी विचार करने के लिए बुलाया जाता है, जिससे पता चल सके कि शिशु किस घड़ी, नक्षत्र आदि मे हुआ है। इसी आधार पर ज्योतिर्विद पुरोहित भविष्य-कथन भी करता है।

राम का जन्म होने पर ज्योतिषी ने जन्माङ्ग बनाकर उनके वन-गमन का भविष्य-कथन किया, जिससे राजा दशरथ को बड़ी चिन्ता हुई। रानी कौशल्या ने उन्हे कान्ता-सम्मति दे चिन्ता-मुक्त करने का प्रयत्न किया। प्रस्तुत लोकगीत में इसका वर्णन मिलता है।

(७) सोहर

जेहि दिन राम कै जनम भये, धरती अनँद भये हो।
सुर-पुर होइगा उजेर, कउसिल्या रानी मंदिल हो ॥१॥

हँकड़ौ न नग्र के पडित, हाले-बेगे आवउ हो।
खोलि दिअउ पोथिया पुरान तौ साइति बिचारउ हो ।।२।।
भली घरी राम है जलमे औ सुघरै नखत रहा हो।
मुल बिआह के थोरेन पाछे ई बन का सिधरिहै हो ।।३।।
अतनी बचनिया सुनतै तौ राजा दुखित भये हो।
राजा गोड-मूड तानै चदरिया, सोवइँ धउराहर हो ।।४।।
बइठि जगावइँ कउसिल्या रानी, सुनौ मोरे राजा हो।
राजा, छूट बँझिनिया कै नाउँ, भलेहिं बन जइहै,
लउटि फिरि अइहै हो ।।५।।

—चिलौली (रायबरेली)

जिस दिन राम का जन्म हुआ, सभी लोग आनन्दित हो गये। देवलोक मे उजाला हो गया और रानी कौशल्या के मन्दिर मे भी प्रकाश फैल गया ।।१।।

राजा दशरथ ने नगर के (प्रधान ज्योतिषी) पडित को सन्देश भेजा कि—"अति शीघ्र आओ। अपना पोथी-पुराण खोलो और जन्म लग्न का विचार करो" ।।२।।

ज्योतिषी पुरोहित ने पंचाङ्ग देखकर जन्माङ्ग बनाया, विचार किया और फिर बताया कि "शुभ घडी मे राम ने जन्म लिया एवं नक्षत्र भी शुभ रहा है, किन्तु राजन् ! एक अनिष्ट योग भी है कि जब राम का विवाह हो जायगा तो उसके कुछ दिनो बाद ही ये बन को प्रस्थान करेंगे" ।।३।।

इतनी बातो के सुनते ही राजा दु.खी हो गये। उन्होने महल के ऊपर जाकर पैर मे लेकर सिर तक चादर तान ली और सो रहे ।। ४ ।।

बैठी हुई रानी कौशल्या उन्हें जगाती है—"हे राजन् ! सुनिए तो, 'वन्ध्या' का नाम तो छूटा (अब लोग मुझे वन्ध्या तो न कहेगे, न मानेंगे)। भले ही राम बन को जायेंगे, पुनः लौट आयेंगे। (इसमे अत्यधिक चिन्ता की क्या बात है ?)"

टिप्पणी—(१) भारतीय समाज मे 'वन्ध्या' होना ठीक नही समझा जाता, क्योकि नारी के जीवन की सार्थकता इसी मे मानी जाती है कि वह सन्तानोत्पत्ति के द्वारा पितृ ऋण से उऋण कराती है। तीन प्रधान ऋण हैं—देव ऋण, ऋषि ऋण तथा पितृ ऋण। सन्ध्योपासन, यज्ञ एवं धार्मिक कार्य के द्वारा देव ऋण से, अध्ययन-अध्यापन एवं सत्साहित्य के प्रचार द्वारा ऋषि ऋण से तथा सन्ता-

नोत्पत्ति के द्वारा पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है। धार्मिक विश्वास है कि पुत्र या पुत्री के होने पर ही 'पुन्' नामक नरक से त्राण मिलता है।

कौशल्याजी को सन्तोष है कि राम के उत्पन्न हो जाने से अब लोग उसे 'वन्ध्या' तो नही कहेगे। फिर यदि राम वन को जायेंगे तो यह तो आशा है ही कि वे पुनः अयोध्या लौट आयेंगे।

(२) राजा दशरथ जब ५० वर्ष के ऊपर हो गये तो उन्हें पुत्र प्राप्त हुए। २५ वर्ष की अवस्था तक राम ने विधिवत् विद्याध्ययन किया और वे जब गुरुकुल से राजमहल आ गये तो एक दिन ऋषि विश्वामित्र पधारे एव राम-लक्ष्मण को यज्ञ-रक्षार्थ अपने साथ ले गये। वहाँ उन्होने इन क्षत्रिय कुमारो को बला तथा अतिबला नाम की विद्या सिखायी और दो वर्षों तक अस्त्र-शस्त्रो का अभ्यास कराया। इस बीच राम-लक्ष्मण ने विघ्नकारी राक्षसो का विनाश कर विधिवत् यज्ञ सम्पन्न कराये।

विवाह के समय राम की आयु २७ वर्ष तथा सीता की १८ वर्ष थी। उसके तीन वर्ष बाद ३० वर्ष की आयु मे राम वन को गये।

(ङ) राम के कौशल्या के गर्भ में आने का कारण

ऐसी मान्यता है कि सौभाग्य से ही पुत्ररत्न की उपलब्धि होती है, जिसके लिए पूर्व तथा वर्तमान जन्म के सत्कर्म ही फलदायी होते है। प्रस्तुत लोकगीत मे इसका स्पष्ट उल्लेख है।

(८) मंगल

नग्र बखाना अजोध्या, सेजरिया राजा दसरथ—
सेजरिया राजा दसरथ हो।
सखिया कोखिया बखानी कउसिल्या रानी,
जिनके राम जन्मे है हो ॥१॥
भिखिया माँगत यक बाभन, हिरि-फिरि चितवै
हिरि-फिरि चितवइ हो।
रानी, कउन करेउ बर्त-नेम, रमइया कोखी आये—
रमइया कोखी आये हो ॥२॥

भूखी रहिउँ एकादसिया, दुअसिया क पारन—
दुअसिया क पारन हो ।
बँभना, भूखल बाँभन जेवायो, रमइया कोखी आये
रमइया कोखी आये हो ॥३॥
माघै मकर नहानिउँ, अगिनि नहि तापिउँ—
अगिनि नहि तापिउँ हो ।
बँभना, सोने-रूपे खिचरी संकल्पेउँ,
सन्तति फल पायउँ हो ॥४॥
जे यह मंगल गावैं, गाइ कै सुनावैं—
गाइ कै सुनावइ हो ।
रामा, ते बइकुंठै जाइ, सुनइयौ फल पावैं—
सुनइयौ फल पावइ हो ॥५॥

—माठागाँव (रायबरेली

अयोध्या नगर विख्यात है, राजा दशरथ की शय्या और रानी कौशल्या की कोख भी बखानी हुई है, जिनके राम ने जन्म लिया है ॥१॥

एक ब्राह्मण भिक्षा की याचना करते हुए इधर-उधर देखता है। फिर वह कौशल्या से अपनी जिज्ञासा व्यक्त करता है। वह उनसे पूछता है—"हे रानी! आपने कौन-सा व्रत-नियम किया है, जिससे आपके गर्भ मे राम आये ?" ॥२॥

कौशल्याजी उनकी जिज्ञासा का समाधान करती हैं—"मैं एकादशी का व्रत रही, द्वादशी को उसकी पारणा की एवं भूखे ब्राह्मण को भोजन कराया, जिसके फल-स्वरूप राम मेरी कोख मे आये ॥३॥

इसके अतिरिक्त मैंने माघ मास में, जिसमे मकर-संक्रान्ति भी होती है, (प्रतिदिन ब्राह्ममुहूर्त मे) स्नान किया, अग्नि का ताप नही लिया एवं स्वर्ण-रजत सहित खिचडी का संकल्पपूर्वक दान दिया, जिससे सन्तति-फल की प्राप्ति की" ॥४॥

जो कोई यह मंगल गाता है एवं गाकर दूसरों को सुनाता है, वह वैकुण्ठ-गमन करता है तथा श्रोता व्यक्ति भी सुफल पाता है ॥५॥

(च) कैकेयी का रोष

राम का जन्म सुनकर रानी कैकेयी उन्हे देखने की जिज्ञासा से अपने महल

' सखियो को साथ लेकर रानी कौशल्या के महल गई, किन्तु उनके व्यवहार से वे ष्ट हो गई और क्रोधावेश मे उन्होने राम के वनवास की बात कह डाली। कौशल्या ी ने उन्हे समुचित उत्तर दिया।

(८) सोहर

मिलहु त सखिया सहेलरि, मिलि-जुलि आवा चली रे।
सखिया, आवा चली राज दरबार, कउसिल्याजू के आँगन रे ॥१॥
अँगना बहारइ चेरिया त झपटि ओबरिया गई रे।
रानी, आवति केकही रनीवा, रमइया जिन देखायू रे ॥२॥
गाइ-बजाइ केकही निमकै त रानी ते अरज करै रे।
रानी, तनी एक रामा क देखावा, लउटि घर जाई रे ॥३॥
काउ तू रामा क देखबू त काउ हम देखाई रे।
रानी, राम मोरा करिया भुसुण्डुर, बरहिया क देखू रे ॥४॥
एतनी बचन केकही सूनी त कुरेध मे बोली रे।
रानी, राम बिआहि घर अइहै त बन का सिधइहै रे ॥५॥
साखी न देखै सब बोलिया, बोलहू नही जानू रे।
केकही, राजा दसरथ नाउ होइहै औ अपजस तुहं लागी रे ॥६॥

—मुरहुरपुर (फैजाबाद)

रानी कैकेयी सखियो से कहती है कि "हे सखियो ! आओ, हम लोग मिल जुल कर एक साथ राजा के दरबार और कौशल्याजी के आँगन चले" ॥१॥

रानी कौशल्या की चहेती सेविका आँगन मे झाडू लगा रही थी (कि उसने रानी कैकेयी को आते देख लिया), वह झपट कर कौशल्या के सूतिका-कक्ष में गयी और बोली—"हे रानी जी ! रानी कैकेयी आ रही है, उसे राम को मत दिखलाना" ॥२॥

रानी कैकेयी सखियो के साथ आई (गाने-बजाने का कार्यक्रम हुआ) और गा-बजाकर जब कैकेयी ने फुरसत पायी तो रानी (कौसल्या) से अर्ज किया—"हे रानी ! तनिक राम को दिखा दीजिए तो मैं लौटकर अपने घर जाऊँ ॥३।

कौशल्या ने रूखा उत्तर दिया—"तुम राम को क्या देखोगी और मै क्या दिखाऊँ। रानी ! मेरा राम तो काला भुसुण्डि है (भुशुण्डि जी कौवा होने के कारण

अत्यन्त काल थे, अत कौशल्या जी न राम को कौवा जैसा अत्यन्त काला बताकर न दिखाने का बहाना किया) तथापि यदि देखना ही है तो निष्क्रमण संस्कार के दिन (जब मैं उसे लेकर सूतिकागृह से बाहर आँगन मे निकलूँगी) देखना" ।।४।।

इतना वचन कैकेयी ने सुना तो क्रोध मे भरकर बोली—"हे रानी ! राम जब विवाह के पश्चात् अयोध्या आयेंगे तब वन को प्रस्थान करेंगे" ।।५।।

कौशल्याजी सखियो से कहने लगी—"सब लोग इन (कैकेयी) की बोली को सुनती हो, ये बोलना भी नही जानती (शिष्टाचार का तो ध्यान रखना ही चाहिए) ।" फिर कैकेयी से बोली—"हे कैकेयी ! इसमे राजा दशरथ का तो नाम ही होगा, किन्तु तुम्हे अपयश लगेगा" ।।६।।

टिप्पणी—(१) राजा दशरथ के साथ कैकेयी का विवाह इस अनुबन्ध सहित हुआ था कि उनसे जो पुत्र होगा, वही उत्तराधिकारी होगा ।

(२) इसके अतिरिक्त देवासुर सग्राम मे राजा दशरथ के साथ रानी कैकेयी भी रणस्थल मे गयी थी । वहाँ जब दशरथजी के रथ का एक चक्र निकल कर गिरने-वाला ही था तब रानी कैकेयी ने अपना हाथ लगाकर रथ को गिरने से बचा लिया था । इससे प्रसन्न होकर राजा दशरथ ने उन्हे एक वर और सुरक्षित कर दिया था ।

कैकेयी को दोनो वरो का स्मरण था, जिसे कौशल्या भी जानती थी । यहाँ उसी ओर संकेत किया गया है ।

५—षष्ठी पूजन

जच्चा की सेवा-सुश्रूषा, स्वास्थ्य-रक्षा, मनोरजन आदि के लिए परिवार के सदस्यो मे कार्य का विभाजन निर्धारित है । सास चेरुआ (औषधि) तैयार करती है जेठानी पीपरि पीसकर पिलाती है, नन्द षष्ठी स्थापित करती है और देवर वशी बजाता है । साधारणतया छठे दिन षष्ठी देवी की स्थापना की जाती है । उसी समय षष्ठी पूजन के साथ-साथ स्त्रियाँ देवी गीत, सोहर, ख्याल, उठान आदि भी गाती है । लोगो को उनके कार्य-सम्पादन का नेग भी मिलता है । प्रस्तुत उठान मे इसका वर्णन है ।

(१०) उठान

(चेरुआ, पीपर, छट्ठी, वशी-वादन)

आज ललन कै बात, बलम सन्दुखिया खोलउ हो ।।टेक।।

सासू जौ अइहै चेरुआ चढइहै,
उनहूँ कै भारी नेग, बलम सन्दुखिया खोलउ हो ॥१॥
जेठानी जौ अइहैं पिपरी पिअइहै,
उनहूँ कै भारी नेग, बलम सन्दुखिया खोलउ हो ॥२॥
ननदी जौ अइहैं छठिया धरइहै,
उनहूँ कै भारी नेग, बलम सन्दुखिया खोलउ हो ॥३॥
देउरा जौ अइहै बसी बजइहै,
उनहूँ कै भारी नेग, बलम सन्दुखिया खोलउ हो ॥४॥
—अमेठी (सुल्तानपुर)

पत्नी पति से निवेदन करती है—"हे प्रियतम ! आज पुत्र की बात है, अपनी मञ्जूषा खोलिए।

सासूजी आयेंगी तो चेरुआ चढायेंगी, उनका बडा नेग है। मंजूषा खोलिए ॥१॥

जेठानीजी आयेंगी तो पीपरि पीसकर पिलायेंगी, उनका भी बड़ा नेग है ॥२॥

नन्दजी आयेंगी तो षष्ठी देवी की स्थापना करेंगी, उन्हें पधरायेंगी, उनका भी भारी नेग है ॥३॥

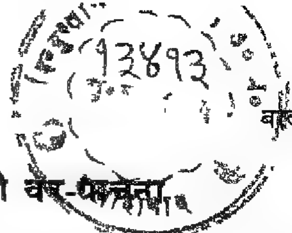
देवरजी आयेंगे तो वंशी बजायेंगे, उनका भी भारी नेग है। मंजूषा खोलिए ॥४॥

इन सभी सगे सम्बन्धियो को तो नेग देना ही है। शिष्टाचार यही कहता है।

६. निष्क्रमण संस्कार

शिशु-जन्म के बारहवें दिन पहले-पहल सूतिका-कक्ष से शिशु को बाहर निकाला जाता है, इसीलिए इसे बरही, बरही या निकामन कहा जाता है। इस अवसर पर बड़े उल्लासपूर्वक बाजे बजते और सरिया, सोहर, उठान आदि गाये जाते हैं। कभी-कभी कोई उत्साही फूफू (बुआ) इसी दिन बधावा भी लेकर आती है, जिससे गायिकाओ का उत्साह भी द्विगुणित हो जाता है और वे इतनी तन्मय हो जाती है कि सुध-बुध खो बैठती है। इस दिन इष्ट मित्रो को भी आमंत्रित किया जाता है।

आजकल पुरोहित तो नाममात्र को आकर संस्कार सम्पादित कराते है एवं नारियाँ बडी उमंग के साथ गीत गाती और बाजे बजाती हैं। इन लोकगीतो में प्रायः राम-कथा के सूत्र भी मिल जाते हैं। प्रस्तुत सोहर ऐसे ही हैं।



(क) कैकेयी की वैर-भावना

रानी कौशल्या बरहौ मे आने के लिए सभी को निमन्त्रण भेजती है, किन्तु वैर-विरोध के कारण कैकेयी को नही बुलवाती, इससे स्वाभिमानिनी कैकेयी रानी का सापत्न्य-अनल प्रज्वलित हो उठता है और वह कामासक्त राजा से राम के बनवास तथा भरत की राजगद्दी की याचना करती है।

११. सोहर

अरे-अरे कार भँवरवा, करिअइ तोरी जतिया हो।
भँवरा, आज मोरे राम कै बरहिया, नेवत दइ आवहु हो ॥१॥
आइ गये अरगन-परगन, रामा ननिआउर हो।
राजा, एक नहीं आई केकही, केकही मोरी बैरिनि हो ॥२॥
सोने के खरउआ राजा दशरथ, केकही के महल गये हो।
रानी, कवन बिरोग तोरे जिअरा, अँगन नाही आइउ हो ॥३॥
एक मँगन मइँ मांगउँ, जउ बिधि पुरवइ हो।
राजा, राम का दिहेउ बनबास, भरथ राजगद्दी हो ॥४॥

—पीढ़ी किरतनिया (सुल्तानपुर)

स्त्रियों को मधुकर ने बहुत आकृष्ट किया है। ब्रज-वनिताएँ उसी को लक्ष्य कर कृष्णदूत उद्धव को मुँहतोड उत्तर देती है, जिसके लिए भ्रमर-गीतों की सृष्टि हुई। प्रस्तुत लोकगीत मे रानी कौशल्या भ्रमर के द्वारा ही बरही का निमन्त्रण भेजती है।

रानी कौशल्या भँवरे से कहती है— 'हे काले भंवरे! तेरी काली ही जाति है (इसीलिए मैं तुझे काला कहती हूँ, बुरा न मानना), आज मेरे पुत्र राम की बरही है, अत. निमन्त्रण दे आओ'' ॥१॥

भ्रमर भ्रमण कर सबको निमन्त्रण दे आया। रानी कौशल्या राजा दशरथ से शिकायत के लहजे मे कहती हैं—''अरगन-परगन सभी तो आ गये, यहाँ तक कि राम के ननिहाल के लोग भी आ गये, किन्तु हे राजन्! अकेली कैकेयी नही आई, कैकेयी मेरी शत्रु है (मुझसे वैर मानती है)'' ॥२॥

यह सुनकर राजा दशरथ स्वर्णपादुकाएँ पहने हुए कैकेयी के महल गये और उससे पूछा—''हे रानी! तुम्हारे हृदय मे कौन-सी व्यथा है, जिसके कारण (निष्क्रमण

संस्कार के मंगल अवसर पर समारोह में सम्मिलित होने के लिए) कौशल्या के आगन नही आयी'' ॥३॥

रानी कैकेयी ने दशरथजी से कहा—''राजन् ! एक माँगन आपसे माँगती हूँ कि राम को बनवास दीजिएगा और भरत को राजगद्दी'' ॥४॥

टिप्पणी—पहले शिशु-जन्म के दसवें दिन नामकरण संस्कार भी होता था, किन्तु आजकल जैसे कई अन्य सस्कारो का लोप हो गया है या जैसे एक के साथ ही दूसरे को भी निपटाने की प्रवृत्ति हो गयी है, वैसे ही अब निष्क्रमण संस्कार के साथ ही नाम भी रख दिया जाता है और नामकरण संस्कार की पूर्ति (खानापूरी) मान ली जाती है।

(ख) हरिणी की व्यथा और याचना

राज-परिवार के भोग-विलासमय जीवन तथा वैभव-प्रदर्शन का यह एक जीवन्त उदाहरण है कि वह दीन-हीन प्रजा को पशुवत समझता है और अपने साधारण-से मनोरंजन के लिए प्रजा का बडे से बडा अनिष्ट कर सकता है, उसकी साधारण-सी याचना (जिसका प्रजा के लिए बहुत महत्त्व है) को अपने तुच्छ स्वार्थ के पीछे ठुकरा देता है।

प्रस्तुत लोकगीत मे हरिणी-हरिण दयनीय प्रजा के प्रतीक है जो उसका सुष्ठु प्रतिनिधित्व करते है।

१२. सोहर

छापक पेड छिउलिया त पतवन घन बन हो।
ये हो, तेहि तर ठाढि हरिनिया त मन अति अनमन हो ॥१॥
चरतइ चरत हरिनवा तौ हरिनी ते पूछइ हो।
हरिनी, की तोरे चरहा झुराने कि पानी बिन मुरझिउ हो ॥२॥
नाही मोरे चरहा झुराने, न पानी बिन मुरझिउँ हो।
ये हो, आज हवै राजा के बरहिया, तुहइँ मारि डइहइँ हो ॥३॥
मचियहि बइठी कउसिल्या त हरिनी अरज करइ हो।
रानी, मँसवा तौ सिझइ रसोइयाँ, खलरिया हमैं देतिउ हो ॥४॥
पेड़वा मैं टँगबइ खलरिया, मनइ समझइबइ हो।
रानी, नित उठि दरसन करबइ मनउ हरिना जीतइ हो ॥५॥

जाउ हरिनि घर अपने, खलरिया नाही देबइ हो।
हरिनी, खलरी कै खँझड़ी मढ़उबइ त राम मोरे खेलिहइ हो ॥६॥
जब-जब बाजइ खँझडिया, सबद सुनि अनकइ हो।
ये हो, ठाढि ढेखुलिया के निचवा त हरिनी बिसूरइ-
मनहि मन सोचइ हो ॥७॥

—दुबेपुर (सुल्तानपुर)

घने वन में पत्तों से आच्छादित छूल (पलाश) के वृक्ष के नीचे अति अन्य-मनस्क हरिणी खड़ी है ॥१॥

चरते-चरते हरिण हरिणी से पूछता है—"हरिणी ! क्या तुम्हारा चरागाह सूख गया या पानी के बिना मुरझायी हुई हो (उदास-सी जान पड़ती हो) ? ॥२॥

हरिणी ने रहस्योद्घाटन करते हुए उत्तर दिया—"हे हरिण ! न तो मेरा चरागाह सूखा है और न पानी के बिना मैं मुरझायी हुई हूँ। मुझमे तो इसीलिए उदासी है कि आज राजा (दशरथ) के यहाँ राम की बरही का उत्सव है, तुम्हे राजा के भेजे हुए शिकारी मार डालेंगे" ॥३॥

हरिणी की बात सही निकली। राजा का एक सैनिक हरिण को मारकर उठा ले गया। हरिणी भी उसके पीछे-पीछे राजमहल पहुँची। वहाँ रानी कौशल्या मचिया पर बैठी हुई थी। हरिणी उनसे प्रार्थना करने लगी—"हे रानी ! मेरे हरिण का मांस तो आपके रसोईघर में पक रहा है, उसकी खाल मुझे दे दीजिए। ४।

मैं उसे पेड मे टाँगूँगी और मन समझाऊँगी। रानी, मैं नित्य उठकर उसके दर्शन करूँगी, मानो हरिण जीवित ही हो" ॥५॥

रानी कौशल्या ने नकारात्मक उत्तर दिया—"हरिणी ! तुम अपने घर लौट जाओ, मैं खाल नही दूँगी। मैं खाल से खँझडी (एक बाजा) मढवाऊँगी, जिससे मेरे राम खेलेंगे" ॥६॥

निराश होकर बेचारी विधवा हरिणी लौट गयी। जब-जब खँझडी बजती, उसकी आवाज सुनकर वह अनक उठती, पलाश-वृक्ष के नीचे खडी होकर बिसूरती और मन-ही-मन में शोक करती ॥७॥

टिप्पणी—प्रस्तुत लोकगीत सम्वाद शैली का अच्छा उदाहरण है। इसमे हरिणी तथा हरिण और हरिणी तथा रानी कौसल्या का वार्तालाप अत्यधिक करुणा-जनक है।

३

७. अन्नप्राशन संस्कार

शिशु के जन्म के छठे महीने अन्नप्राशन संस्कार होता है, जिसे लोकभाषा में पसनी कहा जाता है। इस अवसर पर भात में दही, मधु तथा घी मिलाकर प्रथम बार शिशु को अन्न खिलाया जाता है एवं लोकगायिकाएँ जन्मोत्सव की ही भाँति देवी गीत, सरिया और सोहर गाकर वातावरण को रस-सिक्त कर देती है।

(क) खीर प्रस्ताव

प्रस्तुत लोकगीत में अन्नप्राशन के अवसर पर शिशु के लिए खीर खिलाने का प्रस्ताव है।

(१३) सोहर

को मोरे चउरा बेसाहै औ गउवै दुहावै।
को मोरे खिरिया बनावै, लालन कै पसनिया ॥१॥
बाबा मोरे चउरा बेसाहै औ गउवै दुहावै।
आजी रानी खिरिया बनावै औ जँघ बइठावै।
अपने नाती क खिरिया चिखावैं,
लालन कै पसनिया ॥२॥

—लालूपुर ढबिया (सुल्तानपुर)

आज मेरे प्रिय पुत्र का अन्नप्राशन है, किन्तु कौन मेरे चावल खरीदे, गायें दुहाये और खीर बनाये ॥१॥

बाबा मेरे चावल खरीदते और गाये दुहाते हैं, आजी रानी खीर बनाती एवं जाँघ पर बैठाती है, फिर वे अपने नाती को खीर खिलाती हैं ॥२॥

(ख) राम का घुटनों के बल दौड़ना

जब शिशु पाँच-छः महीने का हो जाता है तो दोनों हाथो तथा दोनों पैरो के सहारे घुटनो के बल चलने लगता है। अवध के विशाल क्षेत्र मे इसे बकइयाँ चलना कहा जाता है। भक्तो ने इसे ही घुटुरुन चलना भी कहा है—घुटुरुन चलत रेनु तनु मंडित, मुख दधि लेप किये।"

लोकगायक इसका वर्णन चैतूँ या बैता मे इस प्रकार करता है—

(१४) चँतू

आवत राम बकइयाँ, हो रामा धूरि भरे तन ॥टेक॥
कउर लिहे मुख, पाछे डोलत,
सिरी कउसिल्या मइया, हो रामा धूरि भरे तन ॥१॥
लै कनिया झारत आँचर ते,
धूसरि धूरि धुरइया, हो रामा धूरि भरे तन ॥२॥
केसी-जोगी ठाढे असीसत,
कँअर जी आओ गोसइयाँ, हो रामा धूरि भरे तन ॥३॥

—अहिरी मऊ (बाँदा)

राम घुटनो के बल दौड़ रहे है, उनके शरीर में काफी धूल लगी हुई है।

उन्होंने मुख में भोजन का एक ग्रास (नेवाला) ले रखा है, उनके पीछे कौशल्या माता चल रही है ॥१॥

कौशल्या उन्हे गोद में उठा लेती हैं और अपने आँचल से झाड़ती है, क्योंकि वे धूल-धूसरित हैं ॥२॥

केशी और योगी खड़े हुए उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं और कर रहे हैं कि "हे कुंअर जी, इधर आइए। आप गोस्वामी है" ॥३॥

८. चूड़ाकर्म संस्कार

अन्नप्राशन सस्कार के उपरान्त वर्षान्तर्गत या तीसरे वर्ष चूडाकर्म संस्कार होता है, जिसे अवधी भाषा मे मूँडन कहा जाता है, क्योंकि इसमें प्रथम बार शिशु के बाल मूँडे जाते है।

इस अवसर पर नापित अपने छूरे से सिर के बाल साफ करता है और महिलाएँ देवी गीत, सरिया, सोहर, उठान, ख्याल आदि गाती है। जिस गीत मे मुख्यतया मूँडन की चर्चा होती है, उसे मूंडन या मूंडन का गीत करते है।

प्रस्तुत मूंडन मे शिशु के माता-पिता के लिए अनेक विधि-निषेधो का वर्णन है।

(१५) मूँड़न

जउ पूता रहेउ तुम बार अउर गभुआर।
गर्भिनी हथिनिया न बइठैं तौ बाप तुँभार ॥१॥
जउ पूता रहेउ तुम बार अउर गभुआर।
लाल-पिअर नहिं पहिरइँ तौ माया तुँभारि ॥२॥
जउ पूता रहेउ तुम बार अउर गभुआर।
हरिअर पेड न काटैं तौ बाप तुँभार ॥३॥
जउ पूता रहेउ तुम बार अउर गभुआर।
बाँह पसारि न जूझइँ तौ माया तुँभारि ॥४॥
जउ पूता रहेउ तुम बार अउर गभुआर।
सेजा पैग न ढारें तौ बाप तुँभार ॥५॥
जउ पूता रहेउ तुम बार अउर गभुआर।
पात-पतरिया न जेवइँ तौ माया तुँभारि ॥६॥

—चिलौली (रायबरेली)

कोई स्त्री बालक से कहती है—"हे पुत्र ! जब तुम गर्भ में थे तब तुम्हारे पिता जी इतना तक ध्यान रखते थे कि गर्भिणी हथिनी पर नहीं बैठते थे (कि कहीं उसे कष्ट न हो) ॥१॥

हे पुत्र ! जब तुम गर्भ में थे तब तुम्हारी माता जी लाल-पीले वस्त्र नहीं पहनती थी अर्थात् साज-शृंगार नहीं करती थीं ॥२॥

हे पुत्र ! जब तुम गर्भस्थ थे तब तुम्हारे पिता जी इतना तक ध्यान रखते थे कि हरा वृक्ष तक नहीं काटते थे (क्योंकि वे समझते थे कि हरे वृक्ष में जीवन होता है और उसे काटने से कष्ट होता है।) ॥३॥

हे पुत्र ! जब तुम गर्भ में थे तब तुम्हारी माता जी यह ध्यान रखती थी कि भुजाएँ फैलाकर नहीं झगड़ती थी (जब कि अन्य दिनों में चाहे वे कभी लड़ती-झगड़ती ही रही हों ॥४॥

हे पुत्र ! जब तुम बार-गभुआर थे, तब तुम्हारे पिता जी सेज पर पैर तक नहीं रखते थे अर्थात् वे बड़े संयम-नियम से रहते थे ॥५॥

हे पुत्र ! जब तुम बार-गभुआर थे, तब तुम्हारी माता जी साधारण पत्तल-

पतरी आदि मे भोजन नहीं करती थी अर्थात् वे खान-पान में बडी सतर्क रहती थी ''।।६।।

टिप्पणी—वास्तव मे जब शिशु गर्भ मे आता है, तभी से उस पर माता-पिता के आचरण तथा परिवार के वातावरण का प्रभाव पडने लगता है, जो आगे चलकर उसके जीवन मे अपना स्थान बना लेता है। अर्जुन-पुत्र अभिमन्यु के चक्र-व्यूह प्रवेश के सन्दर्भ मे यह बात प्रसिद्ध है। यही कारण है कि माता-पिता तथा परिवार के लोग सत्कर्म करते है और दुष्कर्मों से दूर रहते है।

घर की दीवारो पर देवी-देवताओ, अवतारो, महापुरुषो, भक्तो, साहित्य-कारो, क्रान्तिकारियों आदि के चित्र लगाने तथा उनकी मूर्तियाँ रखने से घरेलू वातावरण सौम्य बना रहता है एवं परिवार का प्रत्येक सदस्य अप्रत्यक्षतः उनसे प्रेरणा ग्रहण करता है।

इस दृष्टि से वेदमाता गायत्री, सरस्वती, दुर्गा, लक्ष्मी-विष्णु, शिव-पार्वती, गणेश, वसिष्ठ, विश्वामित्र, सावित्री-सत्यवान, सत्य हरिश्चन्द्र, परशुराम, अत्रि-अनसूया, रामपंचायतन, (राम के साथ सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा हनुमान) भीष्म, युधिष्ठिर, कृष्ण, अर्जुन, व्यास, शुकदेव, महावीर स्वामी, महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, नामदेव, नरसी मेहता, चैतन्य महाप्रभु, कबीरदास, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई, महाराणा प्रताप, शिवाजी, महारानी लक्ष्मीबाई, राना बेनीमाधव, स्वामी दयानन्द सरस्वती गुरु नानकदेव, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, महर्षि रमण, योगिराज अरविन्द, गोपालकृष्ण गोखले, लाला लाजपतराय, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल डा० हेडगवार, गुरु गोलवलकर, रवीन्द्र नाथ ठाकुर, महात्मा गाँधी, पुरुषोत्तमदास टंडन, डा० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० राधाकृष्णनन, सुभाषचन्द्र बोस, जवाहरलाल नेहरू, डा० भीमराव अम्बेडकर, अमरशहीद चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, अशफाक उल्ला, भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, प्रेमचन्द, जयशंकर 'प्रसाद', रफीअहमद किदवई, लालबहादुर शास्त्री, सूर्यकन्त त्रिपाठी 'निराला', आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', सुमित्रानन्दन पन्त, महादेवी वर्मा, इन्दिरा गाँधी आदि के चित्र सग्रहणीय हैं।

(१६) मूँड़न

प्रस्तुत मूँड़न मे भी अनेक विधि-निषेधों का वर्णन है।

जौ पूता रहेउ बार-गभुआर,
सोने कै छूरा गढावैं नाना तोहार।
जौ पूता रहेउ बार-गभुआर,
सोने कै टकवा भँजावैं नानी तोहारि ।।१।।
जौ पूता रहेउ बार-गभुआर,
सोने कै छूरा गढ़ावैं आजा तोहार।
जौ पूता रहेउ बार-गभुआर,
सोने कै टकवा लुटावै आजी तोहारि ।।२।।
जौ पूता रहेउ बार-गभुआर,
बन के सबजा न मारैं बाप तोहार।
जौ पूता रहेउ बार-गभुआर।
चीँटी कै भठिया न नाँघै माया तोहारि ।।३।।

—जामो (सुल्तानपुर)

हे पुत्र ! जब तुम गर्भ मे थे तब तुम्हारे नानाजी सोने का छुरा बनवाते थे। (तभी से तुम्हारे मुण्डन की तैयारी कर रहे थे) और तुम्हारी नानीजी सोने के टका भँजाती थीं ।।१।।

हे पुत्र ! जब तुम गर्भ मे थे तब तुम्हारे बाबाजी सोने का छुरा गढ़ाते थे एवं तुम्हारी आजीजी सोने के टके लुटाती थी ।।२।।

हे पुत्र ! जब तुम गर्भ मे थे तब तुम्हारे पिताजी वनके (भी) पशु नही मारते थे (पालतू पशुओं की तो बात ही क्या)। तुम्हारी माताजी (इतना तक ध्यान रखती थी कि) चींटियो की भाठी तक नही लाँघती थीं (कि कही कोई चींटी पैर के नीचे पड़कर न मर जाय।) ।।३।।

९. कर्णवेध संस्कार

कर्णवेध लोकभाषा अवधी मे इस सस्कार को कनछेदन या छेदन कहा जाता है। यह शिशु के जन्म के तीसरे वर्ष चूडाकर्म के साथ या पाँचवे वर्ष किया जाता है। इसमें प्रवीण नापित से शिशु के दोनों कानो में छिद्र कराया जाता है और फिर उनमें सोने या चाँदी की बाली पहना दी जाती है, जिससे छिद्र बन्द न होने पाये। आयुर्वेदानुसार कर्णवेध स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

छेदने के समय देवी गीत, सोहर, उठान आदि गाये जाते है। यहाँ अवधी लोकगायिकाओं के दो प्रिय छेदन गीत प्रस्तुत किये जाते हैं—

(१७) छेदन

को मोरे जाँघा बैठारइ तउ छेदनु करावइ।
को मोरे खरचइ दाम, लालन कर छेदनु ।।१।।
बाबा उनके जाँघा बैठारइँ तउ छेदनु करावइँ।
आजी रानी खरचइँ दाम, छेदनु करावइँ ।।२।।
को मोरे सुजिया गढ़ावइ तउ मोतिया पोहावइ।
धरइ सोनरवा के हाथ तउ छेदनु करावइ ।।३।।
बाबा उनके सुजिया गढ़ावइँ तउ मोतिया पोहावइँ।
आजी रानी टकवा उतारइँ सोनरवा क देवइँ ।।४।।

—पेंदुरवा (सुल्तानपुर)

मेरे कौन शिशु को अपनी जाँघ पर बैठाता और छेदन कराता है ? मेरे कौन धन व्यय करता है ? प्रिय पुत्र का छेदन है ।।१।।

उनके (शिशु के) बाबा जघा पर बैठाते और छेदन कराते हैं। उनकी आजी धन खर्च करती और छेदन कराती हैं ।।२।।

मेरे कौन सूजी गढाये, मोती पोहाये, फिर स्वर्णकार के हाथ रखे और छेदन कराये ? ।।३।।

उनके बाबा सुई गढायें तो मोती पोहाये और आजी रानी टका उतारें एवं सुनार को दें ।।४।।

टिप्पणी—लोकगायिकाएँ गाते समय अन्य संबंध युग्मो को भी जोड़ लेती है। यथा—दादा-दादी, बप्पा-अम्मा, काका-काकी, फूफा-फूफू आदि।

(१८) छेदन

जौ पूता जनतिउँ ललन मोरे छेदन तुँभार।
सोने कै सुजिया गढ़ावैं तौ बाब तुँभार।
सोने-रूपे टकरा उवारैं तौ आजी तुँभारि ।।१।।

जौ पूता जनतिउँ ललन मोरे छेदन तुँभार ।
सोने कै सुजिया गढावै तौ बाबा तुँभारि ।
सोने-रूपे टकवा उवारै तौ दादी तुँभारि ।।२।।

—चिलौली (रायबरेली)

हे मेरे प्रिय पुत्र ! यदि मै जानती कि तुम्हारा छेदन होनेवाला है तो तुम्हारे बाबा सोने की सुई गढाते एव तुम्हारी आजी सोने और चाँदी के सिक्के तुम्हारे सिर के ऊपर से घुमाकर न्योछावर करती ।।१।।

हे मेरे प्रिय पुत्र ! यदि मै जानती कि तुम्हारा छेदन होनेवाला है तो तुम्हारे दादा सोने की सुई गढाते एवं तुम्हारी दादी सोने और चाँदी के टके उवारतीं ।।२।।

१०. उपनयन संस्कार

उपनयन संस्कार मे यज्ञोपवीत की प्रधानता होने के कारण उसे यज्ञोपवीत संस्कार भी कहा जाता है, जिसे अवधी मे जनेऊ कहते हैं ।

यह संस्कार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसका शास्त्रो मे उत्तम विधान है । इसके लिए प्रमाण है कि—

अष्टमे वर्षे ब्राह्मणमुपनयेत् गर्भाष्टमे वा । एकादशे क्षत्रियम् । द्वादशे वैश्यम् । आषोडशाद् ब्राह्मणस्यानतीत कालः । आद्वाविंशात् क्षत्रियस्य, आचतुर्विंशाद् वैश्यस्य । अत ऊर्ध्वं पतितसावित्री वा भवन्ति ।

—आश्वलायन गृह्यसूत्र (१।१६।१-६)

'जिस दिन जन्म हुआ हो अथवा जिस दिन गर्भ रहा हो, उससे आठवे वर्ष मे ब्राह्मण के, ग्यारहवें वर्ष मे क्षत्रिय के और बारहवें वर्ष मे वैश्य के बालक का उपनयन होना चाहिए । इसके बाद उपनयन करना पडे तो ब्राह्मण का १६, क्षत्रिय का २२ तथा वैश्य का २४ वर्ष तक हो जाना चाहिए । इससे ऊपर वे पतितसावित्री हो जाते है अर्थात् उन्हें गायत्री जप का वास्तविक लाभ नही मिलता ।'

पुनश्च उत्तरायण सूर्य होने पर—

वसन्ते ब्राह्मणमुपनयेत् । ग्रीष्मे राजन्यम् । शरदि वैश्यम् । सर्वकालमेव ।

—शतपथ

अर्थात् ब्राह्मण का वसन्त क्षत्रिय का ग्रीष्म एव वैश्य का शारद ऋतु मे उपनयन होना चाहिए अथवा उपनयन के लिए सब ही समय है।

इसके अतिरिक्त शास्त्रो मे अनेक विधि-निषेधो का भी वर्णन है, किन्तु यहाँ लोकगीतो के सन्दर्भ मे चर्चा हो रही है, अतः उसके विस्तार मे जाना अनावश्यक है।

पुरोहितजी मान्य आचार्य के सहयोग से शास्त्रानुकूल विधिवत सस्कार संपन्न कराते एव महिलाएँ अनेक लोकाचार करती हुई तत्सम्बन्धी लोकगीत गाती हैं, जिससे उपयुक्त वातावरण निर्मित हो जाता है।

मुख्य सस्कार के कई दिन पहले से विविध लोकाचार होने लगते है, किन्तु उनमे भी चार दिन तो महत्त्वपूर्ण होते है।

प्रथम दिवस—मनछुहा-धनछुहा

(क) देवी गीत

प्रथम दिवस मनछुहा-धनछुहा होता है, जिसमे लोकवधुएँ आद्या शक्ति देवी के गीत गाती है, क्योंकि उन्ही की कृपा मे सभी यज्ञ तथा संस्कार निर्विघ्न सम्पन्न होते है।

यहाँ दो देवी गीत प्रस्तुत है—

(१६) देवी गीत

गलिया की गलिया रे फिरइँ भवानी,
कोलियन ठाढ़ी ओनाइँ रे।
केहिके दुलरुआ कै यहु जग रोपा,
जग्नि देखन हम जाब ॥१॥
आवउ भवानी, बइठो मोरे अँगना,
देबइ सतरँगिया बिछाइ रे।
घिउ-गुर ते मइया होम करउबइ,
धुअँना अकासइ जाइ ॥२॥
दइकै असीस चली हैं भवानी,
फुलवा दिहिनि छिथराइ रे।

फलाने रामा अमर होइ जइहईं,
तोरी जगि पूरन होइ ॥३॥

—लालगंज (रायबरेली)

भवानी गली-गली घूम-फिर रही है और सँकरे मार्ग में खड़ी होकर आहट ले रही हैं कि 'किसके प्रिय पुत्र का यह यज्ञारोपण है, मैं यज्ञ देखने जाऊँगी। १॥'

कौशल्याजी कहती है—'हे भवानीजी ! आइए, मेरे आँगन में आसन ग्रहण कीजिए। मैं आपके बैठने के लिए सप्तवर्णी वस्त्र बिछा दूँगी और घी-गुड़ से होम कराऊँगी, जिसका धुआँ सुदूर आकाश तक जायेगा ॥२॥'

जगज्जननी आशीर्वाद देकर चल पड़ी, पुष्प विकीर्ण कर दिये और कहा—'राम अमर हो जायेंगे और तुम्हारा यज्ञ पूर्ण होगा ॥३॥'

(२०) देवी गीत

दुखहरनी मइया मेरी दुख तुमहि हरो ॥टेक॥
सोने कौ मन्दिर मइया कौ चन्दन लागे चारौ खम्भ ॥१॥
ऊँचे पैं मन्दिर मइया कौ, नीचे बहै श्रीगंग ॥२॥
ओर पास लोंगनि के जोड़ा, बीच बिराजैं जगदम्ब ॥३॥
तोइ सुमिरि मइया तेरौ छन्द गाऊँ जग्य में होउ सहाय ॥४॥

—ब्रज

हे दुखहारिणी माँ ! आप मेरा दुख दूर कीजिए।

माँ का मन्दिर सोने का है और उसमे चन्दन के चारो स्तम्भ लगे है ॥१॥

माँ का मन्दिर ऊँचे स्थान पर है और नीचे श्रीगंगाजी बह रही हैं ॥२॥

दोनों ओर लौंगो का जोड़ा है और मध्य में जगदम्बा बिराज रही है ॥३॥

हे माता ! तेरा स्मरण कर मैं तेरी स्तुति करता/करती हूँ, आप मेरे यज्ञ मे सहायक हों ॥४॥

(ख) भिनसरिया

जिसे पुरुषवर्ग प्रात:कालीन या पूर्व सन्ध्या कहता है, उसे ही लोक-गायिकाएँ भिनसरिया कहती हैं एवं आद्या शक्ति गायत्री की स्तुति में 'भिनसरिया' नामक गीत गाती हैं।

(२१) भिनसरिया

भोर भये भिनसरवा, चिरइया लगी बोलै ।
जाय जगावौ कवने रामा, जेहि घर ओसरि ।।
लेहु कलस मुँह धोवौ, चलौ दुहावन ।।१।।
ना हमरे धेनु न गाभिनि, ना घर ओसरि।
दुधवा तौ बहँगवा से, मठवा कै नीर बहै ।।
लेब कलस मुँह धोउब, चलब दुहावन ।।२।।
बाढ़ै दहिउ कै दहेड़िया, अवरि घिउ गागरि।
बाढ़ै कवनि रानी कै नइहर, दुलहिनि देई कै सासुर ।।३।।

—(दर्शन नगर (फैजाबाद)

प्रात'काल देवी जागरण का सन्देश देती है कि प्रात कालीन सन्ध्या के समय पक्षी कलरव करने लगे। जिनके घर मे नयी भैंस है, उन्हे जाकर जगाओ मुँह धोओ और कलश लेकर दूध दुहाने चलो ।।१।।

गृहस्वामिनी निवेदन करती है कि "न तो हमारे घर गर्भिणी गाय है और न ही नयी ब्याने योग्य भैंस कि मैं कलश लूंगी, मुँह धोऊँगी और दुहाने चलूँगी" ।।२।।

देवी ने उसकी विनम्र स्पष्टवादिता से प्रसन्न होकर उसे आशीर्वाद दिया— "तेरे बहुँगो दूध हो, मठ्ठा जल की भाँति बहे (इतना अधिक हो)। दही रखने की दहेडी एवं घृत की गागर वृद्धिमती हो। अमुक रानी (कौशल्या) का नैहर और उनकी ससुराल समृद्ध हो" ।।३।।

टिप्पणी—कवनि के स्थान पर बरुआ की माँ का नाम लिया जाता है।

(ग) चाकी पूजन

मनछुहा के ही दिन धनछुहा भी होता है, जिसमे सबमे पहले घर की चक्की का पूजन किया जाता है तथा प्रस्तुत लोकगीत गाया जाता है—

(२२) चकिया

चकिया के भीतर उरुद तौ घुरुर-मुरुर करै ।
कउनी रनियवा कै जगिग तौ दलिया दरावै ।।१।।

चकिया के भीतर उरुद तौ घुरुर-मुरुर करै।
फलानी रनिया के जग्गि तौ दलिया दरावै ॥२॥

—सेंदुरवा, (सुल्तानपुर)

चक्की के भीतर उडद है जो चक्की चलाते समय घुरुर-मुरुर (की आवाज) करता है। किस रानी के यहाँ यज्ञ है जो वह दाल दरा रही है? ॥१॥

चक्की के भीतर उडद है जो चक्की चलाते समय घुरुर-मुरुर करता है। अमुक रानी (कौशल्या) के यहाँ यज्ञ है जो दाल दला रही है ॥२॥

(घ) काँड़ी पूजन

महिलाएँ चक्की पूजन के उपरान्त काँडी पूजन करती है और तत्सम्बन्धी गीत गाती है, जिसे कँडिया कहते है।

(२३) कँड़िया

धना कूटौ—धना कूटौ,
पगरैतिन की ओखरी में धना कूटौ।
धान कूटि के चाउर निकार,
देउतन भात बनाव॥

—सेंदुरवा (सुल्तानपुर)

एक सौभाग्यवती स्त्री दूसरी से कहती है—

पगरैतिन की ओखली मे धान कूटो, धान कूटकर चावल निकालो एवं देवताओ के लिए भात बनाओ।

(ङ) साँझ मनाना

मठमँगरा के दिन सायंकाल स्त्रियाँ साँझ मनाती है जिसमे तत्सम्बन्धी लोकगीत गाये जाते हैं। यहाँ एक गीत प्रस्तुत है।

(२४) साँझ मनाना

साँझ, सँझैली, सँझलरानी, भई तीनिउ भगतिनि।
सरग मैं बिनवैं कवन रामा, हथवा चँवर लिहे।
के हमरे कुल कर नायक, एस जग रोपै॥ १॥

बेदिया पै ठाढे कवने रामा, हथवा लिहे आछत
हम तोहरे कुल कर नायक, एस जग रोपेन ।। २ ।।
अमवा की नाई बेटा बउरौ,
अमिलि एस फर लिऔ ।
बेटा, दुबिया की नाई छइलाउ,
चँदन एस महँ कौ ।। ३ ।।

—दर्शन नगर (फैजाबाद)

सांझ, संझैली तथा संझलरानी तीनों भक्तिन हो गईं। स्वर्ग में अमुक सज्जन हाथ में चँवर लिए हुए विनम्रतापूर्वक कहते हैं—'हमारे कुल का नायक कौन है जिसने ऐसा यज्ञ रोपा है ।। १ ।।

वेदी पर अमुक राम खड़े हैं, हाथ में अक्षत लिये हुए हैं और कहते हैं कि हम आपके कुल के नायक है, जिसने इस प्रकार का यज्ञ रचा है ।। २ ।।

सन्ध्या देवी आशीर्वाद देते हुए कहती है—"हे पुत्र ! आम्र की भाँति बौरो, इमली की भाँति फलो, दूर्वा की तरह छइलो एवं चन्दन की भाँति महको अर्थात् पुत्र-पौत्र, धन धान्य एवं यश-कीर्ति प्राप्त करो (वंश बेल बढ़े, धन-धान्य से भरे पूरे रहो एवं चतुर्दिक् तुम्हारी कीर्ति-पताका फहरे) ।।३।।"

द्वितीय दिवस—तैल पूजन

यज्ञोपवीत से दो दिन पूर्व तैल पूजन होता है। इसका अभिप्राय यह है कि उस दिन ब्रह्मचारी बालक के तेल लगाकर उसके शरीर को स्निग्ध कर दिया जाता है, क्योंकि दो दिन बाद उसे गुरुकुल जाना पड़ेगा, जहाँ विद्याध्ययन में ही संलग्न रहना होता है। सजाव-शृंगार का वहाँ कोई स्थान नहीं, क्योंकि विद्यार्थी यदि शृंगार-साधन में ही लग जायेगा तो अध्ययन पर पूरा समय और ध्यान नहीं दे सकेगा।

(क) मण्डप-व्यवस्था (माँड़ो)

प्राय. तेल के दिन ही माँडौ छाया जाता है एवं उसके नीचे विभिन्न वस्तुएँ (कलश, पीठासन, दीपाधार आदि) स्थापित की जाती हैं। इन कृत्यों के सम्पादित होते समय विविध लोकगीत गाये जाते है यथा—

(२५)

(अ) मण्डप छाते समय

माँड़ौ तौ भल सुन्दर, नाहीं जानौं कउने गुना।
नाही जानौं वरई छउवे, नाही जानौं बाँस गुना ॥१॥

(आ) कलश रखते समय

कलसा तौ भल सुन्दर, नाही जानौं कउने गुना।
नाही जानौ कोंहरा के गढ़बे, नाहीं जानौं माटी गुना ॥२॥

(इ) पीठासन रखते समय

पिढई तौ भल सुन्दरि, नाही जानौं कउने गुना।
नाहीं जानौ बढ़ई के गढ़बे, नाही जानौं काठे गुना ॥३॥

(ई) दीपाधार रखते समय

दीवट तौ भल सुन्दर, नाहीं जानौं कउने गुना।
नाहीं जानौं बढ़ई के गढ़बे, नाहीं जानौं काठे गुना ॥४॥

—सेन्दुरवा (सुलतानपुर)

मण्डप तो बहुत अच्छा है, पता नही किस कारण से। पता नही बरई के छाने के कारण या बाँस अच्छे होने से ॥१॥

कलश तो कितना अच्छा है, पता नहीं किस कारण से। न जाने कुम्हार के गढ़ने के कारज या मृत्तिका अच्छी होने से ॥२॥

पीठासन तो बहुत भला है, पता नहीं किस सबब से। न जाने बढ़ई के गढने की कुशलता से या काष्ठ की अच्छाई से ॥३॥

दीपाधार तो अति भव्य है, न जाने क्यों। पता नही बढ़ई के गढ़ने की निपुणता से या काष्ठ अच्छा होने से ॥४॥

(ख) कोइलरि

जिस प्रकार जन्मोत्सव से सम्बन्धित बरही (निष्क्रमण) के सन्देशवाहक के रूप में लोकनायिकाओं ने भ्रमर का चयन किया है, उसी प्रकार उपनयन तथा

जैसे महत्त्वपूर्ण सस्कारो की सदेशवाहिका के रूप में कोकिल को उपयुक्त है। कोकिल (कोयल) से सम्बन्धित होने के कारण ही इस लोकगीत का नाम ..रि' पड गया है। इसके अनुसार कोयल के द्वारा विभिन्न सम्बन्धियों के यहाँ ..ण भेजा जाता है। सभी सम्बन्धी आ जाते है, किन्तु पगरैतिन (बरुआ की माँ) ..ई नही आता, जिसकी बडी प्रतीक्षा है, क्योंकि जब वह अपनी बहिन के लिए ..धोती) लेकर आता है तभी पगरैतिन उसे पहिन कर अन्य कृत्य सम्पन्न है। पेरी की इसी महत्ता के कारण इस लोकगीत को पेरी-गीत भी कहते हैं। ..त काफी बड़ा होता है।

(२६) कोइलरि या पेरी गीत

अरे-अरे कारी कोइलिया, अँगन मोरे बोलउ रे।
कोइलरि, आज मोरे पहिल उछाह, नेवत दइ आवउ रे ॥१॥
नेउतेउ अरगन-परगन अउर ननियाउर रे।
कोइलरि, एक नाहीं नेउतेउ बिरन भइया,
जिनते मैं रूठिउँ रे। ॥२॥
सासू मिलइँ आपन पुतवा, ननँद भेटइँ भइया रे।
कोइलरि, बजर कै छतिया हमारि, मैं केहि उठि भेटउँ रे ॥३॥
अरे-अरे मड़ए की गोतिन, मंगल जिन गावउ रे।
बहिनी, मोरे जिअरा बहुत बिरोग, बिरन नहिं आये रे ॥४॥
अरे-अरे सासू ननँदिया, करहिआ उतारि डारउ रे।
सासू, मोरे जिअरा बहुत बिरोग, बिरन नहिं आये रे ॥५॥
अरे-अरे कारी कोइलिया, अँगन मोरे आवउ रे।
कोइलरि, फिर ते नेवत दइ आवउ, बिरन मोरे आवइँ रे ॥६॥
अरे-अरे ससुर की चेरिया तउ हमरी लउँड़िअउ रे।
चेरिया, देखि आवउ भइया कै डगरिया,
केतिक दूरि आवइँ रे ॥७॥
आगे-आगे आवइ घिया-गागरि, पिअरी गहाबड़ि रे।
बहुअरि, लीले घोड़े भइया असवार अउ डोलिया भउजि आवइँ रे ॥८॥
अरे-अरे मँड़ए की गोतिन, मंगल अब गावउ रे।
बहिनी, मोरे जिअरा बहुत हुलास, बिरन मोरे आइगे है रे ॥९॥

कहँवाँ उतारउँ घिउ-गागरि तउ पिअरी गहाबड़ि रे।
सासू, कहँवाँ बइठावउँ बिरन भइया तउ कहँवाँ भउजि आपनि रे ॥१०॥
मँड़ए उतारउ घिया-गागरि, पिअरी गहाबड़ि रे।
बहुअरि, सभिया बइठावउ बिरन भइया
तौ ओबरी भउजि आपनि रे ॥११॥
सासू, छोरउ न फटही लुगरिया अउ पहिरउ पिअरिया रे।
सासू, भरि मुख देउ असीस, बाढइ मोरा नइहर रे ॥१२॥
—सेंदुरवा (सुल्तानपुर)

वरुआ की माँ कोयल से कहती है—

अरे काली कोयल ! मेरे आँगन मे (आकर) बोलो। हे कोयल ! आज हमारे यहाँ प्रथम विशेष उत्सव (उत्साहयुक्त होने से उछाह) है, जिसका निमन्त्रण दे आओ ॥१॥

हे कोयल ! गाँव-राँव की सारी प्रजा तथा राम के ननिहाल में निमन्त्रण देना, किन्तु मेरे बीरन (वीर भ्राता) को न निमन्त्रित करना, जिनसे मैं रूठी हुई हूँ ॥२॥

सासुजी अपने पुत्र से मिल रही है, ननदजी अपने भाई से भेंट रही हैं, किन्तु हे कोयल। मेरी वज्र की छाती है, मैं (भला) उठकर किसे भेंटूँ ॥३॥

हे मण्डपस्थित समगोत्रीय बहिनो ! मंगल मत गाओ। हे बहिन ! मेरे हृदय मे बहुत व्यथा है, (मेरे) भाई नही आये ॥४॥

हे सासु और ननद ! चूल्हे पर चढ़ी हुई कडाही उतार डालो। हे सासुजी ! मेरे हृदय में बहुत बिरोग है, (मेरे) भ्राता नही आये ॥५॥

हे कृष्णा कोकिला ! मेरे आँगन में आओ। कोकिला ! फिर से निमन्त्रण दे आओ, जिससे मेरे भ्राता आयें ॥६॥

हे ससुरजी की चेरी और हमारी लौंड़ी ! मेरे भाई की राह देख आओ कि वे कितनी दूर तक आ गये है ॥७॥

चेरी रास्ता देखकर आती है और सूचित करती है—

आगे-आगे घी से भरी हुई गागर और गहरे पीले रंग मे रंगी हुई धोती आ

रही है हे बहू श्यामवर्णी घोड पर भैया सवार है और गाडी (बैलगाडी) पर भाभी आ रही है ।८

वधू (बरुआ की माँ) कहती है—

हे मण्डप की समगोत्रीय वधुओ ! मगल गीत गाओ । हे बहिन ! मेरे हृदय में (अब) बहुत उल्लास है, मेरे भाई आ गये है ।।६।।

हे सासुजी ! घृतमयी गागर और गहन पीतवर्णी साडी कहाँ उतारूँ, कहाँ वीर भ्राता और कहाँ अपनी भाभी को बैठाऊँ ? ।।१०।।

सासु सस्नेह कहती है—

मण्डप मे घी-गागर और गहाबड पेरी उतारो । हे बहू ! सभा भवन में वीर भाई को और एकान्त कक्ष (कोठरी) मे अपनी भाभी को बैठाओ ।।११।।

वधू अपनी सासु से निवेदन करती है—

हे सासुजी ! जीर्ण वस्त्र त्याग दीजिए और पेरी पहन लीजिए । सासू ! शुभाशीर्वाद दीजिए कि मेरा नैहर (मायका) सतत् वृद्धिको प्राप्त हो ।।१२।।

टिप्पणी—वास्तव में भाई अपनी बहिन के लिए पेरी ले जाता है, किन्तु धनी तथा उत्साही भाई अपनी बहिन की सास के लिए भी पेरी ले जाता है । यहाँ वधू के कथन से इसकी पुष्टि होती है, जब वह अपनी सास से भी पेरी धारण करने का अनुरोध करती है ।

तृतीय दिवस—मातृपूजन

तैल पूजन के दूसरे दिन मातृपूजन होता है, जिसे अवधी भाषा में मैन कहा जाता है । विवाह के प्रसंग में इसे मातृपूजन के स्थान पर मदन पूजन कहना तर्क-संगत है ।

इस दिन मण्डपस्थित कलश गोठना, सिलपोहनी, देव-निमन्त्रण, पितर-निमन्त्रण, वर्जन तथा जैंती जेवाई के लोकाचार होते और तत्सम्बन्धी गीत गाये जाते है ।

(क) कलश गोंठना

पगरैतिन (बरुआ की माँ) अपनी ननद से कलश गोंठने के लिए निवेदन करती है और जब ननद कलश गोठने लगती है तो स्त्रियाँ प्रस्तुत गीत गाती है—

(२७) कलश गोंठने के गीत

आधे ताले हंसा बइठैं, आधे हंसिनि बइठइँ हो।
ये हो, तबहूँ न ताल सुहावन, एक रे केवल बिनु हो ॥१॥
आधे मँड़ए गोत बइठै, आधे मँ गोतिनि बइठइँ हो।
ये हो, तबहूँ न माँड़उ सुहावन, एक रे ननद बिनु हो ॥२॥
आवउ न ननद गोसाइनि मँड़उना मोरे बइठौ,
कलस मोरा गोठउ हो ॥३॥
—सेंदुरवा (मुल्तानपुर)

आधे सरोवर मे हंस बैठते है और आधे मे हंसिनियाँ बैठती है, तो भी एक कमल के बिना सरोवर सुशोभित नही होता ॥१॥

(उसी प्रकार) आधे मण्डप में समगोत्रीय पुरुष बैठते है और आधे मे समगोत्रीय नारियाँ बैठती है तो भी एक ननद के बिना मण्डप की शोभा नही होती ॥२॥

पगरैतिन अपनी नन्द (बरुआ की बुआ) से निवेदन करती है—

हे नन्द गोस्वामिनी (मालकिन) आओ, मेरे मण्डप में आसन ग्रहण करो और कलश गोठो ॥३॥

(ख) सिलपोहनी

सिलपोहनी के लिए सबसे पहिले पगरैतनि पति के साथ गाँठ जोड़कर बैठती है। वह सिल के ऊपर उड़द की दाल रखती है और फिर उसे लोढे से पीसती है, फिर पति भी पीसता है। इसके बाद समगोत्रीय अन्य दम्पति भी बारी-बारी से सिल पोहते है। इस अवसर पर प्रत्येक दम्पति के दाल पीसते समय सिलपोहनी का गीत गाया जाता है।

(२८) सिलपोहनी

केथुअइ कै तोरी सिलिया, केथुआ कै लोढन।
कवनी रानी सिलपोहनी, सरब गुन आगरि ॥१॥
सोनेन कै मोरी सिलिया, रूपेन कै लोढ़न।
भोजइतिन रनीवा सिलपोहनी, सरब गुन आगरि ॥
सिल पोहौ बहुअरि सिल पोही, अउरौ सुहाग सिलपोह ॥२॥
—दर्शन नगर (फैजाबाद)

एक वधू दूसरी वधू से पूछती है

किस धातु की तुम्हारी सिल है, किसका लोढा है और कौन सर्वगुण-अग्रणी सिल पोहने वाली (सुहागिन) है ? ॥१॥

दूसरी वधू उत्तर देती है—

सोने की मेरी सिल है, चाँदी का लोढा और भोजइतिन रानी सिल पोहने वाली हैं, जो सभी गुणो मे अग्रणी है। हे वधू ! सिल पोहो। सौभाग्य हेतु सिल पोहो ॥२॥

(ग) देव-निमन्त्रण

सिलपोहनी के उपरान्त देवी-देवताओ को निमन्त्रित किया जाता है। इसमे यद्यपि गद्यात्मक वाक्य ही होते हैं, किन्तु लोकगायिकाओं की अमर वाणी उन्हे भी गीतमय बना लेती है।

(२९) देउता नेउता

बरँभा, बिसनू ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥१॥
गउरी, गनेस ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥२॥
सुरुज देउता ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥३॥
बरुन देउता ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥४॥
अगिनि देउता ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥५॥

—सेंदुरवा (सुल्तानपुर)

हे ब्रह्मा और विष्णु जी ! आप लोग भी निमन्त्रण मे यथाक्रम आइएगा ॥१॥

हे गौरी और गणेश जी ! आप लोग भी निमन्त्रण मे क्रमानुसार आइएगा ॥२॥

हे सूर्य देवता (सविता) ! आप भी निमन्त्रण मे अपने क्रम से आइएगा ॥३॥

हे वरुण देव ! आप भी निमन्त्रित है, अपने क्रमानुसार आइएगा ॥४॥

हे अग्नि देव ! आप भी निमन्त्रण मे बहुत बार अपने क्रम से आइएगा ॥५॥

(घ) पितर-निमन्त्रण

देवताओ के निमन्त्रण के बाद पितरो को निमन्त्रण दिया जाता है। इसमे

वंश-वृक्ष के क्रम से परिवार के मृत पुरुषो (पूर्वजो) के नाम लिये जाते है और अन्तिम मृत पुरखे के बाद 'तुमहूँ ते अँबवा लाग' गाया जाता है।

(३०) पित्तर नेउता गीत

दिलीप बाबा ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥१॥
रघू बाबा ! तुमहूँ नेवाते बहु वसरी ते आयौ ॥२॥
आजा बाबा ! तुमहूँ ते अँबवा लाग ॥३॥
—जगदीश (सुलतानपुर)

दिलीप बाबा जी ! आप भी निमन्त्रण मे बहुत बार क्रम से आइएगा (आप सादर आमन्त्रित है) ॥१॥

रघु बाबा जी ! आप भी न्यौते में बहुशः क्रमानुसार आइएगा ॥२॥

अज बाबा जी ! आपकी अनुकम्पा से आम्र (फल) लगा हुआ है (वंश-परम्परा सुरक्षित चल रही है) ॥३॥

(ङ) वर्जना

यज्ञीय वातावरण को दिव्य एवं भव्य बनाने के लिए जहाँ एक ओर दैवी शक्तियों एव पितरो (पूर्वजो) का आह्वान किया जाता है, वहीं दूसरी ओर दैहिक, दैविक तथा भौतिक विघ्न-बाधाओं से वातावरण सुरक्षित रखने के लिए विघ्नकारको को भी आगाह कर दिया जाता है कि वे कम-से-कम उक्त मगल अवसर के प्रमुख तीन दिवस तो न ही आयें।

(३१) बरजई गीत

आँधी-पानी ! तुमहूँ नेवाते तीन दिवस जनि आयौ ॥१॥
माछी-कूछी ! तुमहूँ नेवाते तीन दिवस जनि आयौ ॥२॥
खई-लड़ाई ! तुमहूँ नेवाते तीन दिवस जनि आयौ ॥३॥
ओकी-बोकी ! तुमहूँ नेवाते तीन दिवस जनि आयौ ॥४॥
—चिलौली (रायबरेली)

यज्ञ-महोत्सवों मे अनेक प्रकार की विघ्न-बाधाओ के आने की संभावनाएँ रहती हैं, जिनके निवारणार्थ लोकगायिकाएँ उनसे निवेदन करती है—

हे आँधी-पानी ! आप भी निमन्त्रण (उत्सव) मे तीन दिन तक न आइएगा ॥१॥

हे मक्खी-मच्छर ! आप भी न्यौते में तीन दिनों तक न आइएगा ।२

हे झगड़ा-लड़ाई ! आप भी न्यौते मे तीन दिनो तक न आइएगा ।।३।।

हे उल्टी-कै आदि ! आप भी न्यौते मे तीन दिनों तक न आइएगा ।।४।।

चतुर्थ दिवस—यज्ञोपवीत

उपनयन संस्कार का प्रमुख तथा अन्तिम कृत्य यज्ञोपवीत है, जिसे अवधी भाषा मे 'जनेऊ' या 'जनउ' कहा जाता है। वास्तव मे इसी दिन पाँच या सात ब्राह्मणो द्वारा बरुआ (ब्रह्मचारी) को यज्ञोपवीत पहनाया जाता है, इसीलिए इसका महत्त्व अधिक है।

इस दिन भी प्रात.काल से ही कई लोकाचार सम्पादित होने लगते है। यथा—

(क) बरुआ जेवाना

प्रात काल ८ बजे से ११ बजे तक पास-पड़ोस के (प्राय: समगोत्रीय या स्वकुलीय) ब्रह्मचारी बालकों के साथ बरुआ को भोजन करने की छूट दी जाती है। एक साथ एक थाल मे भोजन करने का यह अन्तिम अवसर होता है। यज्ञोपवीत के उपरान्त एक ही थाल मे साथ-साथ भोजन करना वर्जित रहता है, क्योंकि तब उमे अधिकाधिक पवित्रता एवं शुद्धता का ध्यान रखना पड़ता है। बालको के एक साथ जीमते समय भी लोकगायिकाएं बड़े स्नेह से लोकगीत गाती हैं, जिसे 'बरुआ जेंवाई' कहते है।

(३२) बरुआ जेंवाई

को मोरे जइहै खरिकवन, भईंसी दुहइहै।
को मोरे रिंधिहै भात तौ बरुआ जेवावई ।।१।।
बाबा मोरे जइहै खरिकवन, भईंसी दुहइहै।
आजी रानी रिंधिहै भात तौ बरुआ जेवावई ।।२।।

ब्रह्मचारी कहता है—"कौन मेरे भैंसें दुहाने के लिए खरिका (पशुशाला) जायगा और कौन ब्रह्मचारियों को भात रीधेगा ? ।।१।।

फिर उसके मन में विचार आता है। "मेरे बाबाजी भैंसे दुहाने के लि गोशाला जायेंगे और मेरी आजी रानी ब्रह्मचारियो के लिए भात रीधेंगी एवं उन्हें खिलायेंगी ।।२।।

ख) मातन की भीखी

सर्वप्रथम ब्रह्मचारी देवी माता अन्नपूर्णा से भिक्षा की याचना करता है। इसी को लक्ष्य कर नारियाँ प्रस्तुत लोकगीत गा उठती हैं।

(३३) मातन की भीखी का गीत

भवन में ठाढे कवने रामा, हिरि-फिरि चितवईं।
कहाँ गइउ माता भवानी, भिच्छा मोहिं देतिउ ॥१॥
भिच्छा दे माता भवानी अउर असीस दे।
हम तोरा बरुआ बलकवा, भिच्छा दे माता ॥२॥

—सँदुरवा (सुलतानपुर)

भवन मे अमुक नामक ब्रह्मचारी (बरुआ) खड़ा है और इधर-उधर देख रहा है। वह कहता है—"माता भवानी! आप कहाँ गईं, मुझे भिक्षान्न प्रदान करतीं ॥१॥

हे माता जगज्जननि! आप भिक्षा के साथ-साथ मुझे आशीर्वाद भी दें। मैं आपका ब्रह्मचारी (ब्रह्मचर्य व्रतशील) बालक हूँ। हे माता! मुझे भिक्षा दीजिए ॥२॥"

(ग) बरुआ नहलाना

ब्रह्मचारी समुदाय के सम्मिलित भोजन के पश्चात् बरुआ को स्नान कराया जाता है। यह एक प्रमुख कृत्य है, क्योंकि यज्ञोपवीत धारण करने से पूर्व ब्रह्मचारी का शरीर और मन शुद्ध होना आवश्यक होता है।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—चारों भाइयों का यज्ञोपवीत हुआ एवं राजा दशरथ तथा उनकी रानियों ने हर्षोल्लासपूर्वक नेग दिया। प्रस्तुत लोकगीत मे इसका वर्णन श्रोतव्य है।

(३४) बरुआ नहान गीत

के तौ सगरा खनावा औ घाट बँधावा।
केकर भरइँ कहार, बरुआ नहुवावइँ ॥१॥
राजा दसरथ सगरा खनावा औ घाट बँधावा।
केकही के भरइँ कहार, बरुआ नहुवावइँ ॥२॥
केन डावा चुटकी मुँदरिया, केन डावइँ रूप।
केन डावइँ रतन-पदारथ, भरिगा है सूप ॥३॥

कउसिल्या डावा चुटकी मुनरिया, सुमित्ना डावइ रूप।
केकही डावइँ रतन-पदारथ, भरिगा है सूप ॥४॥

—कस्तूरीपुर (सुल्तानपुर)

किसने सागर खुदवाया और घाट बँधवाया है। किसके कहार पानी भरते और बरुआ नहलाते है ॥१॥

राजा दशरथ ने सागर खुदवाया और घाट बँधवाया है। रानी कैकेयी के कहार पानी भरते और बरुआ को स्नान कराते है ॥२॥

किसने चुटकी मुँदरी (करमुद्रिका) दान हेतु डाला है, कौन चादी का रुपया और कौन रत्न-पदार्थ देता है, जिससे सूप भर गया? ॥३॥

रानी कौशल्या ने करमुद्रिका (अँगूठी) डाला तथा सुमित्ना रुपये एवं कैकेयी रत्न-पदार्थ न्यौछावर देती हैं, जिससे सूप भर गया है ॥४॥

(घ) यज्ञोपवीत धारण

ब्रह्मचारी स्नान कर चुकता है तो उसे यज्ञोपवीत धारण कराने के लिए पुरोहित काष्ठासन देता एव चन्दन का तिलक लगाता है। तदुपरान्त आचार्य तथा चार या छः अन्य मान्य अथवा विप्र उसे प्रस्तुत मन्त्रोच्चार पूर्वक उपवीत पहनाते है—

ॐ यज्ञोपवीत परम पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहज पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुञ्च शुभ्र यज्ञोपवीत बलमस्तु तेज. ॥

इसी पुनीत अवसर पर लोकगायिकाएँ समयानुकूल लोकगीत गाती है।

(३५) जनेऊ गीत

हाथ लिहे दोनकी तौ बरुआ पुकारै।
अस केहू आजा हमार जनउ पहिरावै ॥१॥
सभवा से ऊठे हैं अजवा औ उठि बोले।
हम नाती आजा तोहार, जनउ पहिरउबै ॥२॥
हाथ लिहे दोनकी तौ बरुआ पुकारै।
अस केहू दादा हमार, जनउ पहिरावै ॥३॥

(ख) मातन की भीखी

सर्वप्रथम ब्रह्मचारी देवी माता अन्नपूर्णा से भिक्षा की याचना करता है। इसी को लक्ष्य कर नारियाँ प्रस्तुत लोकगीत गा उठती हैं।

(३३) मातन की भीखी का गीत

भवन मँ ठाढ़े कवने रामा, हिरि-फिरि चितवइँ।
कहाँ गइउ माता भवानी, भिच्छा मोहि देतिउ ॥१॥
भिच्छा दे माता भवानी अउर असीस दे।
हम तोरा बरुआ बलकवा, भिच्छा दे माता ॥२॥

—सँडुरवा (सुलतानपुर)

भवन में अमुक नामक ब्रह्मचारी (बरुआ) खड़ा है और इधर-उधर देख रहा है। वह कहता है—"माता भवानी ! आप कहाँ गईं, मुझे भिक्षान्न प्रदान करती ॥१॥

हे माता जगज्जननि ! आप भिक्षा के साथ-साथ मुझे आशीर्वाद भी दें। मैं आपका ब्रह्मचारी (ब्रह्मचर्य व्रतशील) बालक हूँ। हे माता ! मुझे भिक्षा दीजिए ॥२॥"

(ग) बरुआ नहलाना

ब्रह्मचारी समुदाय के सम्मिलित भोजन के पश्चात् बरुआ को स्नान कराया जाता है। यह एक प्रमुख कृत्य है, क्योंकि यज्ञोपवीत धारण करने से पूर्व ब्रह्मचारी का शरीर और मन शुद्ध होना आवश्यक होता है।

राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न—चारों भाइयों का यज्ञोपवीत हुआ एवं राजा दशरथ तथा उनकी रानियो ने हर्षोल्लासपूर्वक नेग किया। प्रस्तुत लोकगीत मे इसका वर्णन श्रोतव्य है।

(३४) बरुआ नहान गीत

के तौ सगरा खनावा औ घाट बँधावा।
केकर भरइँ कहार, बरुआ नहुवावइँ ॥१॥
राजा दसरथ सगरा खनावा औ घाट बँधावा।
केकही के भरइँ कहार, बरुआ नहुवावइँ ॥२॥
केन डावा चुटकी मुँदरिया, केन डावइँ रूप।
केन डावइँ रतन-पदारथ, भरिगा है सूप ॥३॥

कउसिल्या डावा चुटकी मुँनरिया, सुमिन्त्रा डावइँ रूप ।
केकही डावइँ रतन-पदारथ, भरिगा है सूप ।।४।।

—कस्तूरीपुर (सुल्तानपुर)

किसने सागर खुदवाया और घाट बँधवाया है। किसके कहार पानी भरते और बरुआ नहलाते है ।।१।।

राजा दशरथ ने सागर खुदवाया और घाट बँधवाया है। रानी कैकेयी के कहार पानी भरते और बरुआ को स्नान कराते है ।।२।।

किसने चुटकी मुँदरी (करमुद्रिका) दान हेतु डाला है, कौन चांदी का रुपया और कौन रत्न-पदार्थ देता है, जिससे सूप भर गया ? ।।३।।

रानी कौशल्या ने करमुद्रिका (अँगूठी) डाला तथा सुमित्रा रुपये एवं कैकेयी रत्न-पदार्थ न्यौछावर देती है, जिससे सूप भर गया है ।।४।।

(घ) यज्ञोपवीत धारण

ब्रह्मचारी स्नान कर चुकता है तो उसे यज्ञोपवीत धारण कराने के लिए पुरोहित काष्ठासन देता एव चन्दन का तिलक लगाता है। तदुपरान्त आचार्य तथा चार या छः अन्य मान्य अथवा विप्र उसे प्रस्तुत मन्त्रोच्चार पूर्वक उपवीत पहनाते है—

ॐ यज्ञोपवीतं परम पवित्र प्रजापतेर्यत् सहज पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्य प्रतिमुञ्च शुभ्र यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेज. ।।

इसी पुनीत अवसर पर लोकगायिकाएँ समयानुकूल लोकगीत गाती हैं ।

(३५) जनेऊ गीत

हाथ लिहे दोनकी तौ बरुआ पुकारै ।
अस केहू आजा हमार जनउ पहिरावै ।।१।।
सभवा से ऊठे है अजबा औ उठि बोले ।
हम नाती आजा तोहार, जनउ पहिरउबै ।।२।।
हाथ लिहे दोनकी तौ बरुआ पुकारै ।
अस केहू दादा हमार, जनउ पहिरावै ।।३।।

सभवा से ऊठे हैं दादा औ उठि बोले।
हम बेटा दादा तोहार, जनउ पहिरउबै ॥४॥

टिप्पणी—इसी प्रकार बप्पा, काका, भइया, फूफा, जीजा, मामा आदि को लगाकर गीत गाया जाता है।

—पूरे गंगा मिसिर (सुल्तानपुर)

हाथ मे दोनकी (पलाश-पत्र का छोटा बना पात्र) लिए हुए ब्रह्मचारी पुकारता है—"ऐसा हमारा कोई आजा (पितामह, बाबा) है, जो मुझे यज्ञोपवीत धारण कराये ?" ॥१॥

सभा से पितामह उठे और बोले—"हे नाती ! मै तुम्हारा पितामह हूँ; मैं तुम्हे यज्ञोपवीत पहनाऊँगा ॥२॥

इसी प्रकार दादा, पिता, चाचा आदि ने भी आश्वस्त किया।

(ङ) मान्यों के चरण धोना

यज्ञोपवीत-धारण के उपरान्त बरुआ के समीप आसन पर क्रम से मान्य सम्बन्धी आते एवं बैठते है। तब सर्वप्रथम बरुआ की माँ और फिर क्रमशः घर-परिवार की अन्य स्त्रियाँ आती एवं उनके चरण धोकर प्रणाम करती एव दक्षिणा देती हैं। इस अवसर पर लोकगायिकाएँ व उपस्थित नारियाँ हर बार सम्बन्धित स्त्री के पति का नाम या पद बोलते हुए उस स्त्री का पद भी बोलती और गाती है।

(३६) मान-दान गीत

लाऊ न गंगा कै नीर तौ पाँउ पखारउ।
देत कवने रामा दान, चरन छुवइँ रानी ॥१॥
मन्त्रिन हाथ पसारा, बहुत कुछ पाउब।
पउबै मैं धोती-अँगउछा औ रतन पदार्थ ॥२॥

—सेंदुरवा (सुल्तानपुर)

एक सखी दूसरी सखी से कहती है—

गंगाजी का जल लाओ और पद-प्रक्षालन करो (पाँव पखारो) अमुक सज्जन (संबधित स्त्री के पति का नाम या सम्बन्ध-पद) दान दे रहे हैं और रानी (दानदाता व्यक्ति की पत्नी) चरण स्पर्श कर रही है ॥१॥

मा यो ने इस आशा से हाथ फैलाया कि बहुत कुछ प ऊगा धोती अगौछा ौर रत्न पदाथ २।

(च) भीखी (भिक्षा)

ब्रह्मचारी पलाश-दण्ड सहित पलाश-पत्र-निर्मित भिक्षा-पात्र (बड़ा दोना) लेकर खडा होता है और उसकी माँ, आजी, दादी, चाची, भाभी, मामी, मौसी, बुआ, बहिन आदि क्रमश आती एवं उस दोने मे भिक्षान्न (सम्प्रति आटा) डालती है। प्रत्येक स्त्री के भीखी डालते समय अन्य स्त्रियाँ बरुआ से सम्बन्ध द्योतक पद को लगाते हुए प्रस्तुत गीत गाती है।

(३७) भीखी गीत

मँड़ए मँ ठाढ़ि रामजी, हिरि-फिरि चितवइँ।
कहाँ गईं माया हमारि, भीखी लै डारइँ ॥१॥
छिन यक बेलँभउ रे बरुआ, तौ पलक नेवारउ।
कइ लिअउँ सोरहौ सिंगार, भीखी लै डारउँ ॥२॥

—पूरे भोजा तेवारी (सुल्तानपुर)

मण्डप मे खड़े हुए रामजी इधर-उधर देख रहे है। मानो वे कह रहे है—"मेरी माता जी कहाँ गईं, भिक्षा लेकर मेरे भिक्षा-पात्र में डाले" ॥१॥

माँ कहती है—हे ब्रह्मचारी! एक क्षण भर का विलम्ब बरदाश्त करो और पलक नेवारो। मैं सोलहो शृंगार कर लूँ (तो आऊँ और) भिक्षा लेकर (तुम्हारे भिक्षा-पात्र मे) डालूँ ॥२॥

टिप्पणी—यहाँ इस गीत मे केवल माया (माता) को लगाकर गाया है। इसी प्रकार माया के स्थान पर क्रमश अन्य स्त्रियों के पद को लगाकर गाया जाता है।

(छ) नाखुर

भीखी पड जाने के उपरान्त बरुआ अपने पीठासन (पीढा या पीढी) पर बैठ जाता है और नापित-पत्नी उसके नख काटती है, जिसका उसे नेग मिलता है। उसे अवधी मे नाखुर या नहछू कहते है। नाखुर के समय स्त्रियाँ नहछू गाती हैं।

(३८) नहछू

घर-घर फिरइ नउनिया तौ गोतिनी बलावइ।
आज रामजी कै नाखुर, सब कोऊ आवइ ॥१॥

कोऊ डारा चुटकी मुँदरिया तौ कोऊ डारा रूप ।
कोऊ डारा रतन-पदारथ, भरिगा है सूप ।।२।।
कौसिल्या डारा चुटकी मुँदरिया, सुमित्रा डारा रूप ।
केकही डारा रतन-पदारथ, भरिगा है सूप ।।३।।
—दर्शन नगर (फैजाबाद)

नापित-पत्नी घर-घर फिर रही है और गोत्रीय स्त्रियों को बुलावा दे रही है—"आज रामजी का नाखुर है, सब कोई आये ।।१।।

सब लोग आँगन मे आकर एकत्र हो गये । फिर तो किसी ने कर मुद्रिका डाला, किसी ने रूप और किसी ने रत्न-पदार्थ डाले, जिससे (नापित-पत्नी का) सूप भर गया ।।२।।

रानी कौशल्या ने अँगूठी डाला, सुमित्रा ने रूप और कैकेयी ने रत्न-पदार्थ डाले, जिससे सूप भर गया ।।३।।

(ज) काशी-गमन

नहछू के उपरान्त जैसे ही ब्रह्मचारी विद्याध्ययन हेतु भारतीय शिक्षा और संस्कृति के प्रसिद्ध केन्द्र काशी को जाने के लिए उद्यत होता है और दो-चार पग चलता है कि उसे वही पढ़ने के लिए रोक लिया जाता है, जिसका वर्णन प्रस्तुत लोकगीत मे है ।

(३८) काशी-गमन

देउ न मइया मोरी भिखिया अउर असिमिया ।
कासी-बनारस जाब, हुअँइ बेद पढबै ।।१।।
काहे जइहौ पूता कासी अउर बनारस ।
अजवा तुम्हारि बेदवार, घरहिं बेद पढिहौ ।।२।।
—सुकुल बजार (सुलतानपुर)

ब्रह्मचारी अपनी माताजी से निवेदन करता है—"हे माताजी ! मुझे भिक्षा तथा आशीर्वाद दीजिए, मैं वेदाध्ययन के लिए काशी-वाराणसी जाऊँगा ।।१।।

माता कहती है—"हे पुत्र ! काशी-बनारस क्यो जाओगे, तुम्हारे आजा (बाबा) वेदज्ञ पंडित हैं, उन्हीं से घर ही पर वेद पढ़ना ।।२।।

टिप्पणी—प्राचीन काल में ब्रह्मचारी वेदाध्ययन के लिए प्रायः काशी जाया

करते थे किन्तु कभी-कभी पास-पड़ोस मे या किसी निकट सम्बन्धी के वेदज्ञ होने पर माताएँ ब्रह्मचारी को घर ही पर पढ़ने के लिए रोक लिया करती थी और फिर वह घर पर ही अध्ययन करता था।

(११) विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा

मुनि विश्वामित्र के यज्ञ मे ताड़का, सुबाहु, मारीच आदि राक्षस प्रायः विघ्न डालते रहते थे, जिससे परेशान होकर विश्वामित्रजी राजा दशरथ के पास पहुँचे और उनसे यज्ञरक्षार्थ राम-लक्ष्मण को माँगकर अपने साथ ले गये, जिससे उनका विशाल यज्ञायोजन सफल हो गया। प्रस्तुत लोकगीत मे इसी का वर्णन है।

(४८) कजरी

मुनि के साथ चले दोऊ भाई, धनुहा-बान उठाई ना।
पहिले जाय ताड़का मारी, गिरी धरनि भहराई ना ॥१॥
फिन मारीच पै बान चलावा, भागा प्रान बचाई ना।
बड़े-बड़े राकस मारि गिराये, जग्गि सुफल करवाई ना ॥२॥
—कादीपुर (सुलतानपुर)

मुनि विश्वामित्र के साथ दोनो भाई (राम-लक्ष्मण) धनुष-बाण उठाकर चल पड़े। उन्होंने पहले जाकर ताड़का नामक राक्षसी को मारा, जो धरणी पर भहरा कर गिर पड़ी ॥१॥

फिर मारीच पर बाण चलाया, जो प्राण बचाकर भाग गया। तब बड़े-बड़े राक्षसों को मार गिराया और इस प्रकार विश्वामित्र जी के यज्ञ को सफल कराया ॥२॥

(१२) विवाह संस्कार (वर पक्ष)

(क) तिलक

वर के तिलक के अवसर पर कन्या पक्ष से लोग आते है, जो अपने साथ फल, मिष्ठान्नादि लाते है। कन्या का भाई या उसके अभाव मे घर का कोई अन्य व्यक्ति वर का तिलक करता है। इसके उपरान्त विवाह सुनिश्चित हो जाता है।

तिलक के समय नारियाँ तत्सम्बन्धी गीत गाती है। यहाँ एक गीत प्रस्तुत है।

(४१) फलदान

सोने के खेरउवाँ कवने रामा, आजी के महल गये।
आजी! भरि मुख देतू असीस, चउक चढि बइठौं ॥१॥
अमवा की नाईं नाती बउरउ, अमिलि अस फर लिऔ।
नाती! दुबिया की नाईं छइलाउ, चँदन अस महकौ ॥२॥

—दर्शन नगर (फैजाबाद)

स्वर्ण-पादुकाएँ पहन कर अमुक राम आजी के महल गये। वहाँ उनसे निवेदन किया—"हे आजी! आप पूरे मन से अपने मुख से आशीर्वाद दीजिए तो मैं चौक पर चढ़कर बैठूँ ॥१॥

आजी ने प्रसन्न होकर आशीर्वाद दिया—"हे नाती! आम्रवृक्ष की भाँति बौरयुक्त होओ, इमली की भाँति फलो, दूर्वादल की भाँति चारो ओर फैलो एवं चदन की भाँति सुगन्ध विकीर्ण करो" ॥२॥

टिप्पणी—बौरने में मादकता, फलने मे सन्तति सम्पन्नता, छैलाने मे उत्साह एवं महकने मे यशस्वी होने का भाव निहित है।

(ख) विवाह (वर)

तिलक के उपरान्त विवाह सम्बन्धी तैयारियाँ होने लगती हैं एवं उपनयन की भाँति मनछुहा-धनछुहा, तेल, मैन आदि के लोकाचार होते है। फिर विवाह का दिन आता है। उस दिन भी वर-पक्ष तथा कन्या-पक्ष में विविध लोकाचार होते है, जिसमे लोकगीत की प्रधानता रहती है।

प्रस्तुत विवाह गीत (बिआह) वर-पक्ष से सम्बन्धित है।

(४२) बिआह गीत

धनि-धनि भागि अरे बाबा कवन रामा,
सोने कै मउर धराइ के नाती ब्याहन जइहै।
धनि-धनि भागि अरे आजी कवनि देई,
सोने कै टकवा उतारि के नाती ब्याहन पठवै ॥१॥

धनि-धनि भागि अरे बप्पा कवन रामा,
नीकेन घोड़ सजाइ के पूता ब्याहन जइहैं।
धनि-धनि भागि अरे अम्मा कवनि देई,
मोतियन अरती उतारि के पूता ब्याहन पठवै ।।२।।
धनि-धनि भागि अरे फूफा कवन रामा,
अच्छी-सी पाग सँवारि के बेटा ब्याहन जइहैं।
धनि-धनि भागि अरे फूफू कवनि रानी,
भल नीक कजरा लगाइ के बेटा ब्याहन पठवै ।।३।।
धनि-धनि भागि अरे जीजा कवन रामा,
अच्छा-सा चन्दन सँवारि के सार ब्याहन जइहैं।
धनि-धनि भागि अरे बहिनि कवनि रानी,
राई औ लोन उतारि के भाइ ब्याहन पठवै ।।४।।

पितामह का भाग्य धन्य है कि वे स्वर्णिम मौर धारण कर नाती का विवाह कराने के लिए (उसके साथ) जायेंगे। पितामही का भाग्य धन्य है कि वे सोने का टका उतार कर अपने नाती को विवाह के लिए भेज रही हैं ।।१।।

पिता का भाग्य धन्य है कि वे अच्छे घोडे को सुसज्जित कर पुत्र का विवाह करने के लिए जायेंगे। माता का भाग्य धन्य है कि वे मोतियों से आरती उतार कर पुत्र को विवाह के लिए भेज रही है ।।२।।

फूफा का भाग्य धन्य है कि वे अच्छी-सी पगडी से सजाकर बेटे (यहाँ भतीजे से अभिप्राय है) को ब्याहने जायेंगे। फूफू का भाग्य धन्य है कि वे मनोहर कज्जल लगाकर बेटे (यहाँ भतीजे) को विवाह करने के लिए भेज रही है ।।३।।

बहनोई के भाग्य धन्य है कि अच्छे-से चन्दन से सवार कर साले को ब्याहने जायेंगे। बहिन रानी के धन्य भाग्य है कि वे राई-लोन उतार कर भाई को विवाह के लिए भेज रही हैं ।।४।।

(ग) पगिया बाँधना

विवाह गीत (बिआह) के बाद फूफा वर के सिर पर पाग या पगडी (साफा) बाँधता हैं, जिसे अवधी भाषा में पगिया कहते है और नारियाँ इस अवसर पर पगिया गीत गाती हैं।

(४३) पगिया (गीत)

बलाऊ दुलहे के फूफा का, चुनि बाँधै दुलरुआ के पाग हो।
बोले दुलरुआ के फूफा जिउ, मैं बाँधौ दुलरुआ के पाग हो।
बलाऊ दुलहे के बाबा का, लावैं माती हथिनिया छोड़ाइ हो।
बलाऊ दुलहे की आजी का, लावैं मॉड़ौ माँ मोहर गोहाइ हो।

—जयसिंह पुर (सुल्तानपुर)

टिप्पणी—इसी प्रकार दूल्हे के दादा-दादी, बप्पा-अम्मा, चाचा-चाची आदि को गाया जाता है।

लोगो ने प्रस्ताव किया—"वर के फूफा को बुलाओ, वे चुनकर दुलारे वर के साफा बाँधे।"

वर के फूफाजी बोले—"मै प्रिय वर के साफा बाँधूगा, किन्तु दूल्हे के बाबा को बुलाइए, वे मुझे नेग मे देने के लिए मदमत्त हस्तिनी को खूँटे से छुडा कर लायें और दूल्हे की आजी को बुलाइए वे मण्डप मे मुहर गुहाकर (मुझे देने के लिए) लायें।

(घ) काजल लगाना

फूफा जब पगडी बाँध चुकता है तो फूफू की बारी आती है। वह बडे स्नेह से अपने भतीजे के नेत्रों मे कज्जल लगाती है और अन्य महिलाएँ उसे लक्ष्य कर गीत गाती है।

(४४) काजर (गीत)

बूआ तौ बसइँ सजन घर, आवइँ बिरन घर।
कजरा पारि लइ आवइँ तौ नयन सँवारइँ ॥१॥
बड़ी-बड़ी अँखिया ललन की, कजर भल सोहइ।
देति मुघरि एक नारि, अँगुरिया न डोलइ ॥२॥

—लालगंज (रायबरेली)

फूफू तो पति के घर में वास करती हैं और भाई के घर आती है। वे साथ मे कज्जल पार कर ले आती हैं और अपने भतीजे के नेत्रों को सँवारती हैं ॥१॥

लाल की बड़ी-बडी आँखें हैं, उनमे कज्जल भली शोभा देता है। वह ऐसे

आहिस्ता-आहिस्ता काजल लगाती है, जैसे जान पड़ता है कि उसकी अंगुली ही नहीं चल रही है (वह अत्यधिक सावधानी से धीरे-धीरे काजल लगा रही है।) ॥२॥

(ङ) बरात

जब दूल्हा पालकी (अवधी मे डोला या मिआना) मे बैठ जाता है और बरात कन्यागृह को प्रयाण करती है तो लोकवधुएँ आनन्द-सागर मे निमग्न हो गा उठती है—

(४५) बरात पयान (गीत)

साजौ-साजौ होइ रे, सग साथी तौ केहू न होइ रे।
साथी तौ होइहै दुर्गा मइया, जिनकर किरिन बिआहन जाय रे ॥१॥
साजौ-साजौ होइ रे, संग साथी तौ केहू न होइ रे।
साथी तौ होइहै महादेव बाबा, जिनकर बलक बिआहन जाय रे ॥२॥
साजौ-साजौ होइ रे, सग साथी तौ केहू न होइ रे।
साथी तो होइहैं बाबा रामा, जिनकर नाती बिआहन जाय रे ॥३॥

टिप्पणी—इसी प्रकार विभिन्न पदो को लगाकर गाया जाता है।

—सेदुरवा (सुलतान पुर)

साज-सज्जा की बात हो रही है, किन्तु दूल्हे के साथ जाने के लिए कोई साथी नहीं होता। साथी तो दुर्गा माता होंगी, जिनका सेवक विवाह करने के लिए जा रहा है ॥१॥

साथी तो महादेव बाबा होंगे, जिनका बालक विवाह करने के लिए जा रहा है ॥२॥

साथी तो वर के पितामह होंगे, जिनका पौत्र विवाह के लिए जा रहा है ॥३॥

(च) परछन और माँ का दूध पिलाना

जब पालकी मे बैठकर दूल्हा गांव से बाहर निकलता है तो उसकी माता पालकी रुकवाकर उसे अन्तिम बार अपने स्तन से दूध पिलाती एवं आरती उतारती है। अन्य स्त्रियाँ इस समय एक मार्मिक लोकगीत गाती हैं, जिससे पुत्र को माता के प्रति कर्त्तव्य-पालन की सीख मिलती है।

(४६) दूध पिआउब (गीत)

तू तौ चलेउ पूता गउरी बिआहन,
मोरे दुधवा कै दाम दिहे जाउ ।।१।।
गइया दूध मोल, भईंसिया दूध मोल,
माई, तोंहरा तौ दूध अनमोल रे ।।२।।
सरग तरइया मइया के दहु गिनि है,
तोहरे दुधवा उरिन ना होब रे ।।३।।

—दर्शन नगर (फैजाबाद)

बरमाता पुत्र से कहती है—"हे पुत्र ! तुम तो गौरी को ब्याहने के लिए चल पड़े हो, किन्तु इससे पूर्व मेरे दूध का दाम देते जाओ ।।१।।

पुत्र विनीत भाव मे उत्तर देता है—"गाय के दूध का मोल होता है, भैंस के दूध का भी मोल-तोल किया जाता है, किन्तु हे माता ! आपका दूध तो अनमोल है (जिसका मूल्य कौन दे सकता है ।) ।।२।।

आकाश के तारो की गणना भले ही कोई कर ले, किन्तु मैं आपके दुग्ध से उऋण नही होऊँगा (मैं सदैव आपका ऋणी रहूँगा, कृतज्ञ बना रहूँगा)" ।।३।।

(छ) कारी-पेरी बदरिया (काली-भूरी बदली)

बरात बिदा करते समय यह आशंका बनी रहती है कि कहीं मार्ग में पानी न बरसने लगे, जिससे दूल्हा भीग जायगा एवं व्यवस्था बिगड़ जायगी । इसीलिए नारियाँ कृष्णवर्णी घटा से निवेदन करती है कि वर्षा मत करना । यथा—

(४७) कारी-पेरी बदरिया गीत

अरे-अरे कारी बदरिया, ओनय, जिनि बरस्यो,
झिमिकि जिनि बरस्यो ।
अरे लीले-लीले घोड़वा दुलहे रामा, उन्है जिनि भेयो ।।१।।
अरे-अरे कारी बदरिया, ओनय जिनि बरस्यो ।
अरे लीले-लीले घोड़वा सब बरतिअन. उन्हैं जिनि भेयो ।।२।।

—सदर बजार (जौनपुर)

हे काली बदली ! घिर कर मत बरसना, रह-रह कर मत बरसना । भव्य कृष्णवर्णी उत्तम वस्त्र पर दूल्हा राम बैठ हुए हैं उन्हें मत भिगोना । १

हे काली बदली ! आप घिर कर-झुककर मत बरसना। कृष्णवर्ण के उत्तम घोड़ों पर सब बराती बैठे हुए है, उन्हें मत भिगोना ॥२॥

(ज) भुइयाँ भवानी

दूल्हे को बिदा कर वरपक्षीय स्त्रियाँ तत्स्थानीय (दूल्हे की ससुराल के) देवी-देवताओं से भी वर के कुशल-क्षेम के लिए प्रार्थना करती है, जैसा कि प्रस्तुत लोक-गीत से स्पष्ट है।

(४८) भुइयाँ-भवानी का गीत

वही रे देस की भुइयाँ-भवानी,
नाउँ न जानउँ तोहार।
अपन दुलरुआ मैं ब्याहन पठयो,
बार न बाँका जाय॥

—जगदीशपुर (सुल्तानपुर)

हे उस स्थान की भूदेवियो ! मै आपका नाम नहीं जानती। मैंने अपना दुलारा (पुत्र) विवाह करने के लिए भेजा है, उसका बाल बाँका न होने पाये (उसके योग-क्षेम का ध्यान रखिएगा, जिससे उसका कोई अनिष्ट न हो)।

(झ) बरात बिदा करके लौटते समय

जब महिलाएँ दूल्हे और बरात को विदा कर देती हैं तो गीत गाते हुए ही घर को लौटती है। उस समय उल्लासमय वातावरण अपने अंक मे मादकता को समेटे रहता है। एक गीत इस प्रकार है—

(४९) बँदरा

आजु बने कै ब्याहु रचा, मोती झालरि लागी ॥टेक॥
आगे डोला उनके बाबा कै, पाछे आजी कै डोला।
बीच डोला सहिजादे कै, मोती झालरि लागी ॥१॥
आगे डोला उनके दादा कै, पाछे दादी कै डोला।
बीच डोला सहिजादे कै, मोती झालरि लागी ॥२॥

—इन्हौना (रायबरेली)

टिप्पणी—इसी प्रकार दादा-दादी, बप्पा-अम्मा, काका-काकी, भैया-भौजी आदि को गाया जाता है।

आज बन्ने (दूल्हे) का ब्याह रचा है, मोतियो की झालरें लगी हुई है। आगे दूल्हे के बाबा का डोला है, पीछे आजी का डोला और उनके मध्य मे शाहजादे (कुँवर) का डोला है, जिनमें मोतियो की झालरें लगी हुई है ।।१।।

आगे उनके (दूल्हे के) दादा का डोला है, पीछे दादी का और उनके बीच में कुमार का डोला है; मोतियों की झालरें लगी हुई है ।।२।।

१३. विवाह संस्कार (कन्या पक्ष)

जिस प्रकार वर पक्ष में मनछुहा-धनछुहा, तेल, मैन तथा विवाह के दिन के लोकाचार होते हैं, उसी प्रकार किंचित् परिवर्तन के साथ कन्या-पक्ष में भी सम्पादित किये जाते है और उमंगपूर्वक महिलाएँ लोकगीत गाती है।

(क) राम-लक्ष्मण का नगर-भ्रमण

बरीच्छा के बाद लग्न होती है, जिसमे विवाह की भूमिका के रूप में जो लोकगीत गाये जाते हैं, उन्हे मैथिली मे लग्न, लगन या लगुन के गीत कहते है। यहाँ एक गीत प्रस्तुत है।

(५०) लग्न गीत

मिथिला नगरिया की चिकनी डगरिया,
सखि धीरे-धीरे।
चले जात दुनु भइया, सखि धीरे-धीरे ।।टेक।।
दाये-बायेगोर-स्याम,
ठुमुक-ठुमुक धरत पाँव।
बिहरत सहर डगरिया, सखि धीरे-धीरे ।।१।।
निरखत धवल धाम,
हरखि कहि कहि ललाम।
चितवत कलस अटरिया, सखि धीरे-धीरे ।।२।।
देखन महं देव-जोग,
हँसि-हँसि कहत लोग।
जादू भरी रे नजरिया सखि धीरे-धीरे ३

मिथिला

मति ले दोनो भाई नगर देखने गये । उन्हे देखकर एक सखी दूसरी सखी से कहती है—

हे सखी ! मिथिला नगर के चिकने पथ पर दोनों भाई धीरे-धीरे चले जा रहे हैं ।

दाये-बाये गौर श्याम (लक्ष्मण राम) रुक-रुक कर पग रखते है और नगर के राजपथ पर धीरे-धीरे विचर रहे है ॥१॥

वे हर्षपूर्वक धवल प्रासादों की भव्यता का बखान करते हुए उनका निरीक्षण कर रहे है और शनैः-शनै अट्टालिकाओं के कलश देख रहे है ॥२॥

वे देखने मे देवताओ के समान है और उनकी नजरे जादूभरी है । ऐसा लोग हँस-हँस कर धीरे-धीरे कह रहे है ॥३॥

(ख) सीता-स्वयंवर

राजा जनक ने सीता-स्वयंवर के साथ एक शर्त भी रखी थी कि जो कोई शिव-धनुष को उठा लेगा, राजकुमारी सीता उसी का वरण करेंगी । राम ने धनुष उठाकर उसे तोड दिया । प्रस्तुत लोकगीत मे इसी का वर्णन है ।

(५१) फाग-चौताल

सखि, ये दोऊ राजकिसोर, समाज मे आये ॥टेक॥
राजा जनक परन यक ठाना, धरुना देत धराये ।
देस-देस के भूपति आये, धरुना नहि सकत उठाये ॥१॥
उठे राम गुरु अग्या लइके, धरुना लेत उठाये ।
धरत, उठावत केऊ नहि देखत, छनहि मे तोरि बहाये ॥२॥
—ज्ञानपुर (वाराणसी)

एक सखी दूसरी सखी से कहती है—

हे सखी ! देखो, ये दोनो राजकिशोर समाज में आ गये है । राजा जनक ने एक प्रण ठान रखा है और धनुष रखवा दिया है । देश-देश के राजा आये, किन्तु नही उठा सके ॥१॥

रामचन्द्रजी गुरु विश्वामित्र की आज्ञा लेकर उठे और धनुष को उठा लिया।

उन्हे धनुष को पकडते, उठाते किसी ने नही देखा और उन्होंने क्षण भर मे ही उसे तोड़ दिया ।।२।।

(ग) जयमाल

जब राम ने शिव-धनुष को उठाकर तोड़ दिया तो सीता ने उन्हे जयमाला पहना दी । लोकगायक उसी का वर्णन करते हुए कहता है—

(५२) बहका

उर सोहै राम के जैमाला ।।टेक।।
कउने बरन सिरी रामचन्द्र है,
कउने बरन सीता बाला ।।१।।
सँवरे बरन सिरी रामचन्द्र हैं,
गोरे बरन सीता बाला ।।२।।

—ज्ञानपुर (वाराणसी)

राम के हृदय पर जयमाला सुशोभितहो रही है ।
किस वर्ण के श्रीरामचन्द्र हैं और किस वर्ण की कुमारी सीता हैं ।।१।।
श्याम वर्ण के श्रीरामचन्द्र है और गोर वर्ण की कुमारी सीता हैं ।।२।।

(घ) सोहाग निमन्त्रण

कुमारी कन्या को सोहाग देने के लिए सुहागिन स्त्रियो को निमन्त्रण दिया जाता है । उस समय से सम्बन्धित लोकगीत इस प्रकार है—

(५३) सोहाग न्यौतही

लोधउरा का नेवता पठाइये,
उन गउरा क नेवति बोलाइये ।
गउरा, तोहरा सोहाग मोरे मन बसै,
माई, तोहरा सोहाग मोरे मन बसै ।।१।।
उइ भउजी का नेवता पठाइये,
उइ भउजी क नेवति बोलाइये ।
भउजी तोहरा सोहाग मन मोहना
भउजी तोहरा सोहाग मोरे मन बसै २

उइ बूआ का नेवता पठाइये,
उइ बूआ क नेवति बोलाइये।
फूफू तोहरा सोहाग मन मोहना,
बुआ तोहरा सोहाग मोरे मन बसै ॥३॥

—सेदुरवा (सुलतानपुर)

कन्या कहती है—

सोधउरा को निमन्त्रण भेजिए और उन गौरा (गौरीजी) को निमन्त्रित कर बुलाइए। निमन्त्रण में वह प्रशंसा भी करती है—"हे गौरी माता! आपका सोहाग मेरे मन में निवास करता है (मुझे बहुत भाता है) ॥१॥

फिर वह कहती है—

उन भाभीजी को निमन्त्रण भेजिए और उन्हें निमन्त्रित कर बुलाइए। निमन्त्रण के साथ वह उनकी प्रशंसा करती है—हे भाभी! आपका सोहाग मन मोहित करनेवाला है, आपका सोहाग मेरे मन में वास करता है ॥२॥

फिर वह कहती है—

उन फूफूजी को निमन्त्रण भेजिए और उन्हें निमन्त्रित कर बुलाइए। वह उनकी प्रशंसा में निवेदन करती है—बुआ (फूफू) जी! आपका सोहाग मनमोहना (मनमोहक) है, जो मेरे मन में बस गया है ॥३॥

(ङ) सोहाग मँगाना

प्रातःकाल सौभाग्यवती (सुहागिन) नारियाँ कन्या को साथ लेकर पाँच-सात घरों में सुहाग मँगाने के लिए जाती हैं। उस समय वे जो सुहाग मँगाने का गीत गाती है, उसे गौरथाही कहते है।

(५४) गौरथाही

हाथ डेलरिया फुलन केरी कलिया,
अरे, अब कहाँ चललिउ जनक राजा धेरिया।
हम तौ चललिउँ सदासिउ टोलवा,
देउ न मोरी गउरा अपन सोहाग,
सोहाग माँगन सई चली ॥१॥

अउरेन देतू गउरा, नान्हा सूता बोरि
बाबा दुलारी धेरिया, बइला लदाय,
सोहाग मांगन मई चली ॥ २ ॥
— जगदीशपुर (मुल्तानपुर)

एक सखी कन्या से पूछती है—"हाथ मे टोकरी है, जिसमे फूलो की कलियाँ है। राजा जनक की पुत्री अब कहाँ चल पडी ?"

इस पर कन्या उत्तर देती है—"मैं तो सदाशिव के टोले चल रही हूँ।" फिर वहाँ पहुँच गौरी जी याचना करती है—"हे गौराजी ! आपना सौभाग्य मुझे भी प्रदान कीजिए। हे स्वामिनी ! मै सोहाग माँगने के लिए ही चली आयी हूँ ॥ १ ॥

संग की सुहागिने भी गौरीजी से उसके लिए संस्तुति करती है–"हे गौराजी ! औरो को तो आप छोटे-से सूत्र से डुबोकर ही देती, किन्तु पिता की इस प्रिय पुत्री को इतना अधिक दीजिए कि बैल पर लादना पड़े। हे स्वामिनी ! हम लोग सुहाग माँगने के लिए ही चली हैं ॥२॥

टिप्पणी—ऐसी मान्यता है कि गौरीजी का सुहाग अमर है अर्थात् शिवजी अमर हैं। इसका रहस्य यही है कि गौरी ने शिवजी को प्राप्त करने के लिए अत्यन्त उग्र तप किया था। वे अमर हो गये।

कन्या पिता के घर रहते हुए एक तपोमय पवित्र जीवन व्यतीत करती है और किशोरावस्था आने पर गौरीजी से अमर सुहाग प्रदान करने के लिए प्रार्थना करती है। अन्य सौभाग्यवती स्त्रियाँ भी उसके अमर सुहाग के लिए शुभ कामना करती है और इतना ही नही, वरन् अपने सुहाग से कुछ अंश उसे भी देती है।

प्रत्येक भारतीय नारी की यही कामना होती है कि वह अपने पति के सामने ही मृत्यु को प्राप्त हो जाय और उसका पति उसके लिए अमर ही रहे । कितनी उदात्त निष्ठा है। कितनी दिव्य भावना है।

ऐसी पतिव्रता नारियों को कोटिशः नमन एवं उन पुरुषो को भी जो एक-पत्नीव्रत परायण हैं। सीता और राम ऐसे ही आदर्श दम्पति है।

(च) सौभाग्यदान

जब एक सुहागिन (सौभाग्यवती स्त्री-जिसका पति जीवित होता है) अपनी माँग से सिन्दूर लेकर कन्या की माँग मे देने लगती है तो अन्य सुहागिने प्रस्तुत गीत गाती हैं।

(५५) सुहाग

गउरा, तोहरा सोहगवा हमरी धेरिया का।
मिठबोलना सोहगवा हमरी धेरिया का ॥
—सेंदुरवा (सुल्तानपुर)

हे गौराजी ! आपका सुहाग हमारी कन्या के लिए है। मृदुभाषी सुहाग हमारी धेरिया का है।

टि० (१) प्रत्येक सुहागिन गौरी देवी का साक्षात् स्वरूप है, ऐसा मानकर ही अन्य स्त्रियाँ उन्हे गौरी कहकर सम्बोधित करती हैं।

(२) भारतीय नारी अपने पति को ही अपना सौभाग्य (सुहाग) मानती है और उसी के रहते वह सौभाग्यवती (सुहागिन) रहती है। धन्य हैं ऐसी उदात्त भावनाएँ जो अन्यत्र दुर्लभ है।

खेद है कि आज के भौतिकवादी युग मे अर्थ की प्रधानता के कारण दाम्पत्य जीवन मे भी कटुता आ गयी है, जिसके फलस्वरूप दहेज के भयकर दानव ने सास, ससुर ही नही, वरन् पति तक को भी अपने चंगुल मे फँसाना प्रारम्भ कर दिया है और अनेक भारतीय ललनाओं को अपना ग्रास बना रहा है। दुःख तो इस बात का है कि शिक्षित और सभ्य कहलाने वाले लोग ही अधिकतर ऐसी हत्याएँ करते हैं। अब भारतीय समाज को जागरूक होना चाहिए और ऐसे लोभी हत्यारों को समाज से बहिष्कृत कर देना चाहिए। भले ही वे किसी भी जाति, सम्प्रदाय या धर्म के हो। नारियों को भी अपने साहस का परिचय देना चाहिए और ऐसे हत्याकांक्षी पतियों को भ्रमित अर्थ-लिप्सु दानव मानकर त्यागपूर्वक दण्डित कराने का प्रयत्न करना चाहिए। जो पत्नी के साथ पति जैसा उदार व्यवहार न करे, वह पति कैसा !

(छ) सुहागगीत (सायकाल)

विवाह के दिन प्रातःकाल की ही भाँति सायकाल भी सुहागिने एकत्र होती हैं और सोहाग का गीत गाती है। इस प्रकार कन्या के मन में अपने भावी पति के प्रति प्रगाढ आस्था और विश्वास की भावना दृढ की जाती है।

(५६) सुहाग गीत

कहँवा कै गजमस्ता हाथी—गजमस्ता हाथी,
कउने बन ते आवा है।

केहिकै धेरिया परम सुन्दरी—अरे राज सुन्दरी,
बइठि असन बर माँगत है ॥१॥
सासुर कै गजमस्ता हाथी—गजमस्ता हाथी,
कजरी वन ते आवा है ।
जनक कै धेरिया परम सुन्दरी—राज सुन्दरी,
बइठि असन बर माँगत है ॥२॥

एक सखी दूसरी सखी से पूछती है—"कहाँ का यह मदमस्त हस्ती है और किस वन से यह आया है ? यह परम सुन्दरी राजकुमारी किसकी पुत्री है जो आसन पर बैठी हुई वर-याचना कर रही है ? ॥१॥

दूसरी सखी उसे उत्तर देती है—"श्वसुर का मदमत्त हस्ती है और कजरी वन से आया है। यह परम सुन्दरी राजकुमारी जनक की पुत्री है जो आसन पर बैठी हुई वर माँग रही है ॥२॥

टि०—वास्तव में यह मदमस्त हस्ती और कोई नहीं, प्रत्युत कन्या का अभीप्सित हृष्ट-पुष्ट वर ही है, जिसकी प्रतीक्षा थी और अब बरात के साथ आ पहुँचा है ।

(ज) वेशभूषा (वर)

जिस समय अयोध्या से भरत-शत्रुघ्न सहित बरात लेकर राजा दशरथ जनकपुर पहुँचे तो वहाँ चारो भाइयो को दूल्हे के वेश मे सुसज्जित किया गया । जनवासे से जब बरात राजा जनक के महल की ओर बढ़ी तो राम चारो भाइयो मे आगे थे । उन्हे देखकर नारियाँ मोहित हो गयीं । इसका वर्णन प्रस्तुत लोकगीत मे द्रष्टव्य है ।

(५७) दूल्हा राम (बँदरा-बन्ना)

खेले-खेले कउसिल्या की गोद, रामचन्द्र दुलहा बने ॥टेक॥
दुलहा के माथे ओ चन्दन सोहै, औ टीका पै नाचै मोर ॥१॥
दुलहा के काने ओ कुडल सोहै, औ बाली पै नाचै मोर ॥२॥
दुलहा के अंगे जो जामा सोहै, औ जमदरि पै नाचै मोर ॥३॥
दुलहा के पाएँ ओ मोजा सोहै, औ चप्पल पै नाचै मोर ॥४॥

— दिलीपपुर (प्रतापगढ़)

रानी कौशल्या की गोद मे खेलनेवाले रामचन्द्र दूल्हा बने हुए है । दूल्हे के मस्तक पर चन्दन शोभायमान है और टीके पर मयूर नृत्य कर रहा है ।।१।।

दूल्हे के कानो मे कुण्डल सुशोभित हैं और बाली पर मयूर नृत्य रत है ।।२।।

दूल्हे के अंग पर जामा शोभा दे रहा है और जमदरी पर मोर नाच रहा है ।।३।।

दूल्हे के पैरो में मोजा शोभा देता है और चप्पल पर मोर नृत्य कर रहा है ।।४।।

(झ) द्वारचार (द्वारपूजन)

कन्या के दरवाजे पर जब बरात पहुँचती है, तरह-तरह की आतिशबाजी होने लगती है और पुरोहित द्वारपूजा कराने लगते है तब कोकिलबैनी गायिकाएँ अपने लोकगीतो से बरातियों का मन मोह लेती है । ये गीत वर-वधू तथा बरातियो से सम्बन्धित होते है । इस अवसर के दो लोकगीत यहाँ प्रस्तुत है ।

(५८) दादरा

रघुबर पहिरे फुलन केर गजरा ।।टेक।।
सब सखिया मिलि देखन आयीं,
ढुरि-ढुरि जाय नैन कै कजरा ।।१।।
लखि-लखि बीरा लखन का मारैं,
उड़ि-उड़ि जाय सबन कै अँचरा ।।२।।

—केशवपुर (फैजाबाद)

रघुवंश शिरोमणि राम पुष्पो का हार पहने हुए है ।

उन्हे सब सखियाँ एक साथ देखने आयी, जिनके नेत्रों का काजल बह-बह जाता है ।।१।।

वे देख-देखकर लक्ष्मण को पान का बीडा मारती है, जिससे सब का अंचल उड-उड जाता है ।।२।।

प्रेमाधिक्य मे ऐसा ही होता है ।

(५६) गारी

दुलहिनि सुन्दरि-दुलहा सुन्दर, सुन्दरि सगरी बरात।
यक नही सुन्दर दुलहे के बाबा, जिनके पिचके गाल।
सारी नगरिया कै भूसा भरायो, तबहूँ न हुमसे गाल।।

—सेदुरवा (सुलतानपुर)

एक स्त्री दूसरी स्त्रियों से हास-परिहास करते हुए कह रही है—

दूल्हन सुन्दर है, दूल्हा सुन्दर है और सारी बरात सुन्दर है, किन्तु दूल्हे के बाबाजी नहीं सुन्दर है, जिनके गाल पिचके हुए हैं। उनके उपचार हेतु मैंने सम्पूर्ण नगरी का भूसा भराया तो भी उनके गाल नहीं हुमसे (उठे)।

टिप्पणी—लोकगायिकाओं द्वारा कितना शिष्ट एवं सटीक मजाक किया गया है।

(ञ) जलधार

द्वारपूजा के पश्चात् दुर्गा जनेऊ होता है और फिर सामूहिक जलपान के उपरान्त वर को कन्यागृह के भीतर मण्डप के नीचे ले जाया जाता है, जहाँ अन्य वैदिक और लौकिक कृत्य सम्पन्न होते हैं।

कन्या के माता-पिता आटे की लोई लेकर बैठते है और कन्या का भाई उस लोई पर गेडुवा से जल की अविरल धार छोड़ता है। इसी का वर्णन इस लोकगीत में है।

अरे-अरे भइया कयन रामा,
तोरी धरिया न टूटै रे।
धार टूटे पति जइहैं,
बहिनि होइहैं परारि रे।।

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

लोकगायिकाएँ कन्या के भाई को सचेत करती है कि धार न टूटने पाये, क्योंकि धार टूटने से प्रतिष्ठा चली जायेगी और भगिनी परायी हो जायेगी।

(ट) कन्यादान

माता-पिता आटे की लोई में गुप्तदान स्वरूप प्रायः कोई स्वर्णनिर्मित आभूषण

ते हैं, जिसे वे कन्या के हाथ पर रखकर वर के हाथ पर रखवा देते हैं औ
ग हल्दी से पीला हाथ वर को पकड देते है। यही माता-पिता द्वारा कन्या
और वर द्वारा पाणिग्रहण।

इस अवसर पर महिलाएँ कन्यादान सम्बन्धी गीत गाती है, जिसे सुनका
नेत्रो में अश्रु आ जाते है।

(६१)

हाथे गेडुआ कुस केरी डाभ।
मँड़ए मैं कॉपैं कवने रामा, कन्यादान कइसे देउँ ॥१॥
अब कस कॉपेउ रे बाबा, आयी धरम कै जून।
जौ कुछ बारे ते बिढयउ, उहै लै सकल्पउ आय ॥२॥
बिढ़यउँ में अन-धन-सोनवा, बिढ़यउँ मैं हुडा-परात।
सेयउँ मैं धेरिया लच्छिमी, उहै लै संकल्पउँ आय ॥३॥
एक ओर बहैं गगा-जमुना, एक ओरी तीरथ पराग।
तीन तीरथ तिरबेनी बहै, बाबा अँगना तुम्हार ॥४॥
चन्द्र-गरहन बाबा नित उठि, सुर्ज गरहन कइसे होय।
गऊ-दान बाबा नित उठि, कन्या-दान कइसे होय ॥५॥
हरहट गइया न दीहेउ बाबा, नग्र मैं होय हँसाय।
घोड दिहेउ चितकाबर बाबा, बिहँसत जाय बरात ॥६॥

—सेदुरवा (सुलतानपुर

हाथ में गेडुवा और कुश की डाभ है। मण्डप मे अमुक (कन्या के पिताजी
हे है कि कन्यादान कैसे दूँ ॥१॥

पुत्री कहती है—हे बाबा (यहाँ पिताजी)! अब कैसे आप काँप रहे है ध
ा आ गयी है ॥२॥

पिता कहता है—मैंने अन्न, धन, सोना और हण्डा-परात जुटा लिया है ए
स्वरूपा पुत्री का पालन-पोषण किया है, वही ले आकर संकल्प करूँ ॥३॥

पुत्री कहती है—एक ओर गगा-यमुना बह रही है और एक ओर तीर्थरा
है। हे बाबर! आपके आँगन में त्रिवेणी के रूप में तीन सरिताएँ प्रवाहि
ो हैं ॥४॥

हे बाबा ! चन्द्र ग्रहण तो प्राय. होता रहता है, सूर्य ग्रहण भी यदाकदा होता है एव गोदान नित्य होता है, किन्तु कन्यादान कैसे हो ? अर्थात् कन्यादान तो एक ही बार करना होता है ॥५॥

हे बाबा ! हरहट गाय (चंचला गाय जो प्राय. दूसरों के खेत में पड़ती रहती और मार खाती फिरती है) न दीजिएगा कि नगर में हँसी हो । आप चितकबरा घोड़ा दीजिएगा, जिससे बारात झूमते हुए जाय ॥६॥

(ठ) लाजा होम (लावा)

कन्यादान के उपरान्त भाई अपनी बहिन के आँचल (कोंछ) में धान का लावा डालता है एवं बहनोई को सौंपता है, मानो अब उसकी बहिन की लाज उसके पति के हाथ है ।

इस अवसर के लिए एक छोटा-सा लोकगीत प्रचलित है—

(६२) लावा

लावा डारौ औ भइया लावा डारौ,
मैं तो बहिनी तुम्हारि ।
अँगुठा छुवौ ओ बर अँगुठा छुवौ,
मै तो धनिया तुम्हारि ॥

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

बहिन अपने भाई से कहती है—हे भैया ! लावा डालो, मैं तो तुम्हारी बहिन हूँ । तत्पश्चात् वह अपने पति से निवेदन करती है | हे वरजी ! आप मेरे अँगुष्ठ का अपने अँगुष्ठ से स्पर्श कीजिए, मैं तो आपकी धन-लक्ष्मी हूँ ।

(ड) सप्तपदी

लाजा होम के उपरान्त सप्तपदी की क्रिया सम्पन्न होती है, जिसमें पति-पत्नी साथ-साथ अग्नि देवता के साक्ष्य में सात परिक्रमाएँ करते हैं । सातवीं परिक्रमा (भाँवर) के पश्चात् कन्या पूर्ण रूप से पति की अर्द्धाङ्गिनी हो जाती है और अपने पितृगृह के लिए एक प्रकार से परायी समझी जाती है, क्योंकि अब उसके माता-पिता का संरक्षण तथा अनुशासन उस पर नहीं रह जाता, वरन् पति का संरक्षण तथा

शासन स्थापित हो जाता है। सप्तपदी अर्थात् सात बार वर-वधू के ग्रन्थबन्धनयुक्त साथ-साथ घूमने को अवधी में भाँवर कहते है। भाँवर पडते समय स्त्रियाँ साथ-साथ भाँवर पडने का गीत गाती है।

(६३) भाँवर

पहिली भँवरिया के घूमत बाबा, अबही तुम्हारि।
दुसरी भँवरिया के घूमत बाबा, अबही तुम्हारि।
तिसरी भँवरिया के घूमत बाब, अबही तुम्हारि।
चउथी भँवरिया के घूमत बाबा, अबही तुम्हारि।
पँचई भँवरिया के घूमत बाबा' अबही तुम्हारि।
छठई भँवरिया के घूमत बाबा' अबही तुम्हारि।
सतई भँवरिया के घूमत बाबा' अब तौ भइउँ परारि।

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

कन्या अपने पिता से कहती है—

हे पिताजी! प्रथम भाँवर के घूमते हुए अभी मैं आपकी हूँ। दूसरी, तीसरी, चौथी, पाँचवी और छठी भाँवर के घूमते समय भी मैं आपकी हूँ, किन्तु सातवी भाँवर के घूमते ही अब मै तो न्यामत. परायी हो गई हूँ।

(ढ) कोहबर प्रस्थान

सप्तपदी के उपरान्त ग्रन्थि-बन्धन युक्त वर-वधू स्त्रियो द्वारा कोहबर को ले जायेजाते है। उनके कोहबर जाते समय भी नारियाँ गीत गाती है। यहाँ एतद्-विषयक एक मैथिली लोकगीत प्रस्तुत है, जो सीता और राम के विवाह से सम्बन्धित है।

(३४) कोहबर गमन गीत

गाय गोबर सीता आँगन निपल,
धनुषा देल ओठगाइयौं।
जे इही धनुषा के लेत उठाई,
सीता देब अँगुरी धराइयौं॥१॥

देश-बिदेश केरा भूप सब आओल,
धनुषा छुवी-छुवी जाइयौ।
सीता के नाम सुनि अयेला हो रामचन्द्र,
ओही लेल धनुषा उठाइयौ ॥२॥
तोरल धनुषा दहो दिस फेकल,
मेदनी उठल घहराइयौ।
आमक फलब चढ़ि बैसल हो रामचन्द्र,
होवै लागल सीता के बिआहयौ ॥३॥
भेल बिआह सीता-राम चलु कोहबर,
सीता लेल अँगुरी धराइयौ ॥४॥

—हिसार ड्योढी, मधुबनी (बिहार)

गाय के गोबर से सीता ने आँगन लीपा और शिव के धनुष को उठाकर दूसरी ओर सहारा देकर रख दिया।

जब राजा जनक को यह विदित हुआ तो उन्होने निश्चय किया कि "जो इस धनुष को उठा लेगा, उसी के साथ सीता का पाणिग्रहण कर दूँगा ॥१॥"

राजा ने ढिढोरा पिटवाया, जिसमे देश-विदेश के सब राजा लोग आये, किन्तु धनुष का स्पर्शमात्र कर चले गये (उसे उठा नही सके)। सीता का नाम (और यश-पराक्रम) सुनकर रामचन्द्र आये, उन्होने धनुष उठा लिया ॥२॥

फिर उन्होने उसे तोडकर दशों दिशाओ मे फेक दिया, जिससे पृथ्वी हिल उठी। तत्पश्चात् आम्रकाष्ठ निर्मित पीठिका पर रामचन्द्र चढ़कर बैठे और सीता का विवाह होने लगा ॥३॥

विवाह हो गया (भाँवरे पड़ गई) तो सीता और राम कोहबर को चल पड़े। सीता ने अपना हाथ राम के हाथ में दे दिया (आत्म समर्पण कर दिया) ॥४॥

(ण) वर्तिका मेलन

कोहबर में वर-वधू बैठा दिये जाते है और उनके समक्ष एक घृतदीप रख दिया जाता है, जिसमें दो वर्तिकाएँ होती हैं। फिर ललनाएँ (मुख्यत: वधू की भाभियाँ और सखियाँ) वर से दोनों वर्तिकाएँ एक मे मिला देने के लिए निवेदन करती हैं, किन्तु वर रुका रहता है और वर्तिकाएँ नही मिलाता तो स्त्रियाँ उससे बाती न मिलाने



का कारण पूछती है। इस पर वह स्पष्ट करता है कि वह उसके नेग की प्रतीक्षा कर रहा है। प्रस्तुत लोकगीत में इसी का सुन्दर वर्णन है।

(६५) बाती मेराई (बँदरा)

बना तुम काहे न मेरवउ बाती ।।टेक।।
की बाती तुम्हैं ताती लगतु है, की बरजेउ महतारी।
राजा दसरथ वरजैं नाही, वरजै नाहिं बराती ।।१।।
ना बाती हमै ताती लगतु है, ना बरजेउ महतारी।
इन बातिन माँ नेगु लगतु है, पाँच रुपइया गजपाँती ।।२।।
—चिलौली (रायबरेली)

मिथिलापुर की वनिताएँ राम से कोहबर मे पूछती है—

हे बन्ना ! तुम बाती क्यों नही मिलाते ?क्या तुम्हें ये वर्तिकाएँ तप्त लगती ह या कि तुम्हारी माताजी ने वर्जित कर रखा है ? राजा दशरथ जी तो रोकते नही हे और न बराती ही मना करते है ।।१।।

दूल्हा राम उन्हे सटीक उत्तर देकर निरुत्तर कर देते है। वे कहते है—

न मुझे वर्तिकाएँ तप्त प्रतीत होती हैं और न ही मेरी माताजी ने इन्हे एक मे मिलाने के लिए वर्जित कर रखा है; किन्तु यथार्थ बात तो यह है कि इन वर्तिकाओ के परस्पर मिलाने का नेग मिलता है—पाँच रुपये और गजपक्तियाँ ।।२।।

(त) ब्याहभात

वर्तिका मेलन के पश्चात् दूल्हे को घर के बाहर दरवाजे पर पड़े हुए एक सज्जित पर्यंक पर बैठाकर ब्याहाभात के लिए बरात को निमन्त्रण भेज दिया जाता है। बरातियो के आ जाने पर उन्हे वर सहित सादर घर के भीतर ले जाया जाता है और पीठासन पर बैठा दिया जाता है। तदुपरान्त भाँति-भाँति के व्यंजन परोसे जाते है और जब बराती भोजन करने लगते है तो नारियाँ उनके मनोरंजन के लिए गारियाँ गाती हैं। यहाँ राम-विवाह से सम्बन्धित एक गारी प्रस्तुत है।

(६६) राम गारी

चारिउ भइया बिआहन आये,
भरि भा है जनक दुआर कि हाँ जी।

गंगाजी ते जल भरि आवै,
पाँव पखारैं नउआ-बारी कि हाँ जी ॥१॥
चन्दन की पिढ़ई बनि आई,
पाँतिन-पाँति बिछाई कि हाँ जी ।
पानन की पतरी बनि आईं,
लेउँगन डोभ डोभाई कि हाँ जी ॥२॥
झिनवा कै भात जतन ते रींधेउ,
मुँगिया कै दालि बघारी कि हाँ जी ।
मइदा की रोटी जतन ते सेंकेउ,
घियना मैं दिहेउ चभोरी कि हाँ जी ॥३॥
अमवा औ भटवा, खरिका-रसाजै,
परवर की तरकारी कि हाँ जी ।
निहुरे-निहुरे परसैं जनक जी,
धोतिया धुमिलि होइ जाई कि हाँ जी ॥४॥
जेवन बइठे हैं राम लखन सँग,
देइँ सखी सब गारी कि हाँ जी ।
अइसे ललन का गारी नाहीं,
यक बाप तीनि महतारी कि हाँ जी ॥५॥
ई गारी कै माख न मानेउ,
हम तौ कहिति उघारी कि हाँ जी ।
माख कै कउनिउ बात नहीं ना,
गारी लगै मोहिं प्यारी कि हाँ जी ॥६॥

—चिलौली (रायबरेली)

चारो भाई (राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न) विवाह करने के लिए आये (जिनके साथ राजा दशरथ और अन्य बराती भी हैं) जिनसे जनक का राजद्वार भर गया। गंगाजी से जल भर कर आता है और नाई-बारी उनके पाँव पखार रहे है ॥१॥

चन्दन के पीठासन बनकर आये है, जिन्हें पंक्तियों में बिछा दिया गया है। पानों की पत्तली बनकर आयी है, जो लवँगों के डोभ से डोभाई हुई हैं ॥२॥

झीने चावल का भात यत्नपूर्वक रींधा गया है और मूँग की दाल बघारी हुई है। मैदे की रोटियाँ यत्न से सेंकी हुई हैं और घी से चभोरी गई हैं ॥३॥

अमवा-मटवा, खरिका-रसाजें और परवल की तरकारी है। जनकजी झुक-झुककर उन्हें परोस रहे हैं, जिससे उनकी धोती धूमिल हुई जा रही है ॥४॥

राम सखाओं के साथ भोजन करने बैठे है और सीता की सखियाँ उन्हे मधुर गालियाँ दे रही है। वे कहती है—'ऐसे लाडले कुमार को गाली गाली नही हैं, जिसके एक पिता और तीन माताएँ है ॥५॥

फिर वे राम को सम्बोधित कर निवेदन करती हैं—"इस गाली का बुरा न मानिएगा, हम तो खोलकर (स्पष्ट) कहती हैं।"

रामचन्द्रजी उनसे मुस्करा कर कहते है—"इसमे बुरा मानने की कोई बात नही है। मुझे तो गालियाँ प्रिय लगती है" ॥६॥

(थ) सीता की विदाई

विदाई के समय नवविवाहिता कन्या के साथ-साथ उसके माता-पिता, सहेलियो तथा सम्बन्धियो के नेत्रों मे भी आँसू आ जाते है। इस दृश्य को देखकर वज्र-हृदय भी द्रवीभूत हो जाता है। इस समय जो लोकगीत गाये जाते है, उन्हे मैथिली मे समदाउनि कहते हैं। सीता-विदाई का प्रस्तुत गीत द्रष्टव्य है।

(६७) समदाउनि

बड़ रे यतन हम सियाजी के पोसलौ,
से हो रघुबशी नेने जाय आहे सखिया।
रानी जे रोवै रामा रोवै रनिबसवा,
राजा जे रोवै दरवजवा हे सखिया ॥१॥
हाथी जे रोवै रामा रोवै हथिसरवा,
घोड़ा जे रोवै घोड़सरबा हे सखिया।
टोला ओ परोस मिलि अओर सब रोयलै,
रोवै नगरिया के लोग आहे सखिया ॥२॥
मिलि लिअ-मिलि लिअ सग के सहेलिया,
अब ने अयतन सिया राज आहे सखिया ॥३॥
—मिथिला

हे सखी! बडे यत्नपूर्वक हमने जिस सीताजी का भरण-पोषण किया, उसी

को रघुवंशी राम लिये जा रहे है। इस वियोग-वेला में रानीजी रो रही है; रनिवास रो रहा है और द्वार पर राजाजी रो रहे हैं ॥१॥

हाथी रो रहे हैं, गजशाला रो रही है, घोडे रो रहे हैं एवं अश्वशाला रो रही है। टोला-पड़ोस मिलकर सब लोग रो रहे है और नगरी के लोग रो रहे है ॥२॥

हे सीता के संग की सहेलियो ! मिल-भेंट लो। अब सीता लौटकर इस राज्य मे नही आती (आयेंगी) ॥३॥

---

(२) अयोध्याकाण्ड

१४. विवाह संस्कार (वर पक्ष)

(क) वधू का स्वागत

विवाह होने के उपरान्त वर-वधू के साथ जब बरात लौटकर आती है तो बहू की सास बडे स्नेह से उसे पालकी से उतारती एवं परछन करती है, जिससे वधू के स्वागत के साथ-साथ उसकी सामान्य परीक्षा भी हो जाती है। इस सन्दर्भ में यहाँ दो लोकगीत प्रस्तुत है।

(६८) स्वागत

बड़ी-बड़ी भइँसी बेसाहौ फलाने रामा,
नाँदन दहिया जमाउ।
आवत होइहै ललबछरू कै दुलहिनि,
घिया बिन कउरौ न देइ।।

—चिलौली (रायबरेली)

एक स्त्री वर के पिता को आगाह करते हुए कहती है—

आप बड़ी-बडी भैंसें खरीदिए और नाँदों में दही जमाइए। प्रिय वत्स की वधू आ रही होगी, जो घी के बिना भोजन का एक भी ग्रास नही लेती।

टिप्पणी—वर-पिता को सावधान किया जाता है कि वह वधू के भोजनादि का उत्तम प्रबन्ध करे, जिससे लाडली वधू को किसी असुविधा या कष्ट की अनुभूति न हो।

(ख) परीक्षण

(६९) परछन

कलसा ले बहुअरि कलसा ले, कलसा सगुन सुभ होय।
अरती ले, बहुअरि अरती ले, अरती सगुन सुभ होय।।

लोढ़वा ले बहुअरि लोढ़वा ले, लोढ़वा सगुन सुभ होय।
मुसरा ले बहुअरि मुसरा ले, मुसरा सगुन सुभ होय।
खइलरि ले बहुअरि खइलरि ले, खइलरि सगुन सुभ होय।
—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

हे बहू ! हाथ में कलश ले, कलश का शकुन शुभ होता है।
हे बहू ! आरती ले, आरती का शकुन शुभ होता है।
हे बहू ! लोढ़ा ले, ओढे का शकुन शुभ होता है।
हे बहू ! मूसल ले, मूसल का शकुन शुभ होता है।
हे बहू ! मथानी ले, मथानी का शकुन शुभ होता है।

टिप्पणी—वास्तव मे कलश, आरती, लोढा, मूसल तथा मथानी गृहस्थी मे दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ हैं, जिनका प्रयोग आना ही चाहिए। वधू मे यह अपेक्षा भी की जाती है, इसीलिए उसकी सास परछन के समय इन वस्तुओं को बारी-बारी मे लेकर बहू का परछन करती है।

(ग) मण्डप विसर्जन (माँड़ौ सेरवाना)

विवाह के बाद बहू के ससुराल मे आने पर एक सप्ताह के अन्दर किसी शुभ दिन मण्डप उत्थापन कर सायंकाल गाँव से बाहर किसी निकटवर्ती जलाशय में सेरवा दिया जाता है।

इस अवसर पर वर-वधू की गाँठ जोडकर उन्हें साथ मे आगे लेकर नारियाँ जलाशय पर पहुँचती है, माँडौ सेरवाती है और फिर लौट आती है। वे जाते समय और लौटते समय अपने मधुर गीतो से वर-वधू को आनन्दित करते हुए समस्त वातावरण को सरस बना देती है। इतना ही नही प्रत्युत वर के घर लौटकर वे पुन: अनेक कामोद्दीपक लोकगीत गाती है (जिनमे वर-वधू प्रेरणा प्राप्त करते है) क्योंकि वस्तुत: इसी रात प्रथम बार नवदम्पति साथ-साथ एक पलग पर सोते है।

यहाँ एतद्विषयक दो लोकगीत प्रस्तुत है।

(७०) सगुना

एइ हो सगुना आजु बने।
एइ हो सगुना की बलि-बलि जाउँ।।
—लालगंज (रायबरेली)

एक सखी दूसरी सखी से कहती है—'हे सखी ! आज अच्छे शकुन बने हैं ।'

दूसरी सखी हर्षोत्फुल्ल हो उसकी बात की पुष्टि करती है—"हे सखी ! मैं म (सुहागरात के) शुभ शकुन की बलिहारी जाती हूँ ।'

(७१) नैन मिलाई

बीति गई सारी राति,
मुरली नैना में नैना मिलाय लिऔ हो ।।टेक।।
गइया दुहावन मै गई रे, बछड़न मारा लात ।।१।।
सासुन डारा कुटना रे, सइयाँ बिछावा सेज ।।२।।
सासू कहै बउहरि कुटना रे, सइयाँ कहैं सुख सेज ।।३।।
आगि न लागै कूटना रे, लाख मुहर कै सेज ।।४।।

—लालगंज (रायबरेली)

वर वधू से कहता है—'हे मुरली (अधर रसपान करने वाली प्रिये) ! सारी व्यतीत हो गई (भोर होनेवाला है); नेत्रों से नेत्रों को मिला लो । (अभी तक मुझसे आँख तक नही मिलाई, हृदय मिलाना तो दूर रहा ।)

नववधू भी उसके प्रस्ताव से अपनी सहमति अभिव्यक्त करती और तथ्यो से त कराती है—

मै गाय दुहने के लिए गई थी, वहाँ बछडे ने लात मार दी अर्थात् बछडे ने से आपके पास आने के लिए मुझे भगा दिया ।।१।।

मैने देखा कि सास जी ने कूटने के लिए कुटना डाला और सज्जन पति ने बिछाई ।।२।।

सास जी कहती हैं—बहू ! कुटना है और सैंया कहते है—सुख सेज सजी ।।३।।

मै तो द्विविधाग्रस्त हो गयी, पशोपेश मे पड गई कि क्या करूँ और क्या न ँ । फिर मेरे मन मे आया—कुटना मे आग लगे, लाख मुहरो की सेज है ।।४।।

(अर्थात् इस समय कुटना उतना महत्त्वपूर्ण नही है, जितनी पति द्वारा बिछाई सेज । और मै आपके पास चली आयी ।)

टिप्पणी—महिलाएँ लोकगीतो के माध्यम से कितने मनोवैज्ञानिक ढग से दम्पत्ति को सुहाग रात मनाने के लिए तैयार करती है । यहाँ तक कि अप्रत्य

रूप से घर के साधारण दैनिक कार्यों की उपेक्षा कर इस प्रथम मिलन को अधिक महत्त्व देने के लिए भी प्रेरणा देती हैं, जिससे नववधू किसी प्रकार का संकोच, बहाना या आनाकानी न करे और पति के साथ घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करे ।

(घ) ढोलक पूजन

किसी भी महत्वपूर्ण समारोह या उत्सव की समाप्ति पर महिलाएँ ढोलक की पूजा करती है, क्योकि मुख्यतया यही ऐसा वाद्य है जो उनके गाते समय सदा सहायक रहता है । वे ढोलक में घी-गुड़ लगाती और यह गीत गाती हैं—

(७२) ढोलकी

ढोलक रानी, हमरे बार-बार आयौ ।।टेक।।
गउने आयौ, सँथरे आयौ, जलमे माँ फिरि आयौ ।।१।।
छट्ठी आयौ, बरही आयौ, मुँड़ने माँ फिरि आयौ ।।२।।
छेदने आयौ, जनेए आयौ, बिआहे माँ फिरि आयौ ।।३।।

—लालगंज (रायबरेली)

लोकगायिकाएँ ढोलक से सादर निवेदन करती हैं—

हे ढोलक रानी ! हमारे यहाँ बार-बार आना ।

द्विरागमन में आना, सीमन्तोन्नयन संस्कार में आना और फिर शिशु-जन्म के अवसर पर आना ।।१।।

षष्ठी पूजन के अवसर पर आना, निष्क्रमण संस्कार मे आना और फिर चूड़ाकर्म संस्कार में आना ।।२।।

कर्णवेध संस्कार मे आना, उपनयन (यज्ञोपवीत) संस्कार में आना और फिर पुत्र/पुत्री के विवाह के मंगल अवसर पर आना ।।३।।

१५. द्विरागमन

विवाह में विवाहित कन्या नहीं विदा की जाती तो उसी वर्ष या तीसरे वर्ष किसी शुभ मुहूर्त में उसका पिता-गृह से पति-गृह के लिए गमन होता है, जिसे अवधी मे गवन या गौना कहा जाता है । इसमे भी विवाह की-सी तैयारी होती है और वर के साथ एक छोटी-सी बरात कन्या-गृह जाती है एवं नववधू को गाजे-बाजे के साथ

विदा करा लाती है। यदि कन्या विवाह मे विदा हो जाती है और बाद मे गौना होता है तो उसे द्विरागमन कहते है, क्योंकि अब वह दूसरी बार श्वसुरालय आती है।

जिस समय किशोरी श्वसुरालय के लिए विदा होने लगती है, उस समय उसके माता-पिता एवं सगे सम्बन्धियो के नेत्रो में आँसू आ जाते है तथा उसकी सहेलियाँ भी दुःखी हो जाती हैं। गौने के गीतो में इन्ही भावो की प्रधानता रहती है।

(७३) सीता गवन

लेन गवनवाँ, आये दूनौ बालक ॥टेक॥
हँसि-हँसि पूछैं सखिया-सहेलरी,
कउन है देवरा, कउन सजनवाँ, आये० ॥१॥
दै आँचर सीता मुस्क्यानी,
गोरे हैं देवरा, सँवरे सजनवाँ, आये० ॥२॥
रोय-रोय पूछै सखिया-सहेलरी,
अबके गये कब होइहै मिलनवाँ, आये० ॥३॥
रोय कै सीता चढ़ी है पालकी,
ना जानी, कब होइहैं मिलनवाँ, आये० ॥४॥

—रसूलपनाह (लखीमपुर-खीरी)

१६. होली

होली का त्यौहार उमगों भरा उत्साह और उल्लास का त्यौहार है। फाल्गुन मास के लगते ही फगुनी बयार चलने लगती है जो सारे वातावरण में मादकता का सञ्चार कर देती है। अवध और बरसाने की होली विख्यात है जैसे रामनगर की रामलीला, मिर्जापुर की कजरी और इलाहाबाद की दशहरे की चौकियाँ तथा रोशनी।

(क) अवध में राम का होली खेलना

अवधी लोकगीतो मे राम और उनके भाइयो को होली (फाग) खेलते हुए दर्शाया गया है, जिससे त्रेता की एक सुरम्य झाँकी प्रस्तुत हो जाती है। प्रस्तुत फाग

मे चारो भाई होली के मादक रंग में रँगे हुए हैं जो उनके लोकजीवन का, लोकप्रेम का परिचायक है।

(७४) फाग (उलार)

अवध माँ होली खेलैं रघुबीरा ।।टेक।।
ओ केकरे हाथ ढोलक भल सोहै,
ए केकरे हाथे मजीरा।
राम के हाथ ढोलक भल सोहै,
लछिमन हाथे मँजीरा ।।१।।
ए केकरे हाथ कनक पिचकारी,
ए केकरे हाथे अबीरा।
ए भरत के हाथ कनक पिचकारी,
सतुहन हाथे अबीरा ।।२।।

—छींटपुर (प्रतापगढ़)

(ख) जनकपुर मे राम का होली खेलना

अवधी लोकगीतो मे राम के जनकपुर में भी फाग खेलने का वर्णन है, जिसमें सीता भी अपनी सखियो सहित उनसे फाग खेलती हैं। सीता की ऐसी उमगमयी मुखरता अन्यत्र अनुपलब्ध है। प्रस्तुत लोकगीत देखिए।

(७५) फाग चाँचरि (धमार)

होरी खेलै राम मिथिलापुर माँ ।।टेक।।
मिथिलापुर एक नारि सयानी,
सीख देइ सब सखियन का।
बहुरि न राम जनकपुर अइहैं,
ना हम जाब अवधपुर का ।।१।।
जब सिय साजि समाज चली,
लाखौं पिचकारी लै कर माँ।
मुख मोरि दिहेउ, पग ढील दिहेउ
प्रभु बइठौ जाय सिंघासन माँ ।।२।।

हम तौ ठहरी जनकनन्दिनी,
तुम अवधेस कुमारन माँ।
सागर काटि सरित लै अउबै,
घोरब रंग जहाजन माँ ॥३॥
भरि पिचकारी रग चलउबै,
बूंद परै जस सावन माँ।
केसर-कुसुम, अरगजा-चन्दन,
बोरि दिअब यक्कै पल माँ ॥४॥
— मेहनौन (गोण्डा)

राम मिथिलापुर मे होली खेल रहे हैं। मिथिलापुर की एक चतुर नारी सब सखियो को सीख दे रही है—"राम फिर जनकपुर न आयेगे और न हम लोग अवधपुर जायेंगी (इसलिए खूब जमकर इनसे होली खेल ली जाय) ॥१॥

जब सीता अपना सखी समाज सजाकर और हाथो में लाखो पिचकारियाँ लेकर चली तो उन्होने राम का मुख मोड दिया और उनके पैर ढीले कर दिये। फिर सीता ने उनसे कहा—हे स्वामी! अब आप सिंहासन पर जाकर बैठिए ॥२॥

मैं तो राजा जनकजी की पुत्री हूँ और आप अवध नरेश (दशरथ) के राजकुमारो मे से एक (श्रेष्ठ राजकुमार) है। (अच्छी जोडी है।) मैं समुद्र को काटकर उसमे से नदी ले आऊँगी और जलयानो मे रंग घोलूँगी ॥३॥

फिर पिचकारी भरकर रंग चलाऊँगी, जैसे श्रावण मास मे बूँदे पडती हैं और केसर-कुसुम तथा अरगजा-चन्दन से एक ही पल में आपको सराबोर कर दूँगी ॥४॥

(ग) सरयू तट पर राम का होली खेलना

सीताजी के गौने के उपरान्त जब अयोध्या मे होली पड़ी तो राम और सीता ने होली खेलने का निश्चय किया। फिर वे लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि के साथ सरयू नदी के किनारे पहुँचे और उन्होंने रंगारंग कार्यक्रम मनाया। प्रस्तुत होली गी में उसी का उल्लेख है।

(७६) होरी

सरजू तट राम खेलै होली, सरजू तट ॥टेक॥
केहिके हाथ कनक पिचकारी,
केहिके हाथ अबीर झोली, सरजू तट ॥१॥

राम के हाथ कनक पिचकारी,
लछिमन हाथ अबीर झोली, सरजू तट ॥२॥
केहिके हाथे रंग गुलाली,
केहिके साथ सखन टोल, सरजू तट ॥४॥
केहिके साथे वहुएँ भोली,
केहिके साथ सखिन टोली, सरजू तट ॥५॥
सीता के साथे बहुएँ भोली,
उरमिला साथ सखिन टोली, सरजू तट ॥६॥

—लखनऊ

सरयू तट पर राम होली खेल रहे हैं।

किसके हाथ में सोने की पिचकारी है और किसके हाथ में अबीर की झोली ? ॥१॥

राम के हाथ मे सोने की बनी हुई पिचकारी है और लक्ष्मण के हाथ में अबीर की झोली ॥२॥

किसके हाथ में रंग-गुलाल है और किसके साथ सखाओं की टोली है ॥३॥

भरत के हाथ मे रंग और गुलाल है और शत्रुघ्न के साथ सखाओ की टोली ॥४॥

किसके साथ में भोली-भाली वधुएँ हैं और किसके साथ सखियो की टोली ॥५॥

सीता के साथ भोली वधुएँ हैं और उर्मिला के साथ सखियो की टोली ॥६॥

१७. राम वनगमन

द्विरागमन के कुछ महीनो बाद ही राजा दशरथ ने राम के राज्याभिषेक की तैयारी की, किन्तु कैकेयी की कुटिल दासी मन्थरा के षड्यन्त्र से राम का राज्याभिषेक न हो सका और राम वनवास के लिए तैयार हो गये। उस समय माता कौशल्या तथा पिता दशरथ को मर्मान्तक दुःख हुआ। प्रस्तुत लोकगीत में इसी का वर्णन है।

(७७) फाग (चौताल-डेढ़ताल)

तुम कहत ललन, बनबास चलन,
जीबै केहि भाँति, तुम्है बिन प्यारे ॥टेक॥

होत बिकल मन भूप बेचारे,
सहि न जाय दुख दुनौ परकारे।
नैना बहत जलधारे, तुम्है बिन प्यारे ॥१॥
एक सोच हमरे उर भारी,
जनकलली सजी संग तयारी।
सग जइहैं लखन, तजि देहैं भवन,
होइहै पुर लोग दुखारे, तुम्है बिन प्यारे॥२॥
कर मीजत पछितात भुआला,
पुरबासी सब भये बेहाला।
होनी टरै नहि टारे, तुम्है बिन प्यारे ॥३॥
जेहि दिन राम धाम तजि जइहै,
जिअत मसान अवधपुर होइहैं।
राजा परे है अँगन, मुख आवै न बचन,
मनौ चलन चहत सुरधामे, तुम्हैं बिन प्यारे ॥४॥
बार-बार जननी उर लाई,
नेह सुभाव बरनि नहि जाई।
तुम जाओ सुअन, करौ असुर दमन,
सुर सेवत बन्दी मँझारे, तुम्हैं बिन प्यारे ॥५॥
हे बिधि, काउ कीन मैं बामा,
चउथे पन पायेउँ सुत रामा।
लिखेउ बिजोग लिलारे, तुम्है बिन प्यारे ॥६॥

—धम्मौर (सुलतानपुर)

कौशल्या जी राम से कह रही हैं—

हे पुत्र ! तुम बनवास जाने के लिए निवेदन कर रहे हो, किन्तु मैं तुम्हारे बिना कैसे जीवित रहूँगी।

बेचारे महाराज (दशरथ) मन मे विकल हो रहे हैं। मुझे तो दोनो प्रकार से दुःख सहा नहीं जाता। नेत्रो से जलधारा बह रही है ॥१॥

हमारे मन में एक भारी सोच यह है कि तुम्हारे साथ जाने के लिए जनकलली सीता सज्जित तैयार है और लक्ष्मण भी तुम्हारे साथ जायेंगे, वे महल छोड देंगे और पुरवासी दुःखी होगे ॥२॥

हाथ मलते हुए भूपाल पछता रहे हैं और सब पुरवासी विकल हो गये हैं; किन्तु भवितव्यता टाले नहीं टलती ॥३॥

जिस दिन राम घर छोड़कर जायेंगे, अवधपुर जीवित श्मशान हो जायगा। राजा (दशरथ) आँगन मे पड़े हुए है, उनके मुँह से आवाज नही निकलती, मानो वे सुरधाम को चलना चाहते है ॥४॥

इतना कहकर माता कौशल्या ने राम को बारम्बार हृदय से लगाया। उनका स्नेह-स्वभाव वर्णन नही किया जाता। अन्ततः हृदय दृढ़ कर वे राम से कह उठती हैं—

हे पुत्र ! तुम वन को जाओ और असुरों का दमन करो, क्योंकि बेचारे देवता बन्दी होकर असुरो की सेवा कर रहे है ॥५॥

फिर वे अपने भाग्य को कोसते हुए कहती है—

हे विधाता ! मैंने आपके विपरीत कौन-सा कार्य किया कि चौथेपन (वृद्धावस्था) मे राम को पुत्र के रूप में पाया और अब मेरे ललाट में वियोग लिखा है ॥६॥

१८. सीता का राम के साथ वन जाने की इच्छा

राम के वनगमन का समाचार सुनकर सीता भी उनके साथ वन जाने के लिए तैयार हो गयी। उन्होने अपनी सास कौशल्या से अपनी यह इच्छा प्रकट की तो कौशल्याजी ने उनसे वन के कष्टों की बात कहीं, जिसे सीता ने रामजी के साथ रहने पर नगण्य बतलाया। एक जँतसारी भजन मे इसका युक्तियुक्त वर्णन उपलब्ध है।

(७८) जँतसारी

महिलाएँ यह लोकगीत प्रायः जाँत या चक्की पीसते समय गाती हैं एव यदा-कदा मेला जाते समय भी।

मइया ! मधुबन जाबै, रामजी के साथ ॥टेक॥
मधुबन जइहौ बेटी, जेवना कहाँ पइहौ ?
जेवना न पउबै मइया, बनफल खाबै,
मइया ! बनफल खाबै, रामजी के साथ ॥१॥

मधुबन जइहौ बेटी, गेड़ुआ कहाँ पइहौ ?
गेड़आ न पउबै मइया, ओस चाटि रहबै,
मइया ओ ओस चाटि रहबै, रामजी के साथ ॥२॥
मधुबन जइहौ बेटी, बिरिया कहाँ पइहौ ?
बिरिया न पउबै मइया, पाता कूँचि रहबै,
मइया ! पाता कूँचि रहबै, रामजी के साथ ॥३॥
मधुबन जइहौ बेटी, सेजिया कहाँ पइहौ ?
सेजिया न पउबै मइया, भुइयाँ लोटि रहबै,
मइया ! भुइयाँ लोटि रहबै, रामजी के साथ ॥४॥

—सेंदुरवा (सुलतानपुर)

सीताजी अपनी सास कौशल्याजी से निवेदन करती हैं—

हे माताजी ! मैं रामजी के साथ वन को जाऊँगी (उनके साथ मुझे वन भी मधुर लगेगा, अतः मै उसे मधुवन ही मानूँगी) ।

कौशल्याजी सीता को उनके विचार से विरत करने के उद्देश्य से उनसे पूछती हैं—"बेटी ! वन को जाओगी तो वहाँ स्वादिष्ट भोजन कहाँ पाओगी (जो यहाँ सहज सुलभ रहता है) ?"

सीता उत्तर देती है—"माताजी ! स्वादिष्ट भोजन न पाऊँगी तो कोई हर्ज नही, मै रामजी के साथ वनफल खाऊँगी ॥१॥"

कौशल्या—"वन जाओगी तो जलभरा गेड़ुआ कहाँ पाओगी ?" सीता—"माताजी ! गेड़ुआ न पाऊँगी तो रामजी के साथ रहते हुए मैं ओस चाटकर रहूँगी ॥२॥"

कौशल्या—"बेटी ! वन जाओगी तो पान की बिड़िया कहाँ पाओगी (जो यहाँ तुम्हे सदैव सुलभ रहती है) ?"

सीता—"माँ ! बिड़िया नही पाऊँगी तो पत्ता ही कूचकर रहूँगी रामजी के साथ ॥३॥"

कौशल्या—"बेटी ! वन जाओगी तो सोने के लिए सेज कहाँ पाओगी ?"

सीता—"माँ ! सेज नही पाऊँगी तो क्या हुआ, मैं रामजी के साथ भूमिशयन कर रहूँगी ।"

टिप्पणी—माता के समान सदाशयता की मूर्ति सास कौशल्या और पुत्री के

दृश विनम्रता की मूर्ति सीता का उपर्युक्त वार्तालाप लोकजीवन मे सदा स्पृह
ट्टेया और चिरस्मरणीय भी ।

१६. राम का सीता से वनकष्ठों का वर्णन

राम के वनगमन को सुनकर सीता को अतिशय दुःख हुआ, वे मात
समान सम्माननीया सास कौशल्या से अपनी बात कह कर राम के पास गई
नसे उन्होंने अपने साथ वन ले चलने की प्रार्थना की तो राम ने उन्हे
कष्टो की अतिशयता का बोध कराया, जैसा कि प्रस्तुत लोकगीत
पष्ट है ।

(७६) भजन

घर ही रहौ, दुख पइहौ मोरी जानकी ॥टेक॥
घर कै रोसइयाँ जानकी मनही न भावै,
बन कै भउरिया कइसे खइहौ मोरी जानकी ॥१॥
घर कै गेड़ुवा जानकी मनही न भावै,
बन कै तुतुहिया कइसे पीहौ मोरी जानकी ॥२॥
घर कै बिरियवा जानकी मनही न भावै,
बन के पतउवन कइसे कूँचिहौ मोरी जानकी ॥३॥
घर कै सेजरिया जानकी मनही न भावै,
बन की गुदरिया कइसे सुतिहौ मोरी जानकी ॥४॥
घर कै दरपन जानकी मनही न भावै,
बन बीच दरपन कहाँ पइहौ मोरी जानकी ॥५॥

—इन्हौना (रायबरेली)

हे मेरी प्रिये जनकनन्दिनी सीते ! तुम घर ही मे रहो अन्यथा दु.ख पाओ

हे जानकी ! घर की रसोई (स्वादिष्ट भोजनादि) तो तुम्हारे मन ही
ाती, फिर मेरे साथ चलकर वन की भौरी कैसे खाओगी ? ॥१॥

हे जानकी ! घर का गेडुवा तो तुम्हारे मन को अच्छा नही लगता, फिर
ा तुतुही (एक छोटा मृत्तिकापात्र) में कैसे जल पियोगी ? ॥२॥

हे जानकी ! घर का पनबीड़ा तो तुम्हारे मन को नही सुहाता, फिर
तो को कैसे कूँचोगी ? ॥३॥

हे जानकी ! घर की सुखदायिनी शैया तो तुम्हारे मन को भाती नही, फिर वन की गुदडी मे कैसे शयन करोगी ? ।।४।।

हे जानकी ! घर का दर्पण तो तुम्हे भाता नहीं, फिर वन में दर्पण कहाँ पाओगी ? ।।५।।

(राम के द्वारा वर्णित वन की कष्ट-गाथा सीता को अपने निश्चय से डिगा न सकी, वे अपने निश्चय पर दृढ रही । ऐसा ही आग्रह लक्ष्मण ने भी किया तो राम उनके आग्रह को टाल न सके और वे सीता-लक्ष्मण सहित वन जाने के लिए सहमत हो गये ।)

२०. कौशल्या की चिन्ता

बहुत समझाने-बुझाने पर भी सीता और लक्ष्मण ने अयोध्या मे रहना नही स्वीकार किया और वे राम के साथ वन को चल पडे । माता कौशल्या उन्हें बहुत समझा-बुझा कर हार चुकी थी, अत: अब वे अपने हृदयोद्गार इस प्रकार व्यक्त करती है—

(८०) होरी

अरे, बन चले दूनौ भाई, कोऊ समुझावत नाहीं ।।टेक।।
आगे आगे राम चलत है, पाछे लछिमन भाई ।
तेहिके पाछे सरल जानकी, सोभा बरनि न जाई ।।१।।
भूख लगे भोजन कहँ पइहै, प्यास लगे कहँ पानी ।
नीद लगे डासन कहँ पइहै, बिपदा बरनि न जाई ।।२।।

—इलाहाबाद

कौशल्याजी रुदन करते हुए कहती हैं—वन को दोनो भाई (राम-लक्ष्मण) चल पडे, कोई उन्हे समझाता नही (कि वे वन जाने का विचार त्याग दे और रुक जायँ) ।

आगे-आगे राम चल रहे है, पीछे भाई लक्ष्मण और उनके पीछे सरल हृदया-जानकी चल रही है, जिनकी शोभा का वर्णन नही किया जाता (अवर्णनीय शोभा है) ।।१।।

ये भूख लगने पर भोजन कहाँ पायेंगे, प्यास लगने पर पानी और नींद

लगने पर बिछौना कहाँ मिलेगा ? यह विपत्ति तो वर्णन नहीं की जाती (वर्णन करना कठिन है) ॥२॥

२१. सीता का चलने से श्रान्त होना

सीता, राम और लक्ष्मण वन के लिए चल पड़े, किन्तु कोमलाङ्गी सीता कुछ दूर चलने से ही श्रान्त हो गईं। उन्होने धनुर्धर राम से निवेदन किया कि धीरे-धीरे चलें। एक भोजपुरी कजली में यह प्रसंग द्रष्टव्य है।

(८१) कजली

धीरे चल हम हारी ए रघुवर ॥टेक॥
एक त छुटेला मोर नाक के नथियवा,
दोसर छुटेले महतारी ए रघुबर ॥१॥
एक त छुटेला मोर गरे के हसुलिया,
दोसर छुटेला झीन सारी ए रघुबर ॥२॥
एक त छुटेला नगर अजोध्या,
दोसर छुटेला महतारी ए रघुबर ॥३॥

—भोजपुरी

सीताजी कहती हैं—हे रामचन्द्र ! जरा धीरे चलिए, मैं थक गई हूँ। एक तो मेरे नाक की नथ छूट गइ है, दूसरे माता कौशल्या छूट गई है ॥१॥

एक तो मेरे गले की हसुली और दूसरे महीन साड़ी भी छूट गई है ॥२॥

एक तो अयोध्या नगर छूट गया और दूसरे माताजी भी छूट गईं ॥३॥

टिप्पणी—एक तो सीताजी वैसे ही दुःखी है, दूसरे तीव्रगामी राम के साथ वन पथ पर चलना पड़ रहा है। अत: शीघ्र श्रान्त हो जाना स्वाभाविक है।

२२. केवट से नाव माँगना

रामचन्द्रजी अपनी धर्मपत्नी सीता और लघु भ्राता लक्ष्मण के साथ वन जाने के लिए आगे बढ़ते हुए शृंगवेरपुर पहुँचे और वहाँ गंगातट पर निषादराज गुह से मिले। राम ने उससे गंगापार जाने के लिए अपनी इच्छा व्यक्त की। इसका अति सुन्दर वर्णन श्रीरामचरितमानस में उपलब्ध है। लोकगीतकार भी इस मार्मिक प्रसंग से अत्यधिक प्रभावित हुए है, जिसे एक चैता में इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

(८२) चैता

मॉगत केवट से नाई, खडे दुइनौ भाई ।। टेक ।।
राजा दसरथ के सुत हम, राम लखन रघुराई,
पिता दिहे मोहि राज, मात बनवास पठाई ।
केवट कहत सुना हम ऐसन, पद परसत पत्थर उड़ि जाई ।।१।।
मैं तो नीच निषाद, नही कुछ वेद पढ़ाई,
पालत सब परिवार नाथ, याही नाव कमाई ।
सत्त कहौं तुमते रघुनन्दन, हम तुमते न लेब उतराई ।।२।।
है पाथर से नरम नाथ, मोरी काठ की नाई,
परिहै चरन रिढ़ूका जइसे, नाव अकास उडाई ।
जौ तुम पार होन चहौ राजन, लीजै निज चरन धोवाई ।।३।।
सुनि केवट के बैन, बिहँसि बोले रघुराई,
लीजै चरन धोवाय, बेगि गंगाजल लाई ।
पंडित चित्र वहाल पन याही, बहु बेगि नाउ लै आई ।।४।।
—भेलारा (सुलतानपुर)

दोनो भाई (रामलक्ष्मण) खड़े है और केवट से नाव माँग रहे है (कि वह लाये और उस पर बैठाकर उन्हे पार उतारे) ।

राम उसे अपना परिचय देते हुए कहते है कि हम रघुवंश-शिरोमणि राजा थ के पुत्र राम और लक्ष्मण है। पिताजी ने मुझे राज्य प्रदान किया था किन्तु जी (कैकेयी) ने मुझे वनवास के लिए भेज दिया। केवट कहता है कि हमने सुना है कि आपके चरणो का स्पर्श करते ही पत्थर (प्रस्तर-सी पडी हुई या) उड जाता है ।।१।।

हे स्वामी ! मै निम्न जाति का निषाद हूँ, कोई वेद तो पढ़ता नही है । इसी की कमाई से सारे परिवार का पालन करता हूँ। हे रघुनन्दन ! मै सच कहता क हम आपसे उतराई नही लेगे ।।२।।

हे नाथ ! मेरी काष्ठ की नाव पत्थर से अधिक कोमल है, जो आपके चरणो ज लगते ही आकाश उड जायेगी । हे राजन् ! किन्तु यदि आप पार होना ही ा है तो चरण धुला लीजिए ।।३।।

केवट के ऐसे वचन सुन रघुपति राम हँसकर बोले "शीघ्र गंगाजल लाकर

मेरे चरण धुला लीजिए।" लोकगीतकार पंडित चित्रबहाल का कहना है कि केवट का तो इरादा ही यही था, (उसने राम के चरण धोये और फिर) वह शीघ्र नाव ले आया ॥४॥

२३. भरत का ननिहाल से लौटना

राम के वनगमन तथा महाराज दशरथ के स्वर्गवास के उपरान्त भरत और शत्रुघ्न को ननिहाल से बुलाया गया। भरत अयोध्या पहुँचने पर माता कैकेयी से मिले, उनसे राम के विषय मे पूछ-ताछ की और वस्तुस्थिति जानकर खेद व्यक्त किया। प्रस्तुत लोकगीत मे इसी का वर्णन है।

(८३) भजन

पूछत भरत राम कहाँ माई ? ॥टेक॥
पुत्र गयो ननिअउरे तबही, हम घर बात बनाई।
राम लखन दुनौ बन का सिधारे निरभै राज करौ दुनौ भाई ॥१॥
राम बिना मोरी सूनी अजोध्या, लछिमन बिन चउपाई।
सीता बिना मोरी सूनी रोसइयाँ तुम्हारे दया नहिं आई ॥२॥
—चिलौली (रायबरेली)

भरत अपनी माता कैकेयी से पूछते हैं—"हे माता ! भ्राता राम कहाँ है ?" कैकेयी ने उत्तर दिया—"हे पुत्र ! तुम ननिहाल गये थे, तभी मैंने यहाँ घर पर बात बना ली, जिसके परिणाम स्वरूप राम-लक्ष्मण दोनो वन को चले गये। अब निर्भय होकर तुम दोनों भाई (भरत-शत्रुघ्न) राज्य करो ॥१॥"

भरत ने कैकेयी की बात पर खेद प्रकट करते हुए कहा—"भाई राम के बिना मेरी अयोध्या सूनी है, लक्ष्मण के बिना चौपाल (बैठक) और भाभी सीता के बिना मेरी पाकशाला सूनी है और आपको उन पर दया भी नही आई ?" ॥२॥

२४. भरत का वन जाने का निश्चय

महाराज दशरथ के देहान्त और राम के वनवास के समाचार से भरत को हार्दिक दुःख हुआ। उन्हे अयोध्या असहाय और सूनी लगने लगी। उन्होने स्वयं वन जाने का निश्चय किया जैसा कि इस भोजपुरी लोकगीत से स्पष्ट है

(८४) पराती

होत परात हमहू बन जाइबि, अवध अइहे कवन काम।
अवध आजु हमरा के काटे, मे ना जिअबि बिनु राम ॥१॥
नगर के बासी सभ दोस दीहें, अवध के राज बेकाम।
होत परात हमहू बन जाइबि, अवध अइहे कवन काम ॥२॥

—भोजपुरी

भरतजी कहते है कि कल प्रात काल होते ही मैं भी वन को जाऊँगा, अवध मेरे किस काम आयेगा ? अवध आज मुझे काट रहा है, मै -राम के बिना नही जीवित रहूँगा ॥१॥

नगर के सब निवासी मुझे दोष देगे। अयोध्या का राज्य मेरे लिए व्यर्थ है। अतः प्रातः होते ही मैं भी बन को चला जाऊँगा। अवध का राज्य मेरे किस काम आयेगा ?॥२॥

३. अरण्यकाण्ड

राम पत्नी सीता और भ्राता लक्ष्मण के साथ श्रृंगवेरपुर से प्रयाग पहुँचे, जहाँ ऋषि भरद्वाज ने उनका स्वागत, सत्कार किया और फिर इन्हीं के परामर्श से वे चित्रकूट चले गये, जहाँ कामदगिरि वन्य वृक्षों एवं लताओं से सुशोभित था।

चित्रकूट में तीनों प्राणी अत्यन्त प्रसन्न रहते थे, वहाँ से कुछ दूर अत्रि-आश्रम था, जहाँ सती अनसूया के निवास से वहाँ का वातावरण अत्यन्त दिव्य था। राम अत्रि-अनसूया आश्रम गये, जहाँ सीता को अनसूया ने अपने शुभाशीर्वाद के साथ उपदेश दिया।

२५. चित्रकूट में राम-भरत मिलन

इधर भरत ने राज्य-सिंहासन को स्वीकार नहीं किया और वे राम से मिलने के लिए चित्रकूट पहुँचे। राम और भरत बड़े प्रेम से गले मिले और फिर भरत ने राम और सीता के चरणों का स्पर्श किया। अनुज शत्रुघ्न ने भी सीता, राम और लक्ष्मण के चरणों का स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त किया। फिर राम और लक्ष्मण ने गुरु वशिष्ठ तथा माताओं की चरण-वन्दना की। उपस्थित पुरवासियों से भी वे यथोचित आदरपूर्वक मिले, जिससे सभी लोग आह्लादित हो गये।

राम और भरत के मिलन को खड़ी बोली (कौरवी) के एक लोकगीत में इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है—

(८५) प्रभाती (कार्तिक मास में प्रातः नहाने के समय)

उठ मिल लो राम भरत आये ।। टेक ।।
भूरी-सी हथिनी पै जरद अम्बरी,
ऊपर चँवर ढुलत आये ।। १ ।।
बहियाँ पसार मिलैं चारों भइया,
नैनों से नीर ढलत आये ।। २ ।।

—खड़ी बोली (कौरवी)

कोई चित्रकूट वासी राम से निवेदन करता है—हे राम ! उठकर मिल लो, भरत आये हुए है । भूरी-सी हस्तिनी पर पीले रंग की झालर है, जिसके ऊपर चँवर ढुलते आये है ॥१॥

भुजाएँ फैलाकर चारो भाई परस्पर मिल रहे है और उनके नेत्रो से अश्रुजल ढल रहा है ॥२॥

भरत ने राम से बहुत अनुनय-विनय की कि वे अयोध्या लौट चले और राज्य सिंहासन पर बैठें । राम ने पिता तथा माता (कैकेयी) के वचनो का पालन करने पर बल दिया और भरत को समझाया कि जिस सत्य के पालन में पिता (दशरथ) ने प्राण त्याग दिये, उनका उल्लंघन उचित नही है । भरत ने दूसरा विकल्प रखा कि राम, लक्ष्मण और सीताजी अयोध्या लौट जायें एवं उनके स्थान पर भरत और शत्रुघ्न वनवास करें अथवा भरत और लक्ष्मण वन में रहकर अवधि बिताएँ । राम ने भरत को नीति की बात बतलायी कि जिसके लिए माता-पिता ने आज्ञा दी है, उसे ही उनकी आज्ञा-पालन करनी चाहिए । बहुत वाद-विवाद के पश्चात् विवश होकर भरत इस बात पर राजी हुए कि राम की चरण-पादुकाएँ ले जायेंगे और उनकी सेवा करते हुए राज्य की देखभाल करेंगे । राम ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और भरत उनके खडाऊँ लेकर अयोध्या लौट आये ।

राम बहुत वर्षो तक चित्रकूट मे रहे, किन्तु वहाँ उनके दर्शनो के लिए बडी भीड़ होने लगी । तब राम ने चित्रकूट से अन्यत्र चले जाने का निश्चय किया । वे वहाँ से दक्षिण की ओर बढते गये और पञ्चवटी पहुँचे । वहाँ का दृश्य उन्हे बहुत अच्छा लगा । लक्ष्मण ने वहाँ सीता और राम के रहने के लिए एक भव्य पर्णशाला तैयार की एवं वहाँ से कुछ दूरी पर अपने लिए एक साधारण सी पर्णकुटी बनायी ।

तीनो लोग पञ्चवटी मे रहने लगे । राम सीता और लक्ष्मण को भाँति-भाँति के भारतीय आख्यान सुनाया करते, जिसे सीता-लक्ष्मण बड़े ध्यान से सुनते । सीता ने वहाँ फूलों की वाटिका लगायी, जिनके पौदो को सीता और लक्ष्मण सींचा करते । पुष्प की सुगन्ध से दण्डकारण्य सुवासित रहता । सीता मृगशावकों को बहुत प्यार करती ।

२६. शूर्पणखा प्रसंग

राक्षसराज रावण की एक प्रिय बहिन शूर्पणखा थी, जिसके बड़े-बड़े न थे । वह अतीव सुन्दरी थी, किन्तु उसके स्वाभिमानी पति को उसकी उच्छृंखलत

पसन्द नही थी, अत. उसने शूर्पणखा का परित्याग कर दिया था । रावण ने उसको दण्डकवन का शासन दे रखा था, जहाँ वह अपने अनुचरो के साथ सुखपूर्वक रहा करती थी । वह रावण की रक्ष-सस्कृति के प्रचार-प्रसार मे लगी रहती थी ।

एक दिन सुन्दरी शूर्पणखा घूमते हुए पंचवटी आयी। राम के मनोहर रूप को देखकर उसका मन विचलित हो गया । उसने बडी निर्लज्जतापूर्वक राम से विवाह का प्रस्ताव किया । राम ने अपने एकपत्नी व्रत पर प्रकाश डाला और उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तो वह लक्ष्मण के पास पहुँची । वीरवर लक्ष्मण ने उसकी निर्लज्जता देख क्रोधित होकर उसके नाक-कान काट लिये । तब वह अपने बडे भाई राजा रावण के पास गई और नमक-मिर्च मिलाकर सारी घटना कह सुनाई । इसका वर्णन एक लोकगीत मे यो मिलता है—

(८६) कजरी (मिर्जापुरी)

बोली राम से सुपनखा चोचलाय के,
बनवा मे आयके ना ।।टेक।।
राम करौ मों से सादी, करौ बन माँ अजादी ।
हमैं राखिल्या दुलहिनियाँ बनाय के ।।१।।
राम कीन्हे इनकार, गयी लछिमन के पास ।
लछिमन काटि लिहा नकिया गुस्साय के ।।२।।
काटि लिहे नाक-कान, टूटा रूप कै गुमान ।
गयी लंका माँ नकिया कटाय के ।।३।।
"महादेव" कहैं खास, गयी रवना के पास ।
दस्तान कहै अपुना समुझाय के ।।४।।

—विंध्याचल (मिर्जापुर)

शूर्पणखा ने दण्डकारण्य मे श्रीरामचन्द्र के पास पहुँचकर प्रगल्भतापूर्वक उनसे बोली—"हे राम ! मुझसे विबाह करो और बन मे स्वच्छन्दतापूर्वक विहार करो मुझे अपनी दूल्हन बनाकर रख लो ।।१।।

राम ने उसके प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तो वह लक्ष्मण के पार्श्व गयी तो उन्होने क्रोधित होकर उसकी नासिका काट ली ।।२।।

जब लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये तो उसका रूप का गर्व गलित हो गया । फिर वह नासिका कटा कर लंका गयी ।।३।।

महादेव' कहते हैं कि वह अपने प्रमुख सहोदर भ्राता रावण के पास गई एवं अपना सारा दास्तान उससे समझाकर कहा ।।४।।

२७. स्वर्ण मृग

प्रिय भगिनी शूर्पणखा की दुर्दशा देख-सुनकर स्वाभिमानी राजा रावण को बहुत बुरा लगा। उसने अपने मामा मारीच को अपनी योजना बतायी जिसके अनुसार मारीच ने स्वर्णमृग का वेश धारण किया और वह राम की पर्णकुटी के सामने से निकला। उसे देखकर सीता ने राम से उसकी छाल प्राप्त करने का आग्रह किया। राम ने धनुष-बाण उठा लिये और लक्ष्मण को सीता की रक्षा का भार सौंप कर मृग को मारने के लिए चल पड़े।

जब-जब राम मृग को मारने के लिए बाण चलाते थे तब-तब वह आँखों से ओझल हो जाता था। फिर क्रोधवन्त राम ने उसे लक्ष्य कर एक ऐसा बाण मारा कि वह उसे लगा तो उसने हाहाकार करके लक्ष्मण की गुहार लगायी। सीता ने जब उसे सुना तो लक्ष्मण को राम के पास भेज दिया (उन्होंने समझा कि राम पर कोई संकट आया होगा, जिससे उन्होंने लक्ष्मण को पुकारा है)। जब राम ने लक्ष्मण को आते देखा तो उन्होंने उनसे पूछा—'हे लक्ष्मण ! अपनी भाभी को कहाँ छोड़ आये ?'

इस घटना का वर्णन एक लोकगीत में यों मिलता है—

(८७) भजन

जाइ बनहिं राम कुटिया रमायी ।।टेक।।
भोजपत्र कै बनी मड़इया, चन्दन खम्भ लगायी।
सरल जानकी बगिया लगायी, मिरगा चरन को आयी ।।१।।
राम लछन दूनउँ बात करतु हैं, सीता बचन चलायी।
एहि मिरगा का मारि कै लावौ, एहि कै छाल हमरे मन भायी ।।२।।
एतनी बचन जब सुने रामजी, धनुहा-बान उठायी।
हम तौ जाब भइया मिरगा मरन का, सीता कै कर्‌यो रखवारी ।।३।।
जब-जब रामजी बान चलावैं, मिरगा जात दुरायी।
एक बान मिरगा के लागै, हाहाकार लखन गोहरायी ।।४।।

एतनी बचन जब सुने जानकी, लखनै दीन्ह पठायी।
उनका देखि कै बोले रामजी, कहवाँ लखन छाँडेउ भउजाई ।।५।।

—समोधपुर (जौनपुर)

राम ने वन में मे जाकर पर्णकुटी मे रमण किया। वह कुटी भोजपत्र से बनी हुई थी, जिसमें चन्दन के खम्भे लगे हुए थे। सरला जानकी ने उसी के समीप वाटिका लगायी, जिसे चरने के लिए मृग आया ।।१।।

राम-लक्ष्मण दोनों बात कर रहे थे, तभी सीता ने बात चलायी कि इस मृग को मार कर लाइए, इसकी छाल मेरे मन भा गयी है ।।२।।

इतनी बात जब रामजी ने सुनी तो धनुष-बाण उठा लिया। फिर उन्होने लक्ष्मण को सचेत किया—'हे भाई! मैं तो मृग-वध करने जाऊँगा, तुम सीता की रक्षा करना ।।३।।

जब-जब रामजी बाण चलाते, मृग दूर हो जाता था। तभी एक बाण मृग के लगा। उसने हाहाकार कर लक्ष्मण की पुकार लगायी ।।४।।

इतने बचन जब जानकी ने सुने तो लक्ष्मण को भेज दिया। मृग को मार कर जब राम लौट रहे थे तो उन्होने मार्ग मे लक्ष्मण को आते देखकर पूछा—'हे लक्ष्मण! तुम अपनी भाभी को कहाँ छोड़ आये?'

२८. सीताहरण

सीता के पास से लक्ष्मण के भी चले जाने पर लंकेश रावण भिक्षुक का वेश धारण कर कुटी के पास पहुँचा और उसने भिक्षा की याचना की। सीता जैसे ही भिक्षा देने के लिए लक्ष्मण-रेखा से बाहर निकली कि रावण ने उन्हे पकड़ कर रथ पर बैठा लिया। इसका वर्णन प्रस्तुत लोकगीत मे इस प्रकार उपलब्ध है—

(८८) बिरहा

जाते राम लच्छिमन बन का,
संग में लिहे जानकी धन का,
मिरगा देखि परा सुबरन का,
बिधि ये मारे करम पै रेख ।।टेक।।
कहाँ पै मिरगा देखि परा है, कहँवा पै लुक्कान सुना।
धनुहा-बान चढ़ाये रामजी, बहुत भये हैरान मुना ।।२।।

खइँचि बान ताकिनि कै मारा, लाग बदन भहरान सुना।
लइके नवना तब लछिमन कै, जोरिनि ते चिल्लान सुना ॥३॥
सबद निकरिगे चारिउ ओरिया, परे सिया के कान सुना।
सीता बोलीं तब लछिमन ते जाउ बचन का मानि सुना ॥४॥
चले है लखनलाल गु डा का खचाय के।
ई गु डा के अन्दर भउजी खूब रहिउ बचाय के ॥५॥
आवा रावन भीख मांगिबे, भेख का बनाय के।
अब बरँभा कै मारी टाँकी, मउका परिगा आय के ॥६॥
माँगै लागा भीख रावना, कुटिया कैती जाय के।
देने लागी भिच्छा सीता, हाथ का उठाय के ॥७॥
बँधी भीख न लेबै हमतौ, कही थे समझाय के।
जनकपुरी के अही भिखारी, निन्दा करबै जाय के ॥८॥
देने लागी भिच्छा सीता, लाल का उठाय कै।
पकरि लीन कल्ला रावण ने, रथ राखिसि हरखाय के ॥ ९ ॥
विधि ये मारे करम पै रेख।

—जामो (सुल्तानपुर)

राम-लक्ष्मण वन को जाते हैं, जो संग मे जानकी धन को लिये हुए है। उन्हें सुवर्ण का मृग दिखायी पड़ा। विधि ने कर्म पर रेखा मारी ॥ १ ॥

कहाँ मृग दिखायी पड़ा एवं कहाँ छिप गया? राम जी ने धनुष पर बाण और बहुत परेशान हो गये ॥ २ ॥

तब उन्होने प्रत्यंचा खींच कर बाण चलाया जो उसके शरीर पर लगा तो व ा। तब उसने लक्ष्मण का नाम लेकर जोर से चीत्कार किया ॥ ३ ॥

उसके शब्द चारो ओर निकल गये (व्याप्त हो गये), जो सीता के कानो : लक्ष्मण से बोली कि तुम मेरे वचनो को मानकर जाओ ॥ ४ ॥

लखन लाल उनके चारो ओर वृत्त-रेखा खीचकर चले और फिर सीता 'हे भाभी! इस रेखा के अन्तर्गत रहकर पूर्णत सुरक्षित रहिएगा ॥ ५ ॥

लक्ष्मण के चले जाने पर रावण वेश बनाकर भिक्षा माँगने आया। अब ब्र टंकित अवसर आ पड़ा ॥६॥

कुटी की ओर जाकर रावण भिक्षा माँगने लगा। सीता हाथ उठाकर भिक्ष गी ॥ ७ ॥

रावण ने उनसे कहा—'मै समझाकर आपसे कह रहा हूँ कि मैं बँधं
नही लूँगा । मैं जनकपुरी का भिक्षुक हूँ, मैं वहाँ जाकर निन्दा करूँगा ।। ८ ।।

सीता लक्ष्मण-रेखा के बाहर चरण उठा कर भिक्षा देने लगी, तब अ
रावण ने उनका हाथ पकड लिया और प्रसन्न हो उन्हे रथ पर बैठा लिया ।। ९

२६. जटायु-रावण-युद्ध

रावण सीता को रथ पर बैठाकर आकाशपथ से ले उडा । उस समय
के विलाप को सुनकर जटायु ने उसका पीछा किया और उसका रथ रोककर
भीषण युद्ध किया । इसका वर्णन प्रस्तुत फगुआ मे इस प्रकार है—

(८६) फगुआ-धमार

रथ का निरखत जात जटाई ।। टेक ।।
बिप्र रूप धरि आवा निसाचर, भिच्छा दे मोहिं माई ।
लइके भिच्छा निकसी जानकी रथ पर लिहेउ चढाई ।। १ ।।
है कोऊ जोधा जगतीतल माँ, हमका लेत छोडाई ।
एतना सुनि खगपति उठि धाये, हाँक देत नगच्याई ।। २ ।।
उत्तर दिसि एक नग्र अजोध्या, दसरथ सुत रघुराई ।
तिनकी नारि नाउ है सीता, हरे निसाचर जाई ।।३।।
चोंचन मारि महाजुध्द कीन्हा, रथ से दीन गिराई ।
अगिन बान तब मारे रावना, पंख गिरे भहराई ।।४।।

—रायबरेल

गृद्धराज जटायु रथ को देखते हुए जाता है ।

निशाचर रावण विप्र रूप धारण कर आया और उसने सीता से विनी
मे कहा—"हे माता ! मुझे भिक्षा दीजिए ।" भिक्षा लेकर जानकी लक्ष्मण
बाहर निकली कि उसने उन्हे रथ पर चढ़ा लिया ।। १ ।।

सीता विलाप करने लगी—"भूतल मे कोई ऐसा योद्धा है जो मु
लेता ।" इतना सुनकर पक्षिराज जटायु उठकर दौडे और निकट प
ाँक दी ।। २ ।।

सीता ने उन्हें अपना संक्षिप्त परिचय दिया—"उत्तर दिशा मे ए

नामक एक नगर है जिसमें दशरथ पुत्र श्री राम रहते हैं उनकी मैं 'सीता' नामक स्त्री हूँ। मुझे निशाचर हरण करके ले जा रहा है।। ३ ।।'

ऐसा सुनकर जटायु ने चञ्चु-प्रहार कर रावण से महायुद्ध किया और उसे रथ से गिरा दिया। तब रावण ने अग्निबाण मारा, जिससे जटायु के पंख भहराकर गिर पड़े ।। ४ ।।

३०. शबरी प्रसंग

स्वर्णमृग का वध कर राम अपनी कुटी की ओर लौटे तो उन्हे मार्ग में ही लक्ष्मण मिले। राम ने उनसे कहा—"लक्ष्मण! तम सीता को वन मे अकेली छोडकर चले आये, यह ठीक नही किया, यहाँ वन मे राक्षस आते ही रहते हैं।" लक्ष्मण ने अपनी विवशता बताई। राम ने कहा—"मेरा वाम नेत्र फडक रहा है। इससे लगता है कि सीता पर कोई विपत्ति आ गयी है और वह कुटी में नही है।" और वास्तव में जब वे कुटी में पहुँचे तो देखा कि सीता वहाँ नही हैं। दोनो भाई उनकी खोज मे वन-वन भटकने लगे। कुछ ही दूर पर मरणासन्न जटायु पड़े मिले, उनसे पता चला कि लंकापति रावण उन्हे हर कर ले गया है। दोनो भाई दक्षिण की ओर आगे बढे। मार्ग मे उन्हें एक वृद्धा शबरी का आश्रम दिखायी पडा। वे उसके समीप पहुँचे तो उस भक्तहृदया ने अपनी सहज, सरल उदारता से उनका आतिथ्य सत्कार किया। इसका वर्णन एक लोकगीत मे यो उपलब्ध है—

(६०) भजन (पसिया)

आज बसे सेवरी घर रामा ।। टेक ।।
सेवरी राम क आवत जानै, चन्दन से लिपवावत धामा ।। १ ।।
कुस कै आसन डारि बिछावै, लखन सहित प्रभु करैं बिसरामा ।। २ ।।
बइरी, मकोइया फल लै आवैं, खात राम बहु करत बखाना ।। ३ ।।

—नर्वल (कानपुर)

४. किष्किन्धाकाण्ड

३१. राम-सुग्रीव मैत्री एवं बालि-वध

भक्तिमती शबरी की सम्मति मे राम-लक्ष्मण किष्किन्धापुर पहुँचे
रराज बालि के अनुज सुग्रीव से उनकी मित्रता हो गयी। दोनो ने अ
ी मे एक दूसरे की सहायता करने का वचन दिया। परिणामस्वरूप
न का वध कर दिया तो सुग्रीव किष्किन्धा के राजा हुए और बालितनय
राज। बालिवध का यह प्रसंग एक लोकगीत में इस प्रकार उपलब्ध है–

(८१) सपरी

वालि रोवत बेचारा, कइसे सपरी ॥टेक॥
कारन कउन बिरछि कै लीना रामजी कहौ सहारा।
काहे क धोखा दै मारेउ बान करारा,
तरस न तनिक बिचारा, कइसे सपरी ॥१॥
कराहि-कराहि कै बाली बोलेउ, सुनौ जी राम उदारा।
हमतौ बैरी भये तुम्हारे, भा सुग्रीव पियारा,
कहौ काहे क राजकुमारा, कइसे सपरी ॥२॥
राम कहै की कहौ जिआई, हरि लेई दुख मारा।
बालि कहै अब हम ना जीबै, मिलै न समउ दुबारा,
छाती पीटैं रानी तारा, कइसे सपरी ॥३॥
राम सरन मा अंगद डारा, रामै राम उचारा।
तजिकै प्रान चला बलजोधा हरि के धाम सिधारा,
'सुखदेउ' कहै गँवारा, कइसे सपरी ॥४॥

—रा

बालि बेचारा रोता है कि अब कैसे उसके भावी कार्यक्रम पूरे हो
जी से कहता है कि "हे रामचन्द्रजी ! क्या कारण है कि आपने

ाश्रम लिया एव धोखा देकर कराल बाण मारा। आपको तनिक दया न ायी ।।१।।

कराह-कराह कर बाली बोला कि "हे उदार रामजी ! सुनिए। मै तो आपका वैरी हुआ और सुग्रीव प्रिय हुआ। हे राजकुमार ! आखिर ऐसा किसलिए ? ।।२।।

राम कहते है कि "आप कहिए तो मै आपको जिला दूँ और सारा दुःख हरण कर लूँ।" बालि कहता है कि "मै अब न जीऊँगा, दुबारा ऐसा अवसर नही मिलेगा।" उसकी पत्नी तारा छाती पीटती (चीत्कार करती) है ।।३।।

बालि ने राजकुमार अगद को राम की शरण मे डाल दिया और फिर "राम-राम" का उच्चारण किया। इस प्रकार बलशाली बालि ने प्राण त्याग कर विष्णु लोक के लिए प्रयाण किया। ऐसा लोकगीतकार ग्रामीण 'सुखदेव' का कहना है ।।४।।

३२. मन्दोदरी का स्वप्न-दर्शन

राक्षसराज रावण सीता को अपनी राजधानी लंका ले गया और उन्हे अशोक वाटिका में राक्षसियों की देख-रेख में रखा। तभी एक दिन रानी मन्दोदरी ने एक स्वप्न देखा, जिससे भयभीत होकर उसने रावण को समझाया कि वह सीता को वापस कर राम से मित्रता कर ले, इसी में कल्याण है। इस प्रसग को एक लोकगीत मे इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

(६२) कहरवा

हरि कै लायो सीता प्यारी, तू अनारी बालमा ।।टेक।।
सोवत रहिउँ मै उँची अटरिया, देखेउँ सपन एक भारी।
रामचन्द्र के भालू-बँदर, नष्ट करइँ फुलवारी।
सोनई लका दिहे उजारी, अनारी बालमा ।।१।।
गयेउ जनकपुर धनुहा तोरवे, लेन क जनक दुलारी।
रामचन्द्र तौ धनुहा तोरा, तुम पीतम गयो हारी।
तोरे मुँह मा लागी कारी, तू अनारी बालमा ।।२।।
बांभन होइकै हरेउ सिया का, कछुक न कीन विचारी।
राम लखन के कोपे पइहा, होलिया दिअइँ बिगारी।
चलिकै करउ लखन ते यारी, तू अनारी बालमा।३।

—केशवपुर (फैजाबाद)

रानी मन्दोदरी ने राजा रावण से कहा—"हे अनार्य स्वामी ! आप प्रिय सीता का हरण करके लाये ।

मै ऊँची अट्टालिका पर सो रही थी तो मैंने एक भयावह स्वप्न देखा कि रामचन्द्र के ऋक्ष-वानर वाटिका नष्ट कर रहे है । उन्होने स्वर्णमयी लंका उजाड दी है ।।१।।

आप जनकपुर धनुष तोडने तथा जनक की लाडकी पुत्री को लेने गये थे, किन्तु वहाँ रामचन्द्र ने धनुष तोड़ा और आप तो उनके मुकाबले में हार गये । आपके मुख में कालिमा लग गयी ।।२।।

आपने ब्राह्मण होते हुए भी सीता का हरण किया (कम से कम ब्राह्मण को तो ऐसा नीच कर्म नही करना चाहिए) और उस पर कुछ भी विचार नही किया । आप नही जानते कि राम और लक्ष्मण के क्रोधित होने पर वे हालत बिगाड देगे । अब अच्छा तो यही होगा कि आप रामानुज लक्ष्मण से मित्रता कर ले (इससे लक्ष्मण के अनुकूल हो जाने पर राम भी शान्त हो जायेगे) ।।३।।

टिप्पणी—इस प्रसग ने कव्वालो तथा गजलकारों को भी आकृष्ट किया है, जिसे श्री रामनारायण मिश्र, मु० नियाजी (गाजीपुर) ने मुझे इस प्रकार सुनाया—

जानकी लाये न बालम, मौत लाये जान की ।
जान की चाहो कुशल तो कर दो वापस जानकी ।।

---

५. सुन्दरकाण्ड

३३. हनुमान द्वारा सीता की खोज

एक दिन वानरराज सुग्रीव ने प्रभावशाली वानरों को बुलाकर एक सभा की जिसमे सुग्रीव के प्रधान सेनापति हनुमान ने सीता की खोज-खबर लाने का बीड़ा उठाया। वे समुद्र लाँघकर लंका गये, सीता का पता लगाया और फिर लका जलाकर वापस लौटे। एक लोकगीत मे इसका वर्णन इस प्रकार है—

(८३) चमरऊ-नृत्य गीत

मारा कटक दल बइठ है, बीरा धरा एक पान कै।
हनोमान उठाय लीहा, सुमिरि नाउ भगवान कै॥
जौ परभू अग्या हम पाई। हाली खोज सिया कै लाई॥
सभा बइठि बहुरगी हो, रघुबरजी के सगी॥१॥
ताड़ ठोंकि दल कूदे, बीरा सभा खाय कै।
हाथ जोरि बिनती करउँ, पाउँ परउँ सिर नाय कै॥
अतनी अरज मोरि सुनि लीजै। कुछ पहिचान आपनी दीजे॥
जवन चीज प्रिय सगी हो, रघुबरजी के सगी॥२॥
करि बिस्वास रामजी, मुन्दर दीन्ह हाथ कै।
कहेउ कुसल जाय कै, मुन्दर दिहेउ नाथ कै॥
पीठि ठोकि रघुबर समझावै। पाछे पूर कटक दल आवै॥
लंका किहेउ जाय लकी हो, रघुबरजी के संगी॥३॥
अतना उनके तेज बाढ़ कि कोऊ न ठहरै आच मां॥
बाढ़ समन्दर कुदिगा बन्दर, एकै कुलाच मां॥
देखि कै सुरसा मुँह फैलावै। आज अहार हमै कुछ आवै॥
रूप धरे पतलंकी हो, रघुबरजी के सगी॥४॥
साँस माँ समेटि लइगै, फंका एक मारि के।
उद्र बीच खलभलि मची निकरे तन फारि के॥

तुलसीदास कीरति गावैं । हनोमान लका चढि धावैं ।'
लका करें लकी हो रघुबरजी के सगी ।।५।।

—रहमतगढ (सुल्तानपुर)

सारा कटक दल बैठा हुआ है और वहाँ एक पान का बीड़ा रखा हुआ है (कि जो कोई सीता को खोज लाने का वादा करे, वह उस पान के बीडे को उठाये)। हनुमान ने भगवान का नाम-स्मरण कर उसे उठा लिया और कहा कि यदि मैं स्वामी राम की आज्ञा पाऊँ तो शीघ्र सीता की खोज कर लाऊँ। बहुवर्णी सभा बैठी हुई है। वे रामजी के साथी हैं ।।१।।

सभा के मध्य में बीडा खाकर हनुमान ताल ठोककर दल में उछले। उन्होंने राम से कहा—मैं करबद्ध प्रार्थना करता हूँ और नतशिर चरणों पडता हूँ कि आप मेरा इतना निवेदन सुन लीजिए कि आप अपना कुछ अभिज्ञान दीजिए, जो आपको प्रिय हो और आपके साथ रहता हो। २।।

रामचन्द्रजी ने उन पर विश्वास कर अपने हाथ की मुद्रिका दे दी और उनसे कहा—सीता से मेरी कुशलता कहना और उनके हाथ मे यह मुद्रिका दे देना। उनकी पीठ ठोककर रघुवर समझाते हैं कि तुम्हारे पीछे-पीछे सारा कटक दल भी आयेगा तुम लंका को लंकी कर देना (अर्थात् उसे विध्वंस कर साधारण लंका बना देना) ।।३।।

उनके इतना तेज बढा कि कोई उनकी आँच मे नही ठहर सका। वह हनुमान नामक वानर एक ही उछाल मे बढा हुआ समुद्र कूद गया। उन्हे देखकर नागमाता सुरसा ने मुँह फैलाया, यह सोचकर कि आज हमारे लिए कुछ आहार आ रहा है। वह पतलकी का रूप धारण किये हुए थी ।।४।।

वह एक फाँक मारकर उन्हें साँस मे समेट ले गयी। उसके उदर मे खलभली मच गयी और हनुमान उसका शरीर फाड़कर निकले। तुलसीदास उनकी बडी कीर्ति गाते हैं कि हनुमान लंका पर चढ दौडे और लंका को लंकी कर दिया ।।५।।

२४. लंका दहन

हनुमान ने समुद्रोल्लंघन कर लंका मे प्रवेश किया, सीता की खोजकर वे उनसे मिले एवं राम की दी हुई मुद्रिका दी। फिर उपवन में प्रवेश कर उसे उजाड दिया। रावण ने उन्हे पकड मँगाया और उनकी पूँछ में वस्त्र बँधाकर आग लगवा दी। तब वे लंकागढ पर चढ़ गये और फिर सब पुर जला दिया, जिससे रावण

व्याकुल हो उठा तथा लोग विलाप करने लगे । एक भोजपुरी होली मे इसका सुन्दर वर्णन मिलता है ।

(८४) होली

पवन तनय आजु होरी मचाई ॥टेक॥
बारिधि लाँघि गयो लका में, तरु पर जाइ छिपाई ।
ब्याकुल दीख सिया को जबही, मुँदरी दीन्ह गिराई ।
सिया हिय हरस उठाई ॥१॥
मुद्रिका देखि सिया अति भरमी, मन महँ तरक बढ़ाई ।
सुमिरन कीन्ह, प्रगट तब भयऊ सिय सन आसिस पाई ।
धँसो तव उपवन जाई ॥२॥
उपवन जाइ के पेड उखारो, रावन पकरि मँगाई ।
पोंछ बाँधि पट, तेल चुवायो, पावक दीन्ह लगाई ।
चढ़ो कपि गढ पर जाई ॥३॥
कूदि-फाँदि के पुर सव जारो, दसमुख हिय अकुलाई ।
लागल आगि जरल पुर सगरो, बिलपत लोग लुगाई ।
हाय-हाय, लंक जराई ॥४॥
—भोजपुरी

पवन तनय (हनुमान) ने आज होली मचा दी है ।

वे बारिधि लाघकर लंका मे गये और वृक्ष पर जाकर छिप रहे । उन्होंने जब सीता को व्याकुल देखा तो मुद्रिका गिरा दी, जिसे सीता ने हृदय मे हर्षित हो उठा लिया ॥१॥

मुद्रिका देखकर सीता अति भ्रमित हुई; उन्होंने मन में तर्क बढ़ाया । तब सीता ने स्मरण किया (कि यह मुद्रिका लाने वाला कौन है ?) तब हनुमान

प्रकट हुए और सीता से उन्होंने आशिष प्राप्त की। फिर वे उपवन में घुस गये ॥२॥

हनुमान ने उपवन मे जाकर वृक्ष उखाड़ डाले तो रावण ने उन्हे पकड़वा मँगाया फिर पूँछ में वस्त्र बाधकर उस पर तेल डलवाया और पावक लगा दिया। कपि गढ़ पर जाकर चढ़ गय: ॥३॥

कूद-फाँद कर हनुमान ने सब पुर जला दिया जिससे दशमुख का हृदय व्याकुल हो गया। अग्नि के लगने पर सब पुर जल गया, जिससे सभी स्त्री-पुरुष विलाप करने लगे—"हाय-हाय, लंका जला दिया ॥४॥"

६. लंकाकाण्ड

३५. अंगद का दूतत्व

नुमान लका को जलाकर लौट आये एव सीता का सन्देश राम को दिय के साथ विशाल वानरी सेना लेकर लंका की ओर चल पडे । समुद्र के हर उन्होने पडाव डाल दिया । तब राम ने उचित समझा कि दूत भे समझाने का प्रयत्न किया जाय, जिससे वह सीता को वापस कर दे तो करना पडे ? अतएव उन्होंने अंगद को अपना दूत बनाकर लंका भे मे इसका वर्णन यो मिलता है—

(६५) कुम्हरऊ

सुनि कै लकापति की बतिया, छतिया अगद की जली ।।टेक।।
अगद कहै सुना हे रावन, किहा बड़ी हरकतिया ।
जगत की माता तू हरि लाया, जरा नही दहसतिया ।
यस मन कहै दसौ मुँह तोरी, धन सब करी निपतिया ।
लंकागढ़ समुद्र माँ बोरी, करि देई कसमतिया ।
माटी करि देई इज्जतिया, छतिया अंगद की जली ।।१।।
तोरे बल कै खूब पता है, सुन पुलस्त के नतिया ।
छा महीना बालि कि काँखि रहे, तोरि भई दुरगतिया ।
जानी बाटी तोरि तकतिया, छतिया अंगद की जली ।।२।।
बहिनि तुम्हार सुपनखा बाटै, गई बनै औरतिया ।
लखनलाल नककटी बनाई, कर दीना रुखसतिया ।
माटी करि दीना इज्जतिया, छतिया अंगद की जली ।।३।।
हमार पाँव हटावै कोऊ, जेहि माँ होय हिम्मतिया ।
ठाकुर हरिरतन कै मान कहनवा, राज करौ दिनरतिया ।
रामचन्द्र कै नारी दीजै, छतिया अंगद की जली ।।४।।

—सेंदुरवा (सुल्तान

लंकापति रावण की वार्ता सुनकर अंगद की छाती जल उठी अर्थात् वे क्रोधित हो गये। अगद ने कहा—हे रावण ! आपने वही हरकत की कि जगत् की माता हर लाये और आपको तनिक भी दहशत (भीति) न हुई। ऐसा मन कहता है कि मै तुम्हारे दसो मुँह तोड़ दूँ और सारा धन नष्ट कर दूँ। तुम्हारा लकागढ समुद्र में डुबो दूँ, दुर्दशा कर दूँ एवं सारी इज्जत मिट्टी मे मिला दूँ ॥१॥

हे पुलस्त्य मुनि के नाती ! सुन, मुझे तेरे बल का खूब पता है। तुम छ मास तक मेरे पिता स्वर्गीय बालि की काँख में दबे रहे एवं तुम्हारी दुर्गति हो गयी। मैं तेरी शक्ति को जानता हूँ ॥२॥

तुम्हारी बहिन शूर्पणखा पत्नी बनने के लिए गयी थी। किन्तु लक्ष्मण ने उसके नाक-कान काट लिये, उसे रुखसत कर दिया और इस प्रकार तुम्हारी इज्जत मिट्टी कर दी ॥३॥

मेरा पाँव कोई हटा दे, जिसमे हिम्मत हो। लोकगीतकार ठाकुर हरि रतन कहते है कि अंगद ने उससे कहा कि मेरा कहना मानो और दिन-रात राज्य करो। आप श्री रामचन्द्र की पत्नी दे दीजिए ॥४॥

३६. मन्दोदरी का रावण को समझाना

जब वानर युवराज अंगद ने दूत के रूप मे राक्षसराज रावण को राम का सन्देश देने के साथ अपनी तेजोमयी शक्ति का प्रदर्शन किया तो सभी राक्षस चिन्ता-ग्रस्त हो गये। स्वयं रावण भी चिन्तित हो गया। तब रानी मन्दोदरी ने उसे समझाया, जिसे लोकगीतो मे इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

(८६) कुम्हरऊ

मति ठानेउ राम से बैर पिया ॥टेक॥
सोने का लका बनवायो, देउतन का बलिदान दिहा।
पवन बाँधि झाड़ू क देवायो, पानी मघवा हाथ पिहा।
अइस जगत माँ कोऊ न जनमा, जइसन तुम अन्धेर किहा।
सब सेखी एक दिन माँ जइहै, काहे का घबडात पिया ॥१॥
काहू का कछु दोख नही, तुमही सीता उत्पन्न किहा।
हे अभिमानी ख्याल करौ, साधुन ते तुम दण्ड लिहा।
ओनके रकत ते घडा भरायो, जाइ जनकपुर गाडि दिहा।

ओहि घडे से सीता निकसी, उनही कै अपहरन किहा ।
सब परदा मैं खोलि कहति हौं, तबहूँ नाहि सुझाइ पिया ॥२॥
रामचन्द्र धनुहाधारी है, जिनकै सीता है नारी ।
ओहि दिन कहाॅ पै रही मरदई जब गयउ जग्य माँ तुम हारी ।
काउ कही कहूँ बूडि मरि जातू, तनिकौ नाहि लजात पिया ॥३॥
तुम सोचत हौ अथह समुन्दुर, कइसे कोऊ पार पइहै ।
उनके साथ मॅ एक-एक जोधा, फाँदि समुन्दुर का अइहै ।
दुसरे कै काउ बात कही, खुद भेद भभीखन बतिअइहै ।
चाहे पूँछि लिहउ पडितन से, हमरे कहे न पतिआउ पिया ॥४॥
—खिरिया (गोण्डा

मन्दोदरी रावण से निवेदन करती है—हे प्रिय ! राम से वैर मत ठानना ।

आपने सोने की लका बनवायी, देवताओ को बलिदान दिया, पवन देव को बाँधकर उनसे झाडू दिलवाया एवं देवराज इन्द्र के हाथ से लेकर पानी पिया । जगत् मे ऐसा कोई नही उत्पन्न हुआ, जैसा आपने अधेर किया । हे प्रिय ! आप क्यो घबडा रहे है, एक दिन मे सब शेखी चली जायगी ॥१॥

इसमे किसी का कोई दोष नही है, आप ही ने सीता को उत्पन्न किया ।[1] हे अभिमानी पति ! विचार कीजिए कि आपने साधुओ से भी दण्ड स्वरूप कर लिया । उनके रक्त से घट भरवाया और फिर उसे ले जाकर जनकपुर मे गाड दिया । उसी घट से सीता निकली । इस नाते वह तुम्हारी पुत्री हुई, किन्तु उसी सीता का तुमने अपहरण किया । मै यह सम्पूर्ण रहस्य खोलकर कहती हूँ; तब भी हे प्रिय ! आपको कुछ सूझ नही पडता ॥२॥

जिनकी सीता पत्नी है, वे रामचन्द्र प्रसिद्ध धनुर्धर हैं । उस दिन आपका पौरुष कहाँ था, जब तुम धनुर्यज्ञ में हार गये थे (धनुष नही उठा सके थे) । मैं अधिक क्या कहूँ ? अच्छा होता कि आप कही (चुल्लू भर पानी मे) डूब कर मर जाते । आपको तनिक भी लज्जा नही आती ॥३॥

---

१. कहा जाता है कि रावण ने ऋषि-मुनियो से कर के रूप मे उनका रक्त लेकर एक घडे मे भरवाया था और उसे मिथिला मे गडवा दिया था । काफी दिनो बाद जब मिथिला मे अकाल पड गया तो राजा जनक और रानी ने खेत मे हल चलाया । उस समय हल का फाल घडे से टकराया, जिसमें एक कन्या मिली और फिर वर्षा हुई । राजा ने इस कन्या का नाम सीता रखा और उसका पुत्री की भाँति पालन-पोषण किया ।

आप सोचते हैं कि कोई कैसे अथाह समुद्र को पार करेगा। किन्तु उन (राम) के साथ मे एक-से-एक योद्धा है, जो समुद्र को लाँघकर आयेंगे। मैं दूसरो की क्या बात कहूँ? स्वयं विभीषण (आपका सहोदर अनुज) भेद बतायेगा। यदि मेरी बात की प्रतीति न हो तो आप इस बात को पंडितो (विद्वानो) से पूछ लीजिए'' ॥४॥

(६७) फाग-डेढ़ताल

मन्दोदरि कहत पुकारी, हरि लायो है जनक दुलारी।
अकिलिया गै मारी ॥टेक॥
जेहिकै बलम हरि लायो है जनाना,
ते दूनौ भइया बड़े बलवाना, हुरमत देहैं बिगारी।
जिनके अगुवा पवनसुत प्यारा,
लंका-दहन कै तव सुत मारा।
एक कपि ते बलम गयो हारी,
काहे झूठे बनत बलधारी। अकिलिया गै मारी ॥१॥
ठाना स्वयम्बर जनकपुर के राजा,
तुमहूँ रहेउ तहाँ बैठा समाजा, काहे को हिम्मत हारी।
तोरि धनुष लउतेउ सिया रानी,
तब जानिति तुम्हारि बलवानी।
एक राजा से बनिकै भिखारी,
कइकै चोरी लै आयो परनारी। अकिलिया गै मारी ॥२॥
एक समै पै बालि बल कीना,
कँखरी माँ दाबे रहा छा महीना, पायो न भोजन बारी।
सीतापति एक बान तेहि मारा,
लगतै बालि सुरलोकवा सिधारा।
तुम उनसे बयर किहेउ भारी,
सिर नाचत काल करारी। अकिलिया गै मारी ॥३॥
नयन-कान गिनौ चालिस तुम्हारा,
तउने पै जानेउ न नीका बेचारा, अस मति आई तुम्हारी।
बीस हाथ, दस सीस सजनवाँ,
डरिहैं काटि जगदम्मा सरनवाँ।

नाही लइके मिथिलेस कुमारी,
सिर राम चरन देउ डारी । अकिलिया गै मारी ।।४।।

—उसरेर (गोण्डा)

मन्दोदरी रावण से पुकार कर कहती है कि आप जनक की लाडली बेटी को हर लाये है, इससे प्रतीत होता है कि आपकी अक्ल मारी गई है ।

हे प्रियतम ! आप जिसकी पत्नी को हर लाये है, वे दोनो भाई बडे बलवान है । वे आपकी हुलिया बिगाड़ देगे । जिनके नेता प्रिय पवनपुत्र हनुमान है, जिन्होने लंका दहन कर आपके पुत्र (अक्षयकुमार) का वध कर दिया है । हे प्रियतम ! उस एक कपि से आप हार गये अर्थात् उसने यह सब किया, किन्तु आप उसका कुछ बिगाड न सके । आप क्यों झूठ ही बलशाली बनते हैं । आपकी बुद्धि मारी गई है ।।१।।

जनकपुर के राजा जनक ने स्वयम्बर का संकल्प किया था । आप वहाँ समाज मे बैठे हुए थे । फिर हिम्मत क्यों हार गयी ? आप धनुष तोडकर सीता को रानी के रूप मे लाते तो मै आपकी बलवत्ता को जानती । एक राजा होते हुए भी आप भिक्षुक बनकर चोरी करके पर नारी को ले आये । आपकी अक्ल मारी गई है ।।२।।

एक बार वानरराज बालि ने अपना बल दिखलाया था । उसने आपको अपनी काँख मे छः मास तक दबाये रखा । आपने भोजन-पानी तक नही पाया । उसी को सीतापति रामचन्द्र ने एक बाण मारा, जिसके लगते ही बालि सुरलोक सिधार गया । उन्ही राम से आपने भारी वैर कर रखा है । इससे प्रतीत होता है कि आपके सिर पर कराल काल नाच रहा है । आपकी बुद्धि कुण्ठित हो गयी है ।।३।।

आपके नेत्र और कान मिलकर चालीस है (आप अच्छी प्रकार से देख-सुन सकते थे), उस पर भी आपने अपना अच्छा-बुरा नही जाना । आपकी ऐसी मति हो गयी ।

हे स्वामी ! आपके बीस हाथ और दस शीश है, जिन्हे जगदम्बा (महाशक्ति) की शरण ग्रहण करने वाले राम काट डालेंगे अन्यथा मिथिलेश कुमारी सीता को साथ लेकर आप अपना सिर राम के चरणो मे डाल दीजिये ।।४।।

३७. लक्ष्मण-शक्ति और हनुमान-पराक्रम

अपनी बुद्धिमती पत्नी मन्दोदरी की बात पर अहंकारी राजा रावण ने कान नही किया । उसने अपने पुत्र इन्द्रजीत मेघनाद को युद्ध करने की आज्ञा दी । वह

राक्षसी सेना सहित रणभूमि में आया तो वीर लक्ष्मण ने उसका स्वागत किया। फिर दोनों ओर से युद्ध छिड़ गया। इस घमासान संग्राम में मेघनाद ने शक्ति का प्रहार किया, जो लक्ष्मण के हृदय में लगी। वे भूमि पर गिर पड़े एवं मूर्च्छित हो गये। राक्षस-सेना मेघनाद का विजय-नाद करती हुई लंका लौट गयी।

इधर राम ने अपने प्रिय अनुज लक्ष्मण की मरणासन्न अवस्था देखी तो वे शोकाकुल हो उठे। इस अवसर पर पवनसुत हनुमान ने अपना पराक्रम बताकर उन्हें धैर्य बँधाया। इसका वर्णन एक लोकगीत में इस प्रकार उपलब्ध है—

[६८] कहरवा

तनिका बोलो रघुराई, हम दवाई लाई राम ।।टेक।।
कहौ तौ लीलि जाउँ रबि मंडल, भोर होय न पाई।
कहौ तौ आपन प्रान त्यागि कै, लखन प्रान होइ जाई।
उठिकै बइठै राउर भाई, हम दवाई लाई राम ।।१।।
मारी गदा कहौ धरती माँ औ पताल धँसि जाई।
मारि के नागा अम्रित कुंड का लाइ के देई पिआई।
खटका दिल से देउ हटाई, हम दवाई लाई राम ।।२।।
कहौ बिरंचि लाइ हियाँ पर, अमर-अमर बोलवाई।
कहौ चन्द्र का गारि नाथ हम, अबहि देउ मुख नाई।
बइदा देसवा के बोलाई, हम दवाई लाई राम ।।३।।

—चुवाड़ (गोंडा)

पराक्रमी हनुमान राम से कहते है—हे रघुकुलश्रेष्ठ राम! आप किंचित् बोलें तो मैं लक्ष्मण के लिए औषध ले आऊँ।

यदि आप कहें तो मैं सूर्य-मण्डल को निगल जाऊँ और भोर न होने पाये अथवा आप कहें तो मैं अपने प्राण त्यागकर लक्ष्मण के प्राण हो जाऊँ, जिससे आपके भाई (लक्ष्मण) उठ बैठें ।।१।।

यदि आप कहें तो मैं धरती में गदा मारूँ और पाताल में प्रवेश कर जाऊँ, फिर वहाँ शेषनाग को मार कर अमृत कुण्ड को लाकर पिला दूँ। आप अपने हृदय से शंका हटा दीजिए ।।२।।

यदि आप कहें तो ब्रह्माजी को यहाँ लाकर उनसे अमर-अमर बोलवा दूँ (जिससे ब्रह्माजी अमर कह दें और लक्ष्मण अमर हो जायँ)।



यदि आप कहें तो हे स्वामी ! मैं चन्द्रमा को निचोड़कर (उसमे निहित अमृत) अभी लक्ष्मण के मुख में गिरा दूँ अथवा कहिए तो देश भर के वैद्य बुलवाऊँ ॥३॥

३८. राम का विलाप और निराशा

राम की अनुमति से हनुमान वैद्यराज सुषेण को बुला लाये। सुषेण ने बताया कि सूर्योदय से पूर्व यदि संजीवनी बूटी ले आई जाय और उसे पीसकर लक्ष्मण को पिला दिया जाय तो प्राण बच सकते हैं। तब पवनसुत हनुमान संजीवनी लाने चले गये। उन्हें वहाँ भ्रमवश खोजने मे बहुत विलम्ब हुआ तो राम अत्यन्त चिन्तित हो गये। प्रस्तुत लोकगीत मे इसी का निदर्शन है—

(८८) डेढ़ताल

तात निहारतु राति गयी,
हनुमान कहाँ अरझाने
भोर निकचाने ॥टेक॥
बूटी सजीवन देहै न कामा,
होत भोर जइहैं सुरधामा।
आवत काल नेराने,
भोर निकचाने ॥१॥
भरि आये नैना, उमड़ि बहे नीरा,
बोलहु लखन कहँवा लागी तीरा।
कोमल गात मुखाने,
भोर निकचाने ॥२॥
मेघनाथ आवा रन माँहीं,
तुम बिन कोऊ लड़इया है नाहीं।
बाँदर भालू डेराने,
भोर निकचाने ॥३॥
अवध के वासी मिलिहैं सब धाइ के,
कवन जवाब देब घर जाइ के।
मो से करत न बनिहैं बहाने,
भोर निकचाने ॥४॥

—दरपीपुर (सुलतानपुर)

श्रीरामचन्द्रजी मूच्छित लक्ष्मण को सम्बोधित करते हुए कहते हैं कि 'हे तात ! निहारते हुए रात्रि व्यतीत हो गयी, भोर निकट है; हनुमान कहाँ उलझ गये ?

भोर होते ही संजीवनी बूटी काम नहीं देगी, काल निकट आ रहा है, लक्ष्मण सुरधाम चले जायेंगे ॥१॥

राम के नेत्र भर आये, उनमें उमड़कर नीर बहने लगा। राम कहते हैं कि 'हे लक्ष्मण ! तुम्हें तीर कहाँ लगा, जरा बतलाओ तो। तुम्हारा कोमल गात सूख गया है ॥२॥

मेघनाद पुनः रण में आ गया है, किन्तु तुम्हारे बिना उमसे कोई लड़ने योग्य नहीं है। वानर-ऋक्ष सभी भयभीत हैं ॥३॥

यदि तुम्हारे बिना मैं अयोध्या जाऊँगा और अवधवासी मुझसे ललक कर मिलेंगे तो मैं तुम्हारे साथ न होने के सम्बन्ध में उन्हें क्या उत्तर दूँगा, मुझसे बहाना नहीं करते बनेगा ॥४॥

३६ राम का भरत को पत्र लिखना

हनुमान संजीवनी बूटी ले आये तो वैद्यराज ने उपचार किया जिससे वीर-श्रेष्ठ लक्ष्मण की मूर्च्छा दूर हो गई और वे उठ बैठे। उनके स्वस्थ होने के उपरान्त पुनः युद्ध आरम्भ हुआ, जिसमें लक्ष्मण ने इन्द्रजीत मेघनाद का वध कर दिया। राम ने युद्ध का विवरण पत्र में भरत को लिख भेजा। इस सम्बन्ध में प्रस्तुत लोकगीत द्रष्टव्य है—

(१००) भजन

कलमदान परभू स्याही मँगवाई ॥टेक॥
कलमदान स्याही मँगवाई, पुरजा लिखै बनाई।
पहिले लिखैं हरि आपन हाल, पाछे लिखैं लछिमन कै लड़ाई ॥१॥
मेघनाद रावन कै बेटा, आपन दल सजि-लावा।
है कोऊ ऐसा रामा दल माँ, सन्मुख ह्वै करै हमसे लड़ाई ॥२॥
हनूमान ने गदा उठाई, लछिमन बान सँभारी।
मारेउ बान गिरेउ गढ़ लंका, सीस गिरेउ जहँ बइठे रघुराई ॥३॥
—चिलौली (रायबरेली)

प्रभु रामचन्द्र ने कलमदान और स्याही मँगवायी। उन्होंने बनाकर पत्र लिखा। पहले उन्होंने अपना हाल लिखा और फिर लक्ष्मण के महत्त्वपूर्ण युद्ध का समाचार ॥१॥

'रावणात्मज मेघनाद अपना सुसज्जित दल लेकर युद्ध-स्थल में आया। फिर उसने कहा कि राम की सेना मे कोई ऐसा योद्धा है, जो मुझसे सम्मुख आकर युद्ध करे ॥२॥

हनुमान ने गदा उठायी और लक्ष्मण ने बाण सँभाला। फिर उन्होंने उसे ऐसा बाण मारा कि वह लंकागढ में जा गिरा और उसका कटा हुआ सिर वहाँ जाकर गिरा, जहाँ रघुराज राम बैठे हुए थे ॥३॥

४०. सती सुलोचना का प्रस्ताव

वीरशिरोमणि लक्ष्मण ने इस युक्ति से मेघनाद का वध किया कि उसका मुण्ड वहाँ आकर गिरा, जहाँ रामचन्द्रजी बैठे हुए थे। यह सूचना पाकर उसकी परम साध्वी पत्नी सुलोचना उसे माँगने के लिए उनके पास आई। इस प्रकरण को भी लोकमानस ने सहृदयतापूर्वक आत्मसात किया है, जैसा कि प्रस्तुत लोकगीत मे स्पष्ट है—

(१०१) भजन

माँगन सीस सिलोचन आई ॥टेक॥
अपने महल से निसरी सिलोचन, पतिबरचा अधिकाई।
कइकै सौरहौ सिंगार, अग्या लइकै सासु से आई ॥१॥
हिआँ तुम्हार कवन काम है, रामा दल माँ आई।
ससुर तुम्हारि बडे बल जोधा, नाहक रारि बढ़ाई ॥२॥
यहु तौ सीस तुम्है तब मिलिहै, जब यहि देउ हँसाई।
हाथ जोरि कै खड़ी सिलोचन, सीस हँसै सब दल हहराई ॥३॥
चन्दन काठ मँगावै सिलोचन, उत्तिम बेदी बनाई।
लइकै सीस बेदी पै बइठीं, राम-लखन दूनौ करइँ बड़ाई ॥४॥

—संडीला (हरदोई)

मेघनाद का शीश माँगने के लिए राजवधू सुलोचना आयी।

कठोर पतिव्रता सुलोचना अपनी सास रानी मन्दोदरी से आज्ञा लेकर सोलहो श्रृंगार कर अपने महल से निकली ॥१॥

वह जब राम की सैनिक छावनी मे प्रविष्ट हुई तो लोगो ने उससे पूछा और कहा कि 'यहाँ तुम्हारा कौन-सा काम है जो राम दल मे आयी हो। तुम्हारे श्वसुर रावण तो बड़े वीर योद्धा है जिन्होने व्यर्थ ही युद्ध को बढावा दिया ॥२॥

यह शीश तो तुम्हे तभी मिलेगा, जब तुम इसे हँसा दो। (इससे तुम्हारे सतीत्व की परीक्षा हो जायगी और तभी तुम इसे ग्रहण करने की उपयुक्त पात्री समझी जाओगी।) सती सुलोचना हाथ जोड़कर (ध्यानमुद्रा मे) खड़ी हो गयी। तभी शीश हँसने लगा, जिससे सम्पूर्ण योद्धा दल दहल गया ॥३॥

सुलोचना ने चन्दन-काष्ठ मँगवाया और एक सुन्दर वेदिका बनवायी। फिर पति का शीश लेकर वेदी पर (सती होने के लिए) बैठ गयी। राम-लक्ष्मण दोनो भाई उसकी बड़ाई करने लगे ॥४॥

४१. हनुमान द्वारा अहिरावण-मानमर्दन

वीर लक्ष्मण ने जब मेघनाद का वध कर दिया तो रावण अत्यन्त शोकाकुल हो गया। फिर उसने अपने शक्तिशाली अनुज कुम्भकर्ण को राम से युद्ध करने के लिए प्रेरित किया। धनुर्धर राम से उसका भयकर युद्ध हुआ, और अन्ततोगत्वा उसने राम के हाथो वीरगति प्राप्त की। तब रावण ने अपने पातालवासी भाई अहिरावण का स्मरण किया और उसे युद्ध का समाचार भेजा। वह एक दिन रात्रि के समय वेश परिवर्तन कर राम-दल मे पहुँचा। लोग सो रहे थे। वह राम-लक्ष्मण को बाँधकर पाताल लोक ले गया। वहाँ उसने देवी को उनकी बलि देने का निश्चय किया, किन्तु हनुमान ने वहाँ पहुँचकर उन्हे छुड़ा लिया और वे उन्हे वापस ले आये। एक लोकगीत मे इसका इस प्रकार वर्णन मिलता है—

(१०२) चमरहिया

बडा वीर बलवान रावना कै अहिरावन भाई।
गढ लका मे सुरँग कटाई, रामादल पहुँचाई ॥१॥
हनोमान के पहरा मॅहियाँ, धोखा दै भीतर घुसि जाई।
दूनौ भइयन का मुसुक चढाई, लै मण्डफ पहुँचाई ॥२॥
सुमिरै का होय सुमिरि लिऔ जोधा,
जे तुम्हरे गाढे पै होय सहाई ॥३॥

भरत-सत्रोहन अजोध्या छाँड़ा, संग है लछिमन भाई।
सोवत माँ हनुमान क छाँड़ा, जे हमरे गाढे पै होत सहाई ।।४।।
हनोमान मंडफ माँ गरजे, सरग ईंटि भन्नाई।
तुलसीदास भजौ भगवाने, राम-लखन का लाये है छोड़ाई ।।५।।
—सुल्तानपुर

रावण का भाई अहिरावण बड़ा वीर और बलवान था। उसने लकागढ़ मे सुरंग कटवायी और राम दल तक पहुँचायी ।।१।।

हनुमान के पहरे में उन्हे धोखा देकर वह भीतर घुस गया। फिर दोनो भाइयो (राम-लक्ष्मण) के हाथ-पैर और मुँह बाँधकर उन्हे लेकर देवी के मण्डप मे पहुँचाया ।।२।।

उसने उनसे कहा—'स्मरण करना हो तो उस योद्धा का स्मरण कर लो, जो तुम्हारी विपत्ति मे सहायक हो ।।३।।

राम कहने लगे 'भरत-शत्रुघ्न को हमने अयोध्या मे छोड़ दिया, साथ मे भाई लक्ष्मण है और सोते समय हनुमान (भक्त वीर) को छोड दिया (साथ छूट गया) जो हमारे विपत्तिकाल में सहायक होते ।।४।।

इसी समय हनुमान ने आकर मण्डप मे गर्जना की, जिससे स्वर्ग तक की ईटें दहल उठी। तुलसीदास जी कहते है कि भगवान का भजन कीजिए। वे (हनुमानजी) राम और लक्ष्मण को छुडा लाये ।।५।।

हनुमान ने अहिरावण की भुजाएँ उखाड़ ली और उसका विनाश कर दिया। तत्पश्चात् राम और रावण का भयंकर ऐतिहासिक युद्ध हुआ, जो कई दिनो तक चला। अन्तत राम ने विभीषण की युक्ति से काम लिया और रावण को धराशायी कर दिया। तदुपरान्त विभीषण को लका का राज्य दे 'पुष्पक' विमान से राम ने अयोध्या को प्रस्थान किया। उनके साथ उनकी साध्वी पत्नी सीता, आज्ञापालक अनुज लक्ष्मण, लकापति विभीषण, किष्किंधापति सुग्रीव, युवराज अगद, वीरशिरोमणि हनुमान, चतुर इंजीनियर नल और नील भी पुष्पकारूढ थे। जब राम सबके साथ दशाननविजय कर अयोध्या पहुँचे तो वहाँ हर्ष का पारावार लहरा उठा। फिर राम सीता सहित अयोध्या के राज्य-सिंहासन पर विराजमान हुए और उन पर पुष्प .र्षा हुई। ब्राह्मणो ने मंगल-पाठ किया।

७. उत्तरकाण्ड

राम के वनवास से लौटने पर भरत ने सहर्ष राज्य की धरोहर उन्हे सौप दी। राम सिंहासनारूढ हुए और तीनों भाई उनके निर्देशानुसार कार्य करने लगे। राम-राज्य में समस्त प्रजा सुखी थी। रानी सीता गर्भवती हुई तो सभी लोग बडे प्रसन्न हुए। एक दिन सीता ने राम से कहा कि 'मुझे वन के सुहावने दृश्य प्राय: स्मरण आते है और उन्हे देखने की इच्छा होती है।' राम ने तत्काल तो कुछ नही कहा, किन्तु अवसर की तलाश मे रहने लगे।

लोकगीतो मे सीता-राम रुक्मिणी-कृष्ण और उनके सहचर परस्पर एक दूसरे के सम्बन्धो मे भी प्रयुक्त होते है। लोकगायक तथा गायिकाओ के लिए जो राम है, वे ही कृष्ण है; वही कृष्ण की बहिन सुभद्रा हैं। अतएव भाव-प्रेषणीयता मे चाहे शान्ता कहे या सुभद्रा—लोकगायिकाओ के लिए दोनो एक है।

हमारे पारिवारिक जीवन मे कई घनिष्ठ, विश्वसनीय तथा मधुर सम्बन्ध होते हैं। इन्ही मे से ननद और भावज का रिश्ता है। दोनों मे प्रेमालाप, हँसी-एवं नोक-झोक होती रहती है।

४२. सीता का चित्रांकन तथा वनवास

लोक-जीवन मे प्राय देखने मे आता है कि ननद जहाँ एक ओर अपनी भाभी को अत्यधिक प्रेम करती है, ममत्व देती है, वही दूसरी ओर अपने पिता और भाई से उसकी शिकायत भी करती है, भले ही उसकी सूत्रधारिणी वह स्वय हो।

सीताजी चित्रकला मे सिद्धहस्त थी। एक दिन राम की बहिन ने उनसे दश-ग्रीव रावण का चित्र बनाने का आग्रह किया। सीता ने सहज भाव से रावण का सजीव चित्रण कर दिया, जिसे देखकर वह चकित रह गयी। उसे सीता की कला-निपुणता के प्रति ईर्ष्या उत्पन्न हो गयी। अतएव उसने इसी घटना को लेकर अपने भाई राम से नमक-मिर्च लगाकर शिकायत की एवं उन्हें दण्डित करने की प्रेरणा दी। राम तो अवसर की प्रतीक्षा मे थे ही। उन्होने वन दिखाने के बहाने लक्ष्मण के साथ सीता को वन भेज दिया।

इस घटना का अत्यन्त मार्मिक चित्रण प्रस्तुत लोकगीत मे द्रष्टव्य है,
मे 'उत्तररामचरितम्' का बरबस स्मरण हो आता है। लगता है कि
भूति लोकगीतो की सीता से बहुत प्रभावित थे, जिमसे वे 'एको रस.
प्रबल प्रचारक बने।

(१०३) सोहर

मचिअइ बइठी सुभद्रा तउ भउजी से अरज करइँ हो।
भउजी, जवन रवना तोहरा वइरी, बनाइ के देखावहु हो ॥१॥
लाऊ न गगा-गगोतरी, गगा-जुड़पानी-गगा-जुड़पानी हो।
ननदी, कूँची औ रँग लइ आवउ, त रवना उरेहउँ हो ॥२॥
हाथ उरेहइँ, गोड़ उरेहइँ-गोड उरेहइँ हो।
एइ हो, सिर के उरेहतइ, रवना फुफकार छांडइ हो ॥३॥
राम जेवइँ जेवनार तउ वहिनी अरज करइँ हो।
भइया जवन रवना तोहरा वइरी, त भउजी उरेहइँ हो ॥४॥
थरिया लै धरउ रोसइयाँ औ लखनहि बोलाइ लावउ हो।
भउजी, तोहरे नइहरे कुछ काज तौ नउआ नेवत लावा हो ॥५॥
सीता देई मिली है रॉध-परोसिनि-रॉध-परोसिनि हो।
एइ हो, मिली है सासू-ननदिया त देसवा हरन भवा हो ॥६॥
एक बन गई हैं दुसरे बन, तिसरे पिआसी भई हो।
देउरा, बूँद एक पनिया पिआवउ, हमरे पिआसि लागि हो ॥७॥
ऊँचेन चढ़ि के निहारइँ तौ गाँव एक देखाइ परा हो।
भउजी, छोटइ पेड़ पकरिया त यहि तर जुडायउ हो ॥८॥
जल भरि लाये है लछिमन औ सितल देई सोइ रही हो।
एइ हो, डरिया मेँ जल लटकाइ के लछिमन चले गये हो ॥९॥
—सुल

मचिया पर बैठी हुई सुभद्रा सीता से प्रार्थना करती है कि 'हे भा
रण आपका वैरी था उसे बनाकर दिखाइए ॥१॥

सीता कहती है—'हे ननदजी ! गंगा नदी का शीतल जल, कूँची
ए तो मैं रावण को उरेहूँ ॥२॥

वे हाथ तथा पैर उरेहती है, किन्तु सिर उरेहते ही रावण फुफकार
॥

राम भोजन जीवते है तो बहिन उनसे निवेदन करती है—'हे भैया ! जो रावण आपका वैरी था, भाभी उसी को उरेहती है ।।४।।

रामने कहा—'थाली उठाकर रसोई में रखो और लक्ष्मण को बुला लाओ । (लक्ष्मण के आने पर रामने उनसे सीता को वन मे छोड आने की कठोर बात कही ।) आज्ञापालक लक्ष्मण ने अग्रज राम की आज्ञा के अनुसार सीता से निवेदन किया—'हे भाभीजो ! आपके नैहर मे कुछ मंगलकार्य है, नापित जिसका निमन्त्रण लाया है ।।५।।

सीता देवी पास-पडोसिनो तथा सास-ननद से मिली और इस प्रकार उनका देश-निकाला हो गया ।।६।।

वे एक वन गयी, फिर दूसरे वन गयी और तीसरे वन मे प्यासी हो गयी । उन्होने लक्ष्मण से कहा—'हे देवर ! एक बूँद पानी पिलाओ, मुझे प्यास लगी है ।।७।।'

लक्ष्मण एक ऊँचे स्थान पर चढकर देखने लगे तो उन्हें एक ग्राम दिखायी पडा । उन्होने कहा—'हे भाभीजी ! यह पाकड का छोटा वृक्ष है, इसी के नीचे शीतलता प्राप्त कीजिएगा ।।८।।

जब लक्ष्मण पानी भरकर लाये तो सीता देवी सो रही थीं । अतएव वे वृक्ष की एक डाल मे जलपात्र लटकाकर चले गये ।।९।।

४३. राम द्वारा विशाल यज्ञायोजन

रामानुज लक्ष्मण सीता देवी को जहाँ छोड आये थे, वहीं पास मे वाल्मीकि ऋषि का आश्रम था । जागने पर सीता ने देखा कि वृक्ष की एक शाखा मे जलभरा लोटा लटका हुआ है । फिर वे काफी देर तक लक्ष्मण की प्रतीक्षा करती रहीं कि शायद वे कहीं पास-पडोस मे गये हो । अन्ततः निराश होकर जब वे रोने लगीं, तब उन्हे कुछ तपस्विनियों ने देखा, परिचय पूछा और फिर वे उन्हे सान्त्वना देते हुए अपने साथ ले गयीं । ऋषि वाल्मीकि ने उनके लिए आश्रम मे रहने की उचित व्यवस्था कर दी ।

सीता वनवास के कुछ समय बाद रामने एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया । यज्ञ मे पत्नी को अपने दाहिनी ओर आसन दिया जाता है और दोनों के सम्मिलित योगदान से यज्ञ की पूर्णाहुति होती है । अतएव राम को धर्मपत्नी सीता का अभाव खटकने लगा । उन्होंने माता कौशल्या से अपने मन की बात कही ।

म्मति से वे गुरु बसिष्ठ तथा अनुज लक्ष्मण के साथ सीता को मनाकर लाने न गये, किन्तु सीता ने उनके प्रस्ताव को विनम्रतापूर्वक ठुकरा दिया और लौटकर नहीं आईं। प्रस्तुत लोकगीत में इसी का वर्णन किया गया है—

(१०४) सोहर

चइतहि कै तिथि नउमी त राम जग्गि करिहईं हो।
सखिया, बिन ही सितल जगि सून, सितल रानी बन सेवईं हो ॥१॥
सोने के खड़उँआ राजा रामचन्द्र, माता ते अरज करईं हो।
माता, बिन ही सितल जग सून, सितल रानी बन सेवईं हो ॥२॥
सोने के खड़उँआ बसिष्ठ मुनि, बेदिया पै ठाढ़ भये हो।
गुरुजी, रउरे मनाये सीता मनिहईं, मनाइ लेइ आवउ हो ॥३॥
आगे के घोड़वा गुरु बाबा त पीछे के लछिमन देउरा हो।
एइ हो, अल्हरे बछेड़वा राजा राम, सीता के मनावइ चले हो ॥४॥
अँगना बहारइ चेरिया तउ अउरउ लउँड़िअउ हो।
रानी, आइ गये गुरुजी तोहार, तउ तुमका मनावइ हो ॥५॥
झूठहि चेरिया लउँड़िया ता झूठहि तोरी बोलिया 'हो।
चेरिया, कहाँ बाटे भागि हमारि, जउ गुरु मोरे अइहईं हो ॥६॥
जउ मोरे गुरु बाबा अइहईं, चरन धोइ पीबइ हो।
सखी, मथवा चढउबइ गुरु पाउँ त जनम सुफल होईं हो ॥७॥
अतनी समझ सीता तोहरे, तू बुधियन आगरि हो।
सीता, कवने गुन छाँड़ेउ अजोध्या, रामइ बिसरायउ हो ॥८॥
बिसराय दिहे रामचन्द्र ऊ दिन, जवने दिन बिआह भये हो।
एइ हो, अस्सीमनी धनुष उठाये, निहुरि अँगूठा छूए हो ॥९॥
बिसराय दिहे रामजी उइ दिन, जवने दिन गवन आये हो।
एइ हो, मखमल सेजिया बिछाये, हिरदइयाँ लइके सोये हो ॥१०॥
बिसराय दिहे रामचन्द्र ऊ दिन, जवने दिन बन चले हो।
गुरुजी, हमहूँ चलिन साथ-साथ, बन दुख सब सहेउँ हो ॥११॥
बिसरि गये रामजी ऊ दिन, जवने दिन बन दिहे हो।
गुरुजी, महल ते दिहिनि निकासि, फिरि कबउ न बोलाये हो ॥१२॥
राउर कहन गुरु करबइ, पयग पाँच चलबइ हो।
गुरुजी ! लउटि हिअइं चली अउबइ, अजोध्यइ न जाबइ हो ॥१३॥

—बरौंसा (सुलतानपुर

एक सखी दूसरी सखी से कहती है—'हे सखी ! चैत्र मास की नवमी तिथि को राम यज्ञ करेंगे, किन्तु सीता के बिना यज्ञ सूना ही रहेगा, क्योंकि रानी सीता वन सेवन कर रही है ॥१॥

स्वर्णपादुका पहने हुए राजा रामचन्द्र माता कौशल्या से निवेदन करते है—"माताजी ! बिना सीता के यज्ञ सूना रहेगा, सीता रानी वन सेवन कर रही है ॥२॥"

स्वर्णपादुकायुक्त मुनि वसिष्ठ आकर वेदी पर खड़े हुए, उनसे कौशल्या ने निवेदन किया—"हे गुरुजी ! आपके मनाने से सीता मानेगी, उन्हे मनाकर ले आइए ॥३॥"

आगे के घोड़े पर गुरुजी, पीछे के घोड़े पर सीता के देवर लक्ष्मण और नये तथा फुर्तीले घोड़े पर चढ़कर रामचन्द्र सीता को मनाने चले ॥४॥

सेविका आँगन मे झाड़ू लगा रही थी, उसने सीता से कहा—"हे रानी ! आपके गुरुजी आपको मनाने के लिए आ गये है ॥५॥"

सीताजी उससे कहती है—"हे झूठी दासी ! तेरी बोली भी झूठी है। हमारे कहाँ ऐसे भाग्य है कि मेरे यहाँ गुरुजी आयेंगे ॥६॥"

यदि मेरे गुरुजी आयेगे तो मै उनके चरण धोकर पीऊँगी। हे सखी ! मैं गुरुजी के चरण अपने मस्तक पर चढाऊँगी तो मेरा जन्म सुफल होगा ॥७॥"

गुरु वशिष्ठ ने कहा—"हे सीते ! तुम्हारे इतनी बुद्धि है, तू बुद्धिमतियों मे अग्रणी है, किन्तु किस कारण से तुमने अयोध्या त्याग दिया और राम को विस्मृत कर दिया ॥८॥

सीता ने उत्तर दिया—"श्री रामचन्द्र ने उस दिन को विस्मृत कर दिया, जिस दिन विवाह हुआ था ! इन्होंने अस्सी मन का धनुष उठाया था और झुककर अपने अँगूठे से मेरे अँगूठे का स्पर्श किया था ॥९॥

रामजी ने उस दिन को भुला दिया, जिस दिन गवन आया था ! मलमल की सेज बिछाई गई थी और मुझे अपने हृदय से लगाकर सोये थे ॥१०॥

रामचन्द्र ने वह दिन बिसरा दिया, जिस दिन वन चले थे। हे गुरुजी ! मैं भी साथ-साथ चल पड़ी थी और वन के सारे दुःख सहे थे ॥११॥

रामजी वह दिन भूल गये, जिस दिन मुझे वनवास दिया था। हे गुरुजी ! राम ने मुझे महल से निकाल दिया, फिर कभी बुलाया तक नहीं ॥१२॥



अन्त मे सीता गुरुजी से निवेदन करती है कि "हे गुरुजी ! मैं आपका कहना करूँगी; पाँच पग चलूँगी, किन्तु फिर लौटकर यही चली आऊँगी, अयोध्या न जाऊँगी" ॥१३॥

४४. लवकुश-जन्म

सीता वनवास के लगभग छः महीने बाद महर्षि वाल्मीकि के दिव्य आश्रम मे वनदेवी सीता के लव और कुश नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए। उसका वर्णन एक लोकगीत मे इस प्रकार उपलब्ध है—

(१०५) छोटी सरिया

गंगापार हर जोतेउँ चीकनि माटी हो।
सोहइया लाल, जाय जगाऊ पुरिखवन, जिन घर नाती भे हैं रे ॥१॥
केहि केरे पुतवा के पुत भे है, केहि केरे नाती भे है रे?
सोहइया लाल, केहि केरी धेरिया जुड़ानी, पितरा अनँद भे है रे ॥२॥
दसरथ पुतवा के पुत भे हैं, कउसिल्या देइ के नाती भे हैं रे।
सोहइया लाल, जनकन धेरिया जुडानी, पितरा अनँद भे हैं रे,
देउता अनँद भे है, धरती सुखित भे है रे ॥३॥

—सेदुरवा (सुलतानपुर)

मैंने गंगापार हल चलाया, जहाँ की चिकनी मिट्टी है। अब जाकर उन पूर्वजों को जगाओ, जिनके घर नाती हुए हैं ॥१॥

किसके पुत्र के पुत्र हुए हैं, किसके नाती हुए है? किसकी सुपुत्री सन्तुष्ट हुई और पितृगण आनन्दित हुए हैं ॥२॥

दशरथ-पुत्र के पुत्र हुए हैं, कौशल्या देवी के नाती हुए हैं। जनक की दुहिता सन्तुष्ट हुई है और पितृगण आनन्दयुक्त हुए हैं। देवता आनन्दित हुए हैं और धरित्री सुखी हुई है ॥३॥

४५. सीता का अयोध्या को रोचना भेजना

पुत्रोत्पत्ति होने पर मंगल-सूचनार्थ रोचना भेजा जाता है। लव-कुश का जन्म होने पर वाल्मीकि जी के आश्रम से अयोध्या को रोचना भेजा गया था, जिसका वर्णन प्रस्तुत लोकगीत में यों है—

(१०६) सोहर (रोचना)

छापक पेड़ छिउलिया त पतवन गहबरि रे।
ए हो, तेहि तर ठाढ़ी सितलरानी, मन महँ मुरझइँ हो ।।१।।
बन ते निकमी बन-तपसिन, दुख-सुख पूछइँ रे।
रनिया, कउन है तुम्हइँ कलेस, मन महँ मुरझिउ हो ।।२।।
को मोरे लइहइँ अगिया, बेलहि केरि कठियाउ रे।
माई, को मोरे जगिहै रइनियाँ, रइनियाँ सुफल होइहइँ हो ।।३।।
हम तोरे लइबइ अगिया, बेलेन केरि कठियाउ रे।
रनिया, हम तोरे जगबै रइनियाँ, रइनियाँ सुफल होइहइँ हो ।।४।।
होत भोर पहु फाटे तौ होरिलै जलम लीना रे।
ए हो, बाजै लागी अनँद बधइया, उठै लागे सोहिल हो ।।५।।
हँकरौ न बन केरे नउआ त हाले-बेगे आवहु रे।
नउआ, रगि-रगि पिसहु हरदिआ, रोचन दै आवहु हो ।।६।।
पहिल रोचन कउसिल्या देई, दुसर सुमित्रा देई रे।
नउआ, तिसर रोचन रानी ककही, चउथ देवर लछिमन हो ।।७।।
कउसिल्या दिहिन पाँचौ बस्तर, सुमित्रा रानी अभरन रे।
ए हो, केकही रतन-पदारथ, लछिमन घोड़ दिहिन हो ।।८।।
छोट-मोट बिरवा छिउल कइ, पतवन झालरि रे।
ए हो, तेहि तर ठाढ़े राजा रामचन्द्र, दतुइन कूँचइँ हो ।।९।।
तेही समइया पाछे लछिमन, अनमन आवहिं रे।
भइया महर-महर छुअइ माथ, रोचन कहँ पायहु हो ।।१०।।
भउजी तौ हमरी सितल देईं, बसहिं गहन बन रे।
भइया, उनही के भये नँदलाल, रोचन हम पायेन हो ।।११।।
एतना सुनहिं राजा राम त भुइयाँ दतुइनि गिरइ रे।
ए हो, ढुरै लागे मोतिअन आँसु, पटुकवन पोछइँ हो ।।१२।।
जनमेउ तौ जनमेउ गहन बन, अउरौ बिपति, बन रे।
पूता, कुस-पात ओढ़न डासन बन-फल भोजन हो ।।१३।।
जौ तुम होतेउ अजोध्यै कउसिल्या माई मन्दिर रे।
पूता, बजतइ अनँद-बधाव, सकल सुख उपजत हो ।।१४।।

—कोरैया उदयपुर (सीतापुर)

पलाश का घना वृक्ष है, जो पत्तों से लदा हुआ है। उसके नीचे रानी सीता खडी हैं, जो मन से उदास है ॥१॥

वन से तपस्विनी नारियाँ निकली, उन्होने उनसे दु ख-सुख पूछा—''हे रानी ! तुम्हे कौन-सा क्लेश है जो मन मे उदास हो ॥२॥

सीता उत्तर देती है—"हे माई ! यहाँ कौन मेरे लिये अग्नि तथा वेल के काष्ठ लायेंगे एवं कौन रात्रि मे जागेंगे, जिससे शर्वरी सुखद व्यतीत होगी ॥३॥

तपस्विनियाँ सान्त्वना देती है—"हम तुम्हारे यहाँ अग्नि तथा वेल के काष्ठ लायेंगी और रात्रि में जागेंगी, जिससे रात्रि सुफल होगी ॥४॥

भोर होते ही पौ फटने पर पुत्र ने जन्म लिया, आनन्द बधाई बजने लगी और सोहर गाये जाने लगे ॥५॥

सीता ने कहा—"वन के नाई को हाँक दो और शीघ्र आओ।' नापित के आ जाने पर सीता ने उससे कहा—'हे नापित ! खूब महीन हल्दी पीसो और रोचना दे आओ ॥६॥

पहला रोचना कौशल्या देवी, दूसरा सुमित्रा देवी, तीसरा कैकेयी और चौथा देवर लक्ष्मण के लिए है ॥७॥

नापित रोचना लेकर अयोध्या गया और वहाँ उसके सन्देश सहित सम्बन्धित व्यक्तियो को रोचना दिया, जिससे प्रसन्न होकर कौशल्या ने पाँचों वस्त्र (धोती, कुर्ता, बनियाइन, अँगौछा तथा टोपी), रानी सुमित्रा ने आभरण (गहने), कैकेयी ने रत्न-पदार्थ और लक्ष्मण ने घोडा दिया ॥८॥

एक छोटा-सा सघन पलाश वृक्ष था, जिसके नीचे खडे हुए राजा रामचन्द्र दातून कर रहे थे ॥९॥

उसी समय उनके पीछे अन्यमनस्क से लक्ष्मण आते है। राम उनसे पूछते है—"हे भाई ! तुम्हारा मस्तक महर-महर हो रहा है (खूब महक रहा है), तुमने रोचना कहाँ पाया ?" ॥१०॥

लक्ष्मण ने उत्तर दिया—"मेरी भाभी सीता देवी घने वन में बस रही है। भैया ! उन्ही के आनन्द प्रदान करने वाले पुत्र हुए है, फलस्वरूप हमने रोचना पाया है ॥११॥

इतना सुनते ही राजा राम के हाथ से दातुन भूमि पर गिर पडी और उनके मोती-से आँसू ढरकने लगे- जिन्हे वे पटुके से पोछते है ॥१२॥

रामचन्द्रजी भावुक होकर कहने लगे—"हे पुत्रो ! जन्म भी लिया तो सघन वन में और विपत्ति में । जहाँ कुश-पत्र ओढ़ना-बिछौना और वन-फल ही भोजन है ॥१३॥

हे पुत्रो ! यदि तुम अयोध्या में माता कौशल्या के महल में जन्म लेते तो आनन्द बधावा बजता और सर्वत्र सुख उत्पन्न हो जाता ॥१४॥

४६. सीता का पृथ्वी-प्रवेश

सीता-परित्याग के बाद राम से सीता दूर होते हुए भी उनके हृदय-देश में विराजती थी । यज्ञ के अवसर पर सीता की अनुपस्थिति से राम को हार्दिक क्लेश हुआ था । उन्होंने उन्हें लाने का प्रयास भी किया था, किन्तु स्वाभिमानिनी सीता ने अयोध्या जाने से साफ इन्कार कर दिया था । तत्पश्चात् लवकुश-जन्म के उपलक्ष में जब सीता देवी ने अयोध्या को रोचना भेजवाया तो राम को हार्दिक प्रसन्नता हुई, किन्तु सीता के अयोध्या में न होने से उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ । इसीलिए उन्होंने सीता को वन से लाने का पुनः प्रयास किया, किन्तु मनस्विनी सीता देवी नहीं ही लौटीं एवं धरित्री की गोद में समा गयीं । लोक-साहित्य में इसका मर्मस्पर्शी वर्णन इस प्रकार है—

(१०७) विवाह गीत

राम के हाथे सुवरन कै छड़िया,
लछिमन लिहिन उठाय ।
चलहु न भइया वहि बनंबसवा,
जहँ बसइँ भउजी हमारि ॥१॥
एक बन गए दुसरे बन गाये,
तिसरे माँ होइगे ठाढ़ि ।
लव-कुस दुनौ भइया खेलइँ अहेरवा,
लेइँ दुहइया सिरी राम ॥२॥
केहिके तुम दुनौ नतिया औ पोतवा,
केहि केरे अहिउ भतीज ।
केहिके अहिउ तुम दुइनौ बलकवा,
लेउ दुहइया सिरी राम ॥३॥

राजा दसरथ के नतिया औ पोतवा,
लछिमन केरे भतीज।
सीता मइया के हम रे बलकवा,
बाप कै जानउँ न नाउँ ॥४॥
नहाइ खोरि सीता ठाढि भई.
झुके है लाँबे केस।
पाछे उलटि जौ देखै सितल देई
राम बगल माँ ठाढि ॥५॥
फटतइ धरती बेंवर होइ जाथइ,
ठाढेन सीता समायँ।
दउरि कै राम धरइँ केमरिया,
केसर कुस होइ जायँ ॥६॥

– भादर (मुल्तानपुर)

राम के हाथ मे स्वर्णदण्ड रहता है, जिसे लक्ष्मण ने उठा लिया। फिर उन्होंने राम से निवेदन किया—"हे भैया! उस वन मे चलिए, जहाँ हमारी भाभी जी निवास करती है ॥१॥

राम तैयार हो गये और फिर दोनो भाई एक वन से दूसरे वन होते हुए तीसरे वन पहुँचे और वहाँ जाकर खडे हो गये। जहाँ लव तथा कुश दोनो भाई आखेट खेल रहे थे एवं श्रीराम की दुहाई ले रहे थे ॥२॥

रामचन्द्र ने लवकुश से पूछा—"तुम दोनो किसके पौत्र और किसके पुत्र हो, किसके भतीजे हो। तुम दोनो किसके बालक हो, श्रीराम की दुहाई ले रहे हो ॥३॥

लवकुश उनसे बताते हैं—"हम राजा दशरथ जी के नाती और पौत्र है, श्री लक्ष्मण जी के भतीजे है। हम सीता माता के बालक है, किन्तु पिता का नाम नहीं जानते है" ॥४॥

सीता नहा-धोकर खड़ी हुईं, जिनके लम्बे बाल नीचे की ओर लटके हुए थे। उन्होने पीछे उलट कर जब देखा तो देखा कि कि राम बगल मे खडे हुए है ॥५॥

सती साध्वी सीता देवी ने सोचा—धरती फट जाती और उसमे बेंवर (वल्मीक जैसा कुछ स्थान) हो जाता, (सीता के ऐसे सोचते ही ऐसा ही हो जाता है) और सीता खडे-खडे ही उसमे समा जाती हैं। राम दौडलर उनके केश पकड़ लेते है। वे केश कुश के रूप मे परिणत हो जाते है ॥६॥

(१०८) भजन

रामनाम मुख बोल रे भाई, छोड़ चतुराई ।।टेक।।
जग चतुराई बहुत दुख पइहौ, बार-बार पछिताई । छोड़०
रामनाम बहुतै सुख पइहौ, जिउ कै जरनि नसाई । छोड़०
अन्त समउ तुम्हरी बनि जइहै, सुख ते नयन मुँदि जाई । छोड़०
—सोहिलामऊ (हर

हे भाई ! मुख से रामनाम बोल और चतुराई छोड़ दे। सांसारिक (छल-कपट) से बारम्बार पछता कर बहुत दु:ख पाओगे। रामनाम के प्र बहुत सुख पाओगे और जी की जलन नष्ट होगी। अन्त समय मे तुम्हारी बन ज और सुखपूर्वक नेत्र बन्द हो जाएँगे। इसीलिए बारम्बार कहता हूँ कि व्यर्थ की राई छोड़ दो।